मूल्य : बारह रुपये

प्रकाशक : इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन
दिल्ली-५१

वितरक : विद्यार्थी प्रकाशन,
दिल्ली-५१

आवरण : ज्योतिप दत्त गुप्ता

मुद्रक : डी० एम० प्रेस, गांधीनगर, दिल्ली-३१

DEVYANI KA KAHNA HAI (Social Play) Rs-12.CC
by Ramesh Bakshi

एम. के. रैना, वन्सी कौल
श्रौर राजेन्द्र गुप्ता के लिए

'रमेश बक्षी' जन्म 15 अगस्त 1936, एम ए.।

नौकरियाँ . कई अखबार, आल इंडिया रेडियो, शिक्षा विभाग, ज्ञानोदय, आवेश, हिन्दी शंकर्स वीकली, नेशनल बुक ट्रस्ट। इन्दौर, भोपाल, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली।

उपन्यास : हम तिनके, किस्से ऊपर किस्सा, अठारह सूरज के पौधे, बैसाखियों वाली इमारत, चलता हुआ लावा।

कहानी-संग्रह . मेज पर टिकी हुई कुहनियाँ, कटती हुई जमीन, पिता-दर-पिता, एक अमूर्त तकलीफ।

पहला नाटक : देवयानी का कहना है। दूसरा नाटक : तीसरा हाथी।

फिलहाल पता यू-11, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16

आल इंडिया फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स सोसाइटी नई दिल्ली द्वारा पहली बार
१८ अगस्त १९७२ को आइफेक्स थियेटर में प्रस्तुत—

पात्र :

देवयानी गुप्त	सुरेखा सीकरी
साधन बैनर्जी	· विजय कपूर
डैंडी	महेश
तिवारिनजी	कमलेश गिल
पटेडिया	शकर तायल
शकुंतला	मुक्ति
रेखा स्वामिनाथन	. मीना वालावलकर
सुरेश कपूर	· धर्मेन्द्र तिवारी
इरा	. शशि
राजाराम	देवेन्द्र राज

मंच-सज्जा . पी. के. मोहंती, राजेन्द्र गुप्ता
वस्त्र-विधान : सुरेश सीकरी
सगीत : अमित दासगुप्त, सुरेश चौधरी
प्रकाश · पी. के. मोहंती
निर्देशन : राजेन्द्र गुप्ता

पात्र

देवयानी गुप्त चिंतन दोटूक। भाषा अनावृत। आधुनिकता और विद्रोह नस-नस मे। उम्र २२ वर्ष।

साधन बैनर्जी विचार ऐसे जैसे ज़माना देख चुके हैं। हर बात मे सतुलन और समझ। एडवेंचर लेकिन समाज-सापेक्ष। उम्र ३० वर्ष।

डैडी : श्री नरोत्तम दास गुप्त। उम्र ५० के लगभग। साधु और सज्जन पुरुष। देवयानी के पिता।

इरा : (पहले दास थी) श्रीमती सुरेश कपूर। अधेड़ पत्नीत्व की छाप। उम्र ३० के लगभग।

सुरेश कपूर : साधन का हमउम्र। आलूगोभीनुमा कैरेक्टर।

रेखा स्वामिनाथन : उम्र २५ वर्ष। स्वप्निल व्यक्तित्व।

तिवारिनजी : श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी तिवारी। उम्र ४५, घर मालिकिन।

पटेड़िया : साधन का लखपति मित्र। घोचू व्यक्तित्व ४० पार।

शकुंतला : दिखने में सुदर। भारी कपडे। वय:संधि की स्थिति। पटेड़िया की साथिन।

राजाराम : नौकर।

तीन दिन : तीन खंड

· एक

दल्ली के जून महीने की कोई सी भी एक तारीख, मान लीजिये २० जन ! दिन है बृहस्पतिवार।

शाम सूरज डूबने के बाद। गुज़रती शाम। रात, देर रात। २१ जून की सुबह।

खड : दो

शाम, सूरज डूब चुका है। शाम गुजर रही है। रात, बहुत देर रात। सुबह, २२ जून, शनिवार।

खड . तीन

शाम, रोज जैसी, इस बार लबी, मनहूस और उबाऊ। रात और देर रात।

स्थान :

दिल्ली की किसी कॉलोनी मे साधन बैनर्जी का बरसाती सेट कमरा। तर्ज ड्राइंग-डाइनिंग। सामने गैलरी है—सकरी, कमरे के साथ, जहाँ अन्दर की ऊब से घुटकर बाहर झाकने के लिए या सडक पर आँखें सेकने के लिए या अपने आपसे बातचीत करने के लिए या सामने वालो से सवाल-जवाब करने के लिए आया जा सकता है। इन गैलरी मे दो-चार रूखे-सूखे गमले पडे है। यह गैलरी कमरे से एक फुट नीची है। कमरा नया लिया गया है और जरूरत के अनुसार सजा लिया गया है। बायें कोने मे दीवार है या यह कोना बेडरूम है। उसके पास है श्रृंगार-मेज़ और स्टूल। बीच मे एक छोटा टेबल पडा है जो डाइनिंग टेबिल का काम देता है। दाई तरफ को सजावट है सिटिंग रूम की—सोफा सामने, दाये कोच, बीच मे गोल मेज। उस पर अच्छा-सा पोश। किनारे पर कानिस है, कानिस पर ग्लास जार और उसमे तैरती मछली। कमरा दो भागो मे ऐसी तरकीब से बटा है कि बीच मे पार्टीशन लगाया जा सके, जैसे यह कमरा दो हिस्से मे बटने के लिए ही बना है। दोनो हिस्सो से अदर जाने के रास्ते है—किचन और बाथरूम के लिए। एक दरवाजा खुली छत पर जाने के लिए है :



परदा उठने पर दिखाई देता है कि साधन एक कील ठोककर कैलेंडर टांग रहा है। सीटी बजाते हुए वह ग्लासजार मे तैरती मछली के लिए पैकेट मे से खाना डालता है। पास रखे लैंप-शेड को जलाकर देखता है कमरे में टहलता है। फिर सिगरेट जलाता है और सोफे पर जा बैठता है। शृंगार मेज के सामने जाकर बाल ठीक करता है तथा दीवान पर लेट-कर देखता है। सहसा उठता है और मेज़ पर पडी डायरी में कुछ चैक करता है। पास से उठाकर कुछ लिफाफे गिनता है।

साधन . (सिर पर जोर डालकर याद करता है) और क्या रह गया है ? शायद सभी काम पूरे हो गये। अब केवल उनका आना ही बाकी रह गया है।

शीशे के सामने जाता है और सवाल-जवाब करता है।

—अखबार के लिए बोल दिया ?

—बोल दिया।

—दूध का इन्तज़ाम हो गया ?

—हो गया।

—नमक-तेल, चाय-चीनी, अंडा-आटा, घी-गैस, दाल-चावल ?

—वगैरह-वगैरह सब लाकर रख दिये हैं।

—दीवान पर नई चादर बिछा दी ?

—बिछा दी।

—सुराही मे पानी भर दिया ?

—भर दिया।

—शनिवार की पार्टी के बारे मे सोच लिया ?

—सोच लिया।

—निमन्त्रण भेजने के लिए लिफाफे निकाल लिये ?

—निकाल लिये।

—गैलरी मे जो गमले रखे है, उनमे पानी डाल दिया ?

—डाल दिया। सब ओ० के० है और अब सवाल मत करना...

साधन शीशे मे दिखते साधन को टाटा करता है और गैलरी मे आ जाता है। झुककर बाहर देखता है। एक बार घड़ी मे समय देखता है और दर्शकों की तरफ देखकर मुस्कराता है, जैसे उनसे बात कर रहा हो।

आपने गलत समझा कपूर साहब, मेरा नाम राधश्याम भार्गव नही है, साधन वैनर्जी है। जी, साधन वैनर्जी फ्राम वाराणसी।...केवल वरसाती सेट है। यह जो देख रहे हैं यही वडा कमरा। ड्राइग-डाइनिंग कम्वाइड सेट (हसकर) मैं इसको जीना-मरना कम्वाइड सेट कहता हू। (घडी देखकर) लेकिन उसे अव तक आ जाना चाहिए था। शाम जैसी शाम हो गई और...

गैलरी का एक राउंड काटकर, सहसा

: शायद आप मुझे वतला सकें। इसका जवाव मैं उसके आने से पहले चाहता हू। वैसे सारी जिन्दगी जवाव है और मुझे आपके सामने ही रहना है लेकिन मुझ जैसे आदमी की कोशिश यह है कि...नही जानता क्या कोशिश है। वैसे सामने जो मल्होत्रा साहव और नारायण साहव और माथुर साहव और भल्ला साहव और उपाध्याय जी और मिस्टर जॉन...यानी जो सव लोग रहते हैं वे सव ही मेरी मदद कर सकेंगे कि भई हमारे ये अनुभव हैं और हमने ये-ये पापड वेले हैं। अव तुम जो करने जा रहे हो वह सही है या गलत, तुम्हारे नसीव का। वैसे जवाव जानने के लिए किसी जिन्दगी के दो-चार दिन भी काफी होते है। या शायद पूरी जिन्दगी जीकर देखनी पडे। कौन जाने !

टहलता है और फिर घड़ी देखकर बाहर झांकता है...सहसा घंटी वजती है। वह लपककर दरवाजा खोलता है...

तिवारिनजी : **(आफ साउंड आवाज दरवाजे के बाहर से सुनाई देती है)** कोई तकलीफ मत उठाना वेटे, ठडा पानी चाहिए तो नीचे से ले लेना और गृहस्थी की किसी चीज की जरूरत हो तो वह भी ले लेना। मन नहीं माना तो सोचा कि घंटी वजाकर देख ही लू।

साधन : अरे तिवारिनजी, आपने क्यो तकलीफ की और आपके घर में रहने आये हैं तो आपकी ही मदद तो लेगे। हा याद आया, परसो शनिवार को हम अपने दोस्तों को पार्टी दे रहे हैं। और आपकी उस छत का हम उपयोग करना चाहेंगे।

तिवारिनजी : शौक से उसका उपयोग करो बेटे। (जरा सा अंदर झाक-कर लौटती है) सब ठीक हो जायेगा। पति पत्नी अगर दो पहियो की तरह रहे तो गाडी चलने ही लगती है।

साधन हसता है और दरवाजा बद करके फिर गैलरी मे आ जाता है...

साधन . पता नही लोग जिन्दगी को जिन्दगी नही गाटी क्यो समझते हैं और दूसरो की जिंदगी को ठीक करने का हर कोई ठेका क्यो लेने लगता है।

सहसा हाथ हिलाता है जैसे सामने से किसी ने देखा हो ..

आप मेरे सलाहकार हैं। जब भी कोई बात ऐसी होगी कि मैं उलझ जाऊगा तो आकर आपसे बात करूगा। यह गैलरी मेरी साक्षी है।...

घंटी बजती है। साधन मुस्कराता है और दरवाजे के पास जाकर खिडो आई मे से बाहर देखता है। बेहद खुश दरवाजा खोलता है। देवयानी एक अटैची लेकर अदर आती है। साधन उसे थाम लेता है।

देवयानी : पहले मुझे अदर तो आने दो।

साधन . प्लीज कम। देवयानी (उसके कधे से झूम जाता है और बच्चो की तरह उसे हाथो पर से चूमता है) कमरा ठीक लग रहा है ना?

देवयानी : वाह, बढिया है।

मुआयना करती है। देवयानी दीवान

के पास अपनी अटैची रखने के बाद दीवान के पास जाकर लेटने को होती है तो साधन उस पर झुक जाता है।

: अभी नही मेरे यार। बाहर के सारे दरवाजे खुले हैं।

साधन · आदत गई नही ना। कल तक तो कमरे मे आते ही जुट जाते थे कि दफ्तर से मारा हुआ सारा समय काम आ जाये।

देवयानी उठ खड़ी होती है।

देवयानी : समय और अपने दफ्तर से ज्यादा उस होटल वाले का डर था। वह आश्चर्य तो करता होगा साधन कि इन सिरफिरों को विस्तरबाजी के लिए दुपहर का समय ही मिलता है।

साधन : उसे था रुपयो से काम। वह हमसे पद्रह रुपये भी तो लेता था।

देवयानी : और वह भी एक घटे के। ही वाज टू मच देट डे, ही डाटो-फाइड अस। अगर उस दिन मैं उतनी असतुष्ट नही लौटती तो शायद यह दिन नही आता।

साधन · लेकिन मेरी देवयानी, अब यह तो बताओ कि करना क्या है। कोई झमेला हो गया तो कोई सगी-साथी भी नही है अपना।

देवयानी : (साधन की छाती पर हाथ मारती है) घोचू कही के। फक झमेला एंड फेस।

साधन : लेकिन मुझे बताओ तो सही। अब देखो मकान मालकिन तिवारिनजी आई थी···

देवयानी . हमने उस दिन मकान देखने आते समय कह तो दिया था कि हम पति-पत्नी हैं।

साधन . उस पर उन्हे शक नही है क्योकि मैंने शनिवार की पार्टी के लिए उनसे छत भी माग ली है।

देवयानी : सो तो ठीक है लेकिन पहले डैडी के···

साधन : लेकिन, कभी वे पुलिस मे रिपोर्ट कर दें... !

देवयानी सोफे पर जा बैठती है और साधन को मारने का इशारा करती है…

देवयानी . देखो साधन, औरत के साथ बिस्तरबाजी कर लेना ही वीरता नही है। वो तो कुत्ते-बिल्ली भी जमा लेते हैं। यू गुड बी बहादुर।

साधन : अपनी फिलासफी फिर झाडना। पहले यह बताओ कि… (रुककर) क्या सबको बोल दिया है ?

देवयानी . आफिस मे अनाउन्स कर दिया कि मैंने आज सवेरे शादी कर ली है।

साधन फिर ? तुम्हारे बॉस ने क्या कहा ?

देवयानी वह कौन होता है कुछ कहने वाला। मैं बालिग हू और मुझे अपनी इच्छा से किसी से भी शादी कर लेने का अधिकार है। राइटो ?

साधन राइट, लेकिन…

देवयानी . तुम बहुत ज्यादा लेकिन-फेकिन करते हो। इसी कारण पहली बार मुझे छूने मे भी तुमने दस दिन लगा दिये, गधे ·

साधन सहमकर चुप हो जाता है।

देवयानी अब ऑफिस वाले इस न्यूज को जनता मे प्रसारित कर देंगे। रहे मा-बाप, तो मैंने ऑफिस से चलते समय चार बजे बाप को तार कर दिया है। उसमे साफ-साफ लिख दिया है— हैप्पीली मैरिड विद साधन, प्लीज डू नाट बादर।

साधन यानी अब तक तार पहुच गया होगा।

देवयानी . बिलकुल पहुच गया होगा और मेरे बापजान सरला के घर पहुच गये होंगे कि मेरी बिटिया वहा गई। मैंने सरला को अपने इस घर का पता दे दिया है।

साधन लेकिन (एकदम घबरा जाता है) हमे तो कुछ दिन छिपकर रहना था। यह तुमने गलती की है देवयानी।

देवयानी गुस्से से उठ खड़ी होती है।

देवयानी : साधन, अपनी इच्छा के अनुसार अपनी बीवी को पैर की जूती वगैरह समझना था तो गोंडा या गया से कोई लड़की ले आते। मैंने जो भी किया ठीक किया है, कोई भी गलती नही की है।

साधन : तुम्हारा पारा एकदम आसमान पर चढ जाता है। आखिर गलती इन्सान से होती है और हम···

देवयानी : अब बोलो—'भारत कृषि प्रधान देश है।' (पॉज) तुम्हारे साथ मे आने की मेरी पहली शर्त यह थी कि तुम कोई भी आर्ष-वाक्य नही बोलोगे। और दूसरो को कोट कर-करके मुझे जीने की दिशा नही बतलाओगे। इतने पर भी अगर तुम अपने आपको ही तीसमारखा समझते हो तो (जाकर अटैची उठा लेती है।) आई वुड प्रस्थान।

साधन : आयम सॉरी··। तुमने जो किया ठीक किया।

देवयानी अटैची वहीं रख देती है और दोनों इतमीनान से बैठ जाते हैं।

देवयानी : (साधन के गाल थपथपा देती है) यानी हम लोग मेरे डैडी को फेस करने की गरज से तैयार बैठे है।

साधन : लेकिन फेस कैसे करेंगे, अगर वे आते ही···

देवयानी : नम्बर वन—मेरा बाप अव्वल दरजे का कायर आदमी है। नम्बर दो—मेरी मा मेरे भागने से परम प्रसन्न होगी। उन्हे लगेगा दहेज बचा। नम्बर तीन—बाप की रेपूटेशन बडी है तो पुलिसबाजी वह करेगा नही। पहले भागदौड़ करेगा, फिर सिर पीटेगा, घबराकर दो पटियाला पैग पीयेगा और फिर यहा आयेगा।

साधन : अगर वे शादी का प्रुफ चाहेगे तो ?

देवयानी : पहले तो डैडी प्रुफ-प्रुफ मागने की हिम्मत ही नही कर पायेंगे। लेकिन ऐसा करेंगे तो मैं उन्हे जवाब दे सकूगी। विलिव देवयानी।

साधन : यानी हमे अब केवल इन्तजार करना है।

देवयानी . इन्तजार केवल इस बात का कि उनसे निबट ले तो परेशानी दूर हो। जब घंटी बजे तो दरवाजा तुम खोलना ··

साधन लेकिन मैं ·

देवयानी (उठ खडी होती है) सुनो साधन, हमारी पहचान मुश्किल से एक महीने पहले हुई है। सच यह है कि मैं किसी की तलाश मे थी। मेरे चेहरे पर ढेरो मुहासे हो गये थे। मैं रात को करवटें बदलती रहती थी। और तुम मुझे अच्छे लगे।·· यह मैं हूँ जिसने पहल की है। और तुममे यह हिम्मत नही कि दरवाजा खोल सको। तुमने तो अच्छे थे वे जो···

साधन : लेकिन तुम मुझे बतला चुकी हो इससे पहले उनके बारे मे। और··

देवयानी . इसमे शरमाने की क्या बात है। पहले सुधीर मित्रा था। वह मेरे बाप के दफ्तर मे काम करता था। उसकी लम्बाई मुझे पसन्द थी। लेकिन पता है, पहचान कितने समय चली ?

साधन प्रश्नवाचक हो जाता है।

· दो महीने। और तुम हो कि पहचान के बीसवें दिन मे, मैं सब कुछ छोडकर तुम्हारे पास रहने के लिए आ गई हू।

साधन : लेकिन इसके मूल मे ··

देवयानी मूल मे क्या है, यह मुझे नही मालूम। केवल यह मालूम है कि सुधीर को मेरे बालो मे उगली फसाकर बैठे रहने मे, और अधिक हुआ तो यहा (उरोजों की ओर इशारा करती है) सिर रखकर लेटे रहने मे ही सारा सुख मिल जाता था। वह दो महीने मे एक दिन को पद्रह मिनट के लिए ऐसी जगह नही ढूढ पाया कि हम एक दूसरे को ठीक मे देख तो सकते। और किस्सा खत्म कि एक सुबह मैंने उसे रिजेक्ट कर दिया।

सहसा साधन चौंककर दरवाजे की तरफ देखता है।

साधन : शायद कोई आ रहा है?

देवयानी . तो पहले से परेशान होने की क्या जरूरत है? मेरा बाप है घबराता हुआ तो वह दरवाजा खासे जोर से ही बजायेगा चोरो की तरह नही आयेगा।···

साधन ठीक है लेकिन एक बात पूछने को मन है कि आखिर वह कौन-सी बात थी कि तुमने मेरे साथ रहने का फैसला कर लिया?

देवयानी . पहले तुम इसी सवाल का अपनी ओर से जवाब दो।

साधन . जानती हो तुम देवयानी कि मेरी जिन्दगी मे खासी ट्रेजेडी होती रही है।

देवयानी : उसे ट्रेजेडी क्यो कहते हो। वह तो मजा था साधन।

साधन . जीना हराम हो जाये, उसे मजा कहोगी?

देवयानी : जरा तटस्थ होकर देखो मेरी जान। तुम जो मुझे सुना चुके हो वह बगैर नमक-मिर्च के यह है कि श्रीयुत साधन बैनर्जी जब जवानी को प्राप्त हुए तो कुमारी इरा दास से उनकी पहचान हुई, निकटता आई और इरा दास ने जब देखा कि साधन के पास न नौकरी है, न जमा-पूजी तो सफाई से कन्नी काटकर दूसरे से, क्या नाम है उसका?

साधन सुरेश कपूर।

देवयानी : सुरेश कपूर से शादी कर ली। चेप्टर एक समाप्त। अब साधन होशियार हो गये और जब नौकरी करने लगे तो कुमारी रेखा स्वामिनाथन् से उनका प्यार हो गया। प्यार आगे बढा। लेकिन ऐन मौके पर रेखा के पापा साहब बीच मे आ गये कि हे रेखा, कहा भटक रही है। रेखा फंस गई थी लेकिन डेश-डेश बच गई। (साधन के कान मे) जो भी हो गर्भपात वगैरह यहा जोड लेना।

साधन उठकर टहलने लगता है।

दूसरा चेप्टर खत्म हुआ।

साधन · देवयानी (घबराकर) जरा सीरियसली सोचो। अगर कोई तुम्हे जबरन मुझसे छीनकर ले जायेगा तो मैं बचाव के लिए क्या करूंगा ?

देवयानी : (साधन के सिर पर हाथ रखती है) शांत हो जाओ साधन, मैं अब समझी कि तुम किस बात से डर रहे हो। याद आया, जब तुम तीसरा निशाना मार रहे थे, यानी निशि नायर को जब तुम भगा लाये थे तो पांच पहलवानो ने पकड़कर तुम्हे चारपाई पर बांध दिया था और निशि को वे लोग वापिस ले गये थे। उन्होने शायद उस पर गंगाजल छिड़ककर उसे पवित्र कर लिया होगा या उसे वापिस कौमार्य दिला दिया होगा···

साधन और जानती हो। बोल्डनेस मे, जमाने से लड़ पड़ने मे वह तुमसे दो कदम आगे थी लेकिन उसे आत्महत्या कर लेनी पड़ी। सोचो देवयानी···

देवयानी : मिस्टर साधन बैनर्जी, जो आत्महत्या कर ले वह मुझसे दो कदम आगे नही हो सकती और·

साधन : मैं केवल मिसाल दे रहा था देवयानी, मेरा यह मतलब नही था कि वैसा ही अब हो जायेगा। लेकिन हमे सावधान तो रहना ही चाहिए।

देवयानी . सावधान है तो। केवल सावधानी के लिए ही तो यह हमने अनाउन्स किया है कि हमने शादी कर ली है, नहीं तो सच, मानो, उस दिन तुम्हारे उस होटल वाले ने मूड ऑफ नही किया होता तो सब कुछ ठीक से चल ही रहा था। मैं अपनी पे मे से होटल के कमरे के लिए रुपये अलग रखना शुरू कर देने की सोच रही थी। इन दिनो, मुझे तुम चाहिए थे और तुम मुझे मिल रहे थे।

साधन : तो वह कौन-सी शर्त है कि हम दोनो ने साथ रहने का फैसला किया—होटल किराये से लेने की दिक्कत से

वचना ?

देवयानी : यही एक कारण नही है लेकिन यह भी एक कारण है और मेरे फैसले के मूल मे सबसे निकट का तात्कालिक कारण यही है।

साधन : तो फिर यह जिंदगी ?

देवयानी : कहना चाहते हो कि नही चलेगी ? उससे मुझे कोई फर्क नही पडता। जिस दिन नही चलेगी, उसी दिन उसे तोड दूगी।

देवयानी उठ कर बाथरूम का दरवाजा खोलकर देखती है। साधन उसके पास पहुंचता है। वह ढेर प्रसन्न दिखती है।

: साधन मुझे एक टब खरीद देना। मुझे सारे दिन टब मे ठडा पानी भरकर नगे बैठे रहना अच्छा लगता है।

साधन : और क्या अच्छा लगता है ?

देवयानी : एक टेलीफोन लगवा देना कि मैं अपने सारे दोस्तो से बात करती रह सकू।

साधन : और ?

देवयानी : मुझे एक आसमान ले दो, खूब नीला, साफ बहुत बड़ा। मैं दीन दुनिया से बेखबर उसमें उड़ना चाहती हू।

साधन : और ?

देवयानी : (साधन के गले से झूम जाती है) और·· और···

घंटी बजती है। दोनो सावधान हो जाते हैं। इशारे से, देवयानी साधन से कहती है कि दरवाजा खोले। साधन डरते हुए दरवाजा खोलता है।

साधन : अरे तुम ? तुम कब आये पटेडिया। कोई खबर नही दी और···।

पटेड़िया, जो देखने में शुद्ध व्यापारी

लगता है शकुन्तला को आगे करता है। आपसी अभिवादन के बाद दोनों सोफे पर बैठते हैं। देवयानी ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़ी बाल ठीक करने लगती है।

पटेडिया : बस यार बडी मुश्किल से आये है। तेरे पहले वाले घर गये थे। वो तो तू पोस्टमैन को पता दे आया था तो मालूम हो गया नही तो लौट ही जाते। अरे ये है सकुन्तला (फिजूल हसता है) कहने लगी की दिल्लो देखूगी तो साथ ले लिया उसी होटल मे ठहरा हू।

पटेड़िया देवयानी को तरफ देखता है।

पटेड़िया : (साधन की तरफ गौर से देखकर) इस बार ये है। बढ़िया है। जवाब नही साधन मोसाय आपका भी···

साधन . नही भाई (घबरा जाता है) हमने शादी कर ली है। अरे देवयानी।···(देवयानी नमस्कार करके बैठ जाती है।) ये मेरे दोस्त हैं पटेडिया, लखपति हैं, जयपुर मे लम्बा विजिनेस है।

देवयानी : जी हा, आपके वारे मे ये वतला चुके हैं कि पटेडिया मेरा वचपन का यार है। कह रहे थे आपने ही लेकर पौ··ी पटी हैं इन्होने। और यह भी कह रहे थे कि आप हर दा·· ए·· वुलवुल ले आते हैं।

साधन क्या वोल रही हो देवयानी। मैंने कभी तुमसे पटेडिया के वारे मे वात नही की···

देवयानी . वात नही की तो क्या हुआ। क्यो भाई साहब, बुरा तो नही लग रहा आपको ?

पटेडिया . नही नही जी वुरा लगने की क्या वात है। वात ये कि हम दोनो दिल वाले दोस्त हैं। वैनर्जी भोला आदमी है ना तो हर वार इसका कोई न कोई झमेला हो जाता है लेकिन

वैसे देखो तो

देवयानी : लेकिन इस बार कोई झमेला नही होगा। मैने इसकी नाक मे नकेल डाल दी है।

पटेड़िया जोर से हंस देता है और साधन भी हंसी में शामिल हो जाता है।

साधन : वात यह है पटेडिया कि हमने शादी कर ली है और अभी परेशानियो में फसे हुए हैं लेकिन शनिवार की शाम यही पार्टी है।

पटेड़िया : खुश रहो यार, परेशानियो की क्या कमी है। यहां तो हमारी सेठानी ने जीना हराम कर रखा है लेकिन जब से सकुन्तला मिली है। माफ कीजिये (देवयानी की तरफ देखकर) सकुन्तला को बोलना नही आता अभी बेहद सरमाती है···थोडे समय वाद वोलने लगेगी।

देवयानी : (व्यग से) वोलने की जरूरत भी क्या है। खासी खूबसूरत हैं शकुन्तला जी···और आपके साथ तो एक लडकी की थोड़े ही, शोभा की जरूरत है।

पटेड़िया : देखा, देखा, मैंने कहा था ना कि वहा जा कर मजा आ जायेगा। पहले कई वार मैं यही ठहरा करता था···

साधन : वात ये है पटेड़िया कि अभी देवयानी हमारे वातावरण के लिए नई हैं।

पटेड़िया : यार दो चार दिन का मामला हो तो तुम लोग जयपुर आ जाओ···

देवयानी : (हंसकर) इस वार जिंदगी भर का मामला है···

साधन : और हम सोचते हैं कि उसे एक कमरे मे रह कर ही काटें।

पटेडिया : काटो-काटो यार और खूब जमके काटो···लेकिन चाहो तो कल आगरा चलें, एक टैक्सी कर लेते हैं और ताज देखेंगे, सीराज़ मे स्कॉच पीएगे···और अभी मैं वड़ी जल्दी मे हू।

चलने को होते हैं। शकुन्तला भी

उसके पीछे हो लेती है।

देवयानी : कभी हम लोग खैरियत से रहे तो आपके होटल में फोन कर देंगे। नही तो अगली बार जब आयें, जरूर आइये।

पटेडिया : जरूर-जरूर। आप भी आइयेगा। और शनिवार तक अगर मैं नही गया तो पार्टी में भी आ धमकूगा।

वे जैसे ही बाहर जाते हैं साधन झट से दरवाजा बंद कर देता है और राहत की सास लेता है।

साधन : चोर कही के…।

देवयानी : चोर क्यो कह रहे हो उन्हे। मुझे तो पटेडिया बेहद पसद आया। कितना साफ आदमी है। (पॉज) किसी शकुन्तला को ले आये, प्यार जताया, वाजिब दाम दिया और वापिस छोड आये उसे।

साधन : लेकिन…वह हर बार लडकी बदल देता है।

देवयानी : मेरे लिए यह आदर्श जिन्दगी होती।

साधन : यानी तुम उस शकुन्तला की तरह…।

देवयानी अपमान नही करो साधन बाबू, मैं देवयानी हू। उसमे जो मुझे अच्छा लगा वह है बार्गेनिंग। न सरला का लेना न कमला को देना। अगर हम दोनो ही सम्पन्न होते तो…

साधन : तो क्या तुम शादी नही करती ?

देवयानी तो वह अब भी कहा की है ? लेकिन क्या तुम यह नही सोचते कि अविवाहित बिस्तरबाजी मे खर्च अधिक है, डर ज्यादा है। विवाह का सार्टिफिकेट मिल जाये तो नपे-तुले खर्च मे सुबह से रात तक के सब काम हो जाते हैं।…

साधन मुझे आश्चर्य है देवयानी कि तुम्हारे मन मे इस तरह की बातें है। शादी का मतलब प्रतिबद्धता है, एक दूसरे का साथ है, समझौता है, एड्जस्टमेंट और एक दूसरे को समझना…।

देवयानी : यह सब बकवास है। शादी केवल एक पास है जिसको हाथ

मे रखने से खुले आम घूमने, एक साथ बिस्तर मे सोने और दुर्घटना के समय सामाजिक विरोध न होने का सार्टिफिकेट मिल जाता है।

साधन : तो फिर हमारे कल और आज मे क्या अतर है ?

देवयानी : आज खतरा नही है, जो कल था।

साधन : और तुम्हारे डैडी क्या हैं ?

देवयानी : वे केवल इस्पेक्टर हैं, पास देखेंगे और चले जायेंगे—

देवयानी हंसती है। बाथ रूम की तरफ मुड़ती है।

: मैं जरा फ्रेश होकर आती हू। तब तक अगर डैडी आ जायें तो कहना आ रही है…

अंदर चली जाती है। साधन कुछ सोचता है फिर सिगरेट जलाकर गैलरी मे आ जाता है।

साधन . अच्छा माथुर साहब !

गैलरी में फिजूल टहलता है और फिर आहिस्ते-आहिस्ते बोलता है।

अगर आपको बीवी के कधे पर हाथ रखते हुए यह अहसास हो कि ऐसा करने का अधिकार या देवयानी के शब्दो मे 'पास' आपको मिल गया है, इसलिए आप ऐसा कर रहे हैं…जाहिर है मैं जो कहना चाहता हू कि बीवी के साथ बिस्तर मे गरम होते हुए अगर यह खयाल आये तो कैसा लगेगा ?

देवयानी नाईटी पहने कमरे मे आती है और आईने मे देखकर मेकअप करती है।

. 'कैसा लगता है' इसको एक बार आप ताक में भी रख सकते हैं लेकिन मेरे पास पिछले अनुभव भी हैं और मैं सोचता हूँ कि अगर जीना है तो इस सबध को टेस्टट्यूब

मे रखकर हर तरह से परीक्षा कर लेने मे हर्ज ही क्या है।···

देवयानी साधन को पुकारती है। साधन घूमकर गैलरी का चक्कर लगाता है।

साधन · (चौंककर देखता है।) देवयानी ··!

देवयानी आगे-आगे चलती है। साधन उसे पीछे से घेर लेता है। देवयानी अपना शरीर ढीला छोड़ती हुई, दीवान पर हल्के से लेट जाती है। ··

देवयानी : लगता है अब तुम्हे कोई जल्दी नहीं

साधन देवयानी पर झुक जाता है।

साधन . जल्दी इसलिए नही कि अभी डैडी का इन्तजार है कि वे आयेंगे और पूछेंगे कि शादी का प्रूफ बताओ ·

देवयानी तो प्रूफ तैयार है (हाथ फैलाकर उसे अपने से कस लेती है) साधन, गरमी बहुत है। तुम अपना शर्ट उतार दो···
(देवयानी बैठकर साधन के शर्ट की बटनें खोलती है)

साधन रुको भी। डैडी को आ लेने दो पहले ··

देवयानी (खीझकर) नहीं, अभी, इसी वक्त···

वह साधन का शर्ट खींचती है और साधन शर्ट उतार देता है।

साधन (वह देवयानी के सामने खडा है।) बात यह है देवयानी कि मैं कुछ सोच रहा था···

देवयानी : मुझे मालूम है कि तुम क्या सोच रहे थे।

साधन . क्या सोच रहा था ?

देवयानी यही कि मैं चौथी लडकी हूं।

साधन यह तुम्हे कैसे मालूम हुआ ?

देवयानी यह तो हर पुरुष के चेहरे पर लिखा होता है कि वह अपनी

वीरता अब तक कितनी लड़कियो के सामने जाहिर कर चुका है। तुमने जिस अभ्यस्त तरीके से शर्ट उतारा उससे साफ जाहिर है कि तुम्हारे मन मे क्या चल रहा था। इंरा, रेखा और निशि के नाम मुझे मालूम हैं·· तुम सोच रहे हो कि अब फसी है देवयानी।

साधन : लेकिन मेरे मन मे यह बात है और मैं इस समय यह सोच रहा हू इसका तुम्हे अहसास कैसे हुआ?

देवयानी : इस दीवान पर पैर फैलाते समय मेरे मन मे भी यह बात आई थी कि तुम कौन-से नम्बर पर हो···

साधन : (चौंककर) क्या? तुम यह सब सोच रही हो (देवयानी के ऊपर झुकता है) तो बतलाओ मैं कौन-से नम्बर पर हूं···?

देवयानी : मुझे नम्बर याद नही। (उठ खड़ी होती है) तुम्हे नबर याद रखने मे शायद कोई ज्ञान प्राप्त होता है लेकिन मुझे यह सब याद रखते लगता है कि वक्त जाया हो रहा है···

साधन : मुझे नही मालूम था कि तुम इतनी आगे हो?···

देवयानी : क्या कहा!

साधन झटके से उठ खड़ा होता है।

साधन यानी मैं तुम्हारी एक जरूरत हू।

देवयानी : ठीक उसी टर्म्स मे जिस टर्म मे मैं तुम्हारी जरूरत हू। साधन, यह सब परस्पर है।

साधन : क्या सब परस्पर है? तुम्हारे मुह से यह सुनकर ऐसा लगता है, जैसे मैं किसी दूकानदार को पचास पैसे देकर एक अडा खरीद रहा हू।

देवयानी : और प्यार करते समय यानी बिस्तर पर कैसा लगता है? और···

साधन : तुम सारे सवाल पहले पूछ लो।

देवयानी : और मैं जब चाय बनाकर लाती हू तब? मैं जब बढ़िया-

सा जवाब देती हूं तब ? मैं जब भयकर गरम होकर तुम्हें चूम लेती हू तब ? मैं जब तुम्हारे बुशर्ट मे बटन लगाती हू तब ?

साधन : (यह समझकर कि देवयानी भड़क उठी है, ठंडे शब्दो मे उसे सहलाकर कहता है।) भडको नही, मुझे लगता है कि जिन्दगी को ठीक से परख लेना चाहिए। मेरे लिए वह अगर जीने के काबिल है तो मैं देवयानी का गुलाम होकर भी रह सकता हू।

देवयानी : छि, (साधन का हाथ झटक देती है) पता है तुम्हारे ये फ्लैटरीवाले वाक्य सुनकर कैसा लगता है ?

साधन : (साधन थपकर पूछता है) कैसा लगता है ?

देवयानी : जैसे बनारस मे दशाश्वमेध घाट पर कोई गलित अग कोढी बैठा हो और शरीर के सडे हुए हिस्से दिखा-दिखाकर भीख माग रहा हो।

साधन : (जोर से) देवयानी ! तुम बोलती हो तो बोले चले जाती हो। कभी ऊच-नीच का खयाल रहता है, या उस अर्थ का खयाल रहता है जिसे सामनेवाला ग्रहण कर सकता है और जिससे वह चोट खा सकता है !

देवयानी : जो चोट खा जाये वह चूतिया आदमी है।

साधन : देवयानी ! चुप करो।

देवयानी : वैसे साधन, मेरे बोलने से चोट तुम्हे नही लगी है, चोट उस आदमी को लगी है जो औरत की एक लिजलिजी मूर्ति अपने अदर स्थापित किये हुए है।

साधन : जब तुम मुझे जानती हो देवयानी कि मैं ऐसा हू तो फिर तुमने मुझे चुना ही क्यो ?

देवयानी : इसलिए कि पहले के सब पुरुष ही नही थे। तुम कम से कम पुरुष तो हो, तुम्हारे पास कधे है, रीढ की हड्डी है, सा[illegible]-वाला दिमाग है, थामने वाले हाथ है और तुम तीन-तीन धक्के खा चुके हो। (हस देती है) साधन आई [illegible] यू !

क्योंकि तुम अनुभवी हो।

साधन : (भावुक होकर) देवू !

देवयानी . (साधन की छाती पर सिर रख देती है) और पास आओ साधन…और पास आओ…

बाहर का प्रकाश धीमा होता है और अंदर के बल्व जल उठते हैं। शाम गुज़र चुकने का अहसास पैदा होता है। सहसा कालबेल बजती है और दरवाजा भी पीटा जाता है।

साधन : (घबराकर) डैडी आये हैं शायद।

देवयानी · (इत्मीनान से दीवान पर लेटती है) शायद नही, वही आये है (दरवाजा बजता जाता है) अच्छे समय आये…

साधन अपना शर्ट ढूंढता है

साधन . मेरा शर्ट कहां है ? उफ ! मैंने कहा रख दिया।

देवयानी : ऐसे ही जाकर दरवाजा खोलो साधन !

साधन : शर्ट पहले दो देवयानी, पता नही और कौन हो उनके साथ…

देवयानी : वे अकेले ही होगे और तुम्हे इसी तरह जाकर दरवाजा खोलना है। उन्हें शॉक दो साधन !

साधन परेशानहाल दरवाजा खोलता है। डैडी एकदम अदर घुसते हैं।

साधन : नमस्कार डैडी।

डैडी : कहा है देवयानी, और हिम्मत कैसे हुई साधन तुम्हारी ? तुम शरीफ बनकर मेरे घर आते रहे, मुझे नही पता था कि तुम्हारे मन मे चोर है…मुझे अगर पता चल गया होता तो यह कभी नही होने देता।

साधन : आप बैठिये तो। हमने कोई चोरी तो नही की है।

डैडी माथे से पसीना पोछते हैं।

: हमने शादी की है और हम ईमानदारी के साथ रहना चाहते हैं।

डैडी : किसी के घर मे डाका डालने को ईमानदारी कहते हो, क्या कहने शराफत के और कहा है देवयानी ? पहले उसे मेरे सामने लाओ···

देवयानी दीवान पर उठती है।

देवयानी : मैं यहा हू डैडी।

डैडी उसकी तरफ देखते हैं और आखें बद कर लेते हैं। देवयानी वैसे ही उठकर धीरे-धीरे आगे बढ़ती है।

डैडी अपने आपको पता नही क्या समझती हो। और यह हालत तुम दोनो की। मैं सिर उठाकर किसी रास्ते से गुजर नही सकता अब। वहा हम परेशान है और यहा ऐश हो रही है। कहा है देवयानी ?

देवयानी . (अपने दीवान पर ही) मैं यहा हू डैडी।

डैडी (चौंककर) क्या!

देवयानी . (हस देती है हल्के से) बात यह है डैडी कि अगर कोई परेशान है तो साधन है या मैं हू। मा इसलिए परेशान नही है कि शी नेवर लव्ड मी। आप इसलिए परेशान नही है कि आपको इस दिन की कल्पना थी। मेरे चाल-चलन को देखकर आपने खुद एक दिन कहा था कि यह किसी के साथ भाग जायेगी।

डैडी · वह सब भूल जाओ बेटे। यह एक लवा साथ है।

देवयानी : जैसा आपका और मम्मी का है ? पच्चीस साल तो हो ही गये होंगे डैडी ?

डैडी . वह तो तुम्हें मालूम है ही। तुम तो हमारी सिल्वर जुबली मनाने वाली थी। देखो देवयानी, समझ से काम लो।

साधन अपना शर्ट खोल रहा है और

पहनने लगता है।

देवयानी · देखिये डैडी, आप मानें या न मानें, मैं साधन से शादी कर चुकी हू···

डैडी : तो प्रुफ बताओ। कहा है सर्टिफिकेट, कहा है फोटो?

देवयानी . (उठ खड़ी होती है) मैं यह नाइटी उतार देती हूं। दिखा दीजिये इसे लोगो को। शादी का इससे बडा कोई और प्रुफ अभी मेरे पास नही है।

डैडी . देवयानी, यह ही सब सुनने के लिए तुम्हे इतनी अच्छी शिक्षा दी थी मैंने। अपने परिवार के बारे मे तो सोचो। मेरे सपनो के बारे मे तो सोचो।

देवयानी : उस सबके लिए अब समय नही रहा डैडी।

डैडी . फिर भी बेटे, तुमने जो किया ठीक है लेकिन···

देवयानी : थैंक्यू डैडी। आप जा सकते हैं।

डैडी तुम कह रही हो यह· मुझे चले जाने के लिए कह रही हो?

देवयानी बहुत आदर सहित कह रही हू कि आप जा सकते हैं। आप थके हुए लग रहे हैं और घर मम्मी परेशान हो रही होगी।

डैडी जाने को होते हैं। बहुत भावुक होकर देवयानी की तरफ बढ़ते हैं। देवयानी उनसे लग जाती है।

डैडी (जाने लगते हैं) ठीक है, ऐसे ही सही·· हो सकता है तुम ही सही हो।

देवयानी : माफ करना डैडी, आपको और मम्मी को जैसा विवाहित जीवन जीते देखा उसे देखकर मैंने तय कर लिया था कि मैं सिल्वर जुबली विवाह नही करूंगी। आई नो हाऊ अनहेप्पी यू आर।

साधन · अब चुप भी रहो देवयानी। कभी हम फुरसत मे बैठकर बातें करेंगे, इधर से आइये। (जाते हुए) मैं सीढियो की लाइट जला देता हू। (दरवाजे पर) और डैडी शनिवार

की शाम पार्टी है आपको आना ही होगा।…

साधन डेडी को छोड़ने नीचे चला गया है। देवयानी कमरे का एक चक्कर लगाती है। सहसा अपनी अटैची खोलती है और एक-एक किताब निकालते हुए उनके नाम पढ़ती है…

देवयानी . करेक्ट प्रोसिजर फार अ वेडिंग सेरमनी, पैटर्न्स ऑव मैरिज, ब्राइड्स आर लाइक न्यू शूज, मैरिज एंड इट्स प्राब्लम्स, मैरिज एटिकेट, सेक्स एंड मैरिज, सेक्युअल बिहेवियर आफ अ मैरिड वोमन ··

साधन आता है और देवयानी पर झुककर किताबें देखता है।

साधन यानि तैयारियां इतनी हैं।

देवयानी अरे मैं मनुस्मृति और हिंदूमैरिज एक्ट लाना तो भूल ही आई…।

साधन · जो लाई हो उनमें क्या है ? (एक किताब उठाकर पढ़ता है) मैरिज इज ए रोमान्स इन हिज हीरो डाइज इन द फर्स्ट चेप्टर…

देवयानी (वह भी एक किताब खोल लेती है) व्हट इज बेस्ट फार अ वोमन टु मैरी अ मैन हू लव्ज हर देन अ मैन हू लव्ज ··

साधन लेकिन हम तो दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं इसलिए।

देवयानी इसीलिए फर्स्ट चेप्टर में तुम्हारी मृत्यु नहीं हुई ·।

साधन · यानी पहला अध्याय समाप्त हो गया।

देवयानी और तुम्हारा हीरो जीवित है। अब आगे पढ़ो।

साधन लव इज ए डान आफ मैरिज एंड मैरिज इज द सन सेट आफ लव…

देवयानी : यानी सूर्यास्त हो गया। (जम्हाई लेती है) और सूर्यास्त के बाद साधन, पत्नी को क्या करना होता है—खाना बनाके

[illegible]

वह या पति के पैर दवाये या···

साधन : (इत्मीनान से बैठकर) मैं खुद सोच रहा हू देवयानी कि मैं तुम्हे खाना वनाने या मेरे कपड़ो मे वटन टाकने के लिए नही लाया हूं···

देवयानी : (किताबें जमाती हैं) यानी ?

साधन : मैं सीरियसली सोच रहा हूं कि केवल विस्तर भी मेरा मकसद नही था। होता यह है कि आम लोग पत्नी को हर वात के लिए जिम्मेदार ठहराकर निश्चित हो जाते हैं। अव खाना और चाय होटल मे मिल सकती है। पैसा फेंको और जो चाहे ले लो···। इसके लिए पत्नी मस्ट नही होती

देवयानी वह दूसरे मामले मे भी तो है । सेक्स और आसानी से खरीदा जा सकता है।

साधन : तुम ठीक कह रही हो। अपने अकेलेपन के फ्रस्ट्रेशन मे दो तीन बार मैं पटेडिया के साथ गया हू। सौ रुपये मे सारी रात के लिए उसने लडकी एरेज कर ली थी···

देवयानी : यानी सेक्स वह वात नही है जिसके लिए पत्नी का होना जरूरी हो।

साधन चुप हो जाता है।

: फिर हम लोग साथ क्यो हैं ? मैं तुम्हारी वात को नोट कर रही हू सावन और इसीलिए पूछ रही हूकि···

साधन . शायद होता यह है कि पत्नी आश्रिता होती है···

देवयानी लेकिन मैं तो कमाती हू और महामहिम मार्क्स के अनुसार जहा आर्थिक आजादी है वहा तालमेल वैठ जाता है···

साधन : फिर हम लोगो का तालमेल क्यो नही वैठ रहा है ?

देवयानी : क्या तुम यह समझते हो कि तालमेल नही वैठ रहा है ?

साधन : हा मेरा मतलव है कि··· (उठकर टहलने लगता है) पहले तो एक सतीत्व नाम की चीज होती थी जिसके कारण किसी के भी साथ जीवन भर वधा रहना अर्थपूर्ण लगता था···

देवयानी · लोगो को छोडो साधन महाराज, अपनी बातओ···मैं किचन मे मे आती हूं तब तक जवाब तैयार रहे, बाकी बातें बाद मे···

साधन : (टहलता है) क्या तुम्हारे पास जवाब तैयार है ?

देवयानी : जवाब तो नही लेकिन अपने पक्ष मे सफाई जरूर दे सकती हू।

देवयानी दायें दरवाजे से अन्दर चली जाती है। साधन फिर गैलरी मे आ जाता है।

साधन · क्या आपमे से कोई जवाब दे सकता है कि हम दोनो एक साथ क्यो रहने लगे है (टहलता है) जवाब आसान नही होगा और इसलिए देवयानी के आने से पहले मैंने चाहा था कि जवाब मालूम कर सकू। यानी दूसरो के अनुभव से कुछ सीख लू। मैं देख रहा हू कि भल्ला साहब अपनी बीबी को कार मे बैठाकर रात को शो दिखाने ले जा रहे है। सामने के फ्लैट मे नारायण अपनी श्रीमती जी के साथ स्लॉव पी रहे है। हर घर में जोडे हैं और सुख का आधार कुछ न कुछ तो है ही—कही टिन्नू केन्द्र है, तो कहीं फिक्ट गड्डी और कही फिक्सड डिपाजिट रुपया तो कही फैक्टरी···

टहलता है।

: और सबध अगर टूटते है तो उनका कारण भी बडा अदृश्य और अमूर्त होता है। मैं समझा था और अब भी समझता हू कि देवयानी छत और दीवारो के असूलो के अनुसार अपने आपको बदल लेगी। मैंने कही पढा था कि साथ रहना एक अनुकूल वातावरण की उपज है·· मिसाल के लिए उस ग्लासजार मे कैद मछली को ही लीजिए, मैं देख रहा हू कि वह एकदम पसन्न दिखाई देती है।

कमरे मे देवयानी हाथ में कोई चीज लिये आती है जैसे कुछ पका रही है

और फिर अन्दर चली जाती है। दो तीन बार में वह टेबिल पर सॉस की बोतल और दो प्लेटें, चाय के मग तथा चम्मच रख जाती है। देवयानी कुर्सी खींचकर बैठ जाती है और प्लेट पर चम्मच बजाती है। फिर उठकर कमरे के सिरे तक आती है।

देवयानी : साधन ! अगर तुम्हें गैलरी मे यू अकेले घूमते रहने की ही आदत है तो फिर यह परेशानी क्यो पाली। यू आर स्टुपीड ···यू आर मैनरलैस, यू आर···माई फूट···

साधन : (कमरे में आता है और देवयानी के कन्धे पर हाथ रखता है।) इतना,नाराज होने की क्या बात है। तुम किचन मे थी सो मैंने सोचा कि जरा चहलकदमी ही कर लू···।

देवयानी . (अपनी कुर्सी तक आकर चाय का प्याला उठाती है।) चाय है और खाने को रखा है। क्या यह चलेगा ?

साधन : कमाल है भाई, इतनी देर मे तुमने इतना गजब ढा दिया··· आमलेट भी बन गया और···

देवयानी . (चेहरा बनाकर) तुम साधन···मैंने अभी-अभी तुम्हारी तरफ देखा है, तुम एकदम आलू जैसे लगते हो···

साधन : (कौर नीचे गिराकर उसकी तरफ देखता है) और तुम कैसी लगती हो ?

देवयानी : मैं केवल देवयानी जैसी लगती हू और किसी जैसी लग ही नही सकती। (चाय पीती है) लेकिन तुम एकदम परपरागत, दकियानूस सिरपिटे हसबैंड यानी पानी की तरह लगने लगे हो···।

साधन देखो देवयानी, तुम बार-बार इस बात की घोषणा कर रही हो कि तुम जो हो वही रहोगी···फिर मुझे यह अधिकार क्यो नहीं कि जो मैं हू, वही रहूगा···

देवयानी : लेकिन साधन, तुम्हें बदलना ही होगा क्योंकि तुम जो हो गलत हो। वही तो मैं तुमसे कह रही हू कि तुम न बदले तो आज आलू जैसे लगे हो, कल ने टिंडे जैसे लगोगे ··और मैं तुम्हारे इस लगने को सह नहीं सकती।

साधन : तुम्हारा सारा तूफान केवल इस कारण है कि मैं जरा देर गैलरी मे जाकर खुली हवा मे टहलने लगा·· लेकिन कान खोलकर सुन लो, यह जो तुम एक अडे को फ्राई कर लाई हो यह मुझ पर एहसान नहीं है। मैं पिछले दस साल से अकेला रह रहा हू और यही सब शान्तिपूर्वक, बगैर आवाज के कर रहा हू।

देवयानी जाहिर है, जब तुम दस साल तक शान्तिपूर्वक बगैर आवाज किये खाना पकाते रहे तो मुझे बीस साल तक परम शांति सहित दोनों बार खाना पकाना चाहिए। यही ना·· ?

साधन . मेरा यह मतलब नहीं है और न ही मेरी महत्त्वाकाक्षा ही यह है कि मैं पति महोदय बनू।

देवयानी क्या यह तुम सच बोल रहे हो · ?

साधन . सच कैसे बोला जाता है।

देवयानी तुम्हारी अच्छी-सी देवयानी ने जो पकाया है उसे खाकर।

साधन विभोर होकर देवयानी की तरफ देखता है।

साधन . देवयानी! (खाने की प्लेट पास खींचकर) स्टुपिड, आई लव यू एंड···

देवयानी . बस बस! खाओ तो

साधन एक कौर खाता है और ठहर जाता है जैसे ··

. क्या हुआ ?

साधन : आयम सॉरी (कौर थूक देता है) क्या तुमने इसे नहीं खाया ?

देवयानी : नहीं, क्या हो गया लेकिन ?

साधन : इसमे नमक इतना ज्यादा है कि···

देवयानी : तो यह बात खा लेने के बाद नही बोल सकते थे । तुम निहायत गदे हो साधन···

साधन : इसमे नमक इतना ज्यादा है कि मैं नही खा सकता···

देवयानी : इससे क्या सिद्ध होता है ?

साधन : सिद्ध कुछ नही होता और यह बात ऐसी नही है कि इसको लेकर परेशान हुआ जाय । हो सकता है तुमने नमक दो बार डाल दिया हो···। गलती हो सकती है । मैं कतई टची नही हूं लेकिन कहना जरूरी लगा तो कह दिया···

देवयानी : (जोर से) हा, कह लो और गैलरी मे जाकर कहो कि सारा मोहल्ला सुन पाये···तुम लीचड पति की तरह बात कर रहे हो ।

साधन : और तुम देवयानी, पत्नी की तरह शोर मचा रही हो । कोई प्रेमिका या दोस्त इतनी फसी नही होती किसी भी बात के लिए ।

देवयानी : (प्लेट उठाकर नीचे गिरा देती है, श्रौर हाथ का मग जोर से रखती हैं ।) मैं तुम्हें थप्पड भी मार सकती हू साधन यदि मुझे गलत लगे तो ।

साधन : मैं ऐसी बातो से नही डरता । कुल बात यह है देवयानी कि तुम एक सिरचढी लडकी हो और जो भी व्यवहार तुम कर रही हो उससे यह जाहिर है कि सहज प्रेम या किसी सहज बात का तुम पर असर नही होता··

देवयानी : (साधन को मारने दौड़ती है, साधन उसके दोनो हाथ पकड़ लेता है) छोड दो मुझे छोड दो साधन···

साधन देवयानी को पकड़कर बिस्तर पर गिरा देता है देवयानी उससे संभाले नहीं संभलती ।

साधन : शात होने की कोशिश करो देवू । चलो, मैं हार मान लेता हूं । बैठ भी जाओ···।

देवयानी जरा स्थिर होती है, साधन उसके बाल सहला देता है।

साधन : मैं एक बात सोच रहा था देवयानी।

देवयानी . सोचते रहो···

साधन मैं तुम्हारे बारे मे ही सोच रहा था।

देवयानी तो किसी मेम के बारे मे सोचोगे ?

साधन : (हसकर) मैं सोच रहा था कि ··

देवयानी : जल्दी से बोल डालो ··

साधन : तुम्हे कोई जल्दी है ··?

देवयानी · तो एक घंटे मे बोलो। (पॉज) साधन, तुम सहज व्यवहार नही करते, हर समय जबान को खीचकर क्यो बोलते हो ?

साधन मैं एकदम सहज हूं देवयानी ··मेरी इच्छा है कि काफी पी जाये···

देवयानी मेरी इच्छा चाय पीने की है।

साधन मैं गोश्त खाना चाहता हू···

देवयानी · मुझे आलू की सब्जी चाहिए।

साधन मुझे गरम पानी ही अच्छा लगता है।

देवयानी · मुझे ठडा पानी अच्छा लगता है ··

साधन · मैं ·(हस देता है) मुझे यह भी मजूर है कि मुझे जो पसद होगा वही तुम्हे नापसद होगा। वकील तिवारीजी, दो बरतन पास-पास रखे हो तो आवाज करते ही है ··

देवयानी (जोर से) फिर वही शुरू कर दिया तुमने। अब हम बरतन हो गये। तुम और तुम्हारी खानदान बरतन हो सकती है। मैं बरतन नही हो सकती ··

साधन : आयम सॉरी, अच्छा बरतन मैं ही हू, तुम मेज हो।

देवयानी अब नाराज तुम हो रहे हो। तुमसे तो कोई बात भी नहीं की जा सकती···।

साधन . आयम सॉरी ··

देवयानी रो पड़ती है ○

देवयानी : शटप, सॉरी बोलते समय तुम ऐसे लगते हो जैसे कोई चपरासी बोल रहा हो। (रुककर) तुम साधन की तरह क्यो नही बोलते? जो बोलते हो उसे ओन क्यो नही करते? जो कहते हो खाली कहते क्यो हो···?

साधन : थक जाओगी तुम अब, बस भी करो···

देवयानी : यानी मेरे बोलने पर भी लगाम लगाओगे·· ?

साधन : (हाथ जोड़कर पीछे हटता है।) अब मैं एकदम चुप रहता हू। तुम जो चाहो कहो वह सब मुझे मजूर है। अब तुम ही बोलो···।

विराम।

देवयानी : (उठकर कमरे का मुआयना करती है) यह कमरा गलत ढंग से जमा है। सोफा ऐसे सीधे नही टेढे ढग से जमाया जाना चाहिये था।

साधन : हा, ठीक कहा। टेढा ही होना चाहिए था···

देवयानी : और इस मछली की क्या जरूरत है। यह क्या है आखिर?

साधन : इसे चाहो तो डेकोरेशन समझ लो···

देवयानी : और अगर मैं डेकोरेशन न समझू तो?

साधन : तो प्रतीक समझ लो···

देवयानी : तब तो मैं एक कुत्ता पालूगी···

साधन . कुत्ता किसलिए?

देवयानी : उसे तुम डेकोरेशन समझ सकते हो ··

साधन : जो चीज सारे समय भूके और दुम हिलाये और सारे घर मे दौडी फिरे वह डेकोरेशन कैसे हो सकती है···

देवयानी . जो चीज चुल्लू भर पानी मे तैरती रहे वह डेकोरेशन कैसे हो सकती है ?

साधन : मैंने कहा न उसे प्रतीक समझ लो, एक सिंवल है वह।

देवयानी : ठीक है, फिर कुत्ता भी एक प्रतीक हो सकता है···

साधन . देवयानी, तुम्हारा दिमाग खराब हुआ है क्या·· कुत्ता किस बात का प्रतीक होगा·· ?

देवयानी : तो मछली किस बात की प्रतीक है ?

साधन : मैं कुछ बात बोलकर तुमसे झगड़ा मोल लेने के मूड में नहीं हूं…

देवयानी . तो मैं भी झगडा नहीं करना चाहती…

दोनों एक दूसरे को त्रास करते हुए कमरे मे टहलते हैं…कोई एक मिनट का समय टिकटिक के साथ गुजरता है !

देवयानी : (पैर पटककर) मैं बोर हो गई हू…

साधन : मैं भी बोर हो गया हू।

देवयानी . क्या बिस्तर पर चले जाने से बोरडम दूर हो जायेगी।

साधन : हो सकता है तो जाये और मुझे लगता है कि अपने देश की जनसख्या बोरडम के कारण ही बढ़ती जा रही है…

देवयानी (उछलकर) वाह साधन, तुमने इस देश की नब्ज पकड़ ली साधन, गजब की स्टडी है। वाकई, और कोई मनोरजन ही नही है लोगो के जीवन मे सिवाय इसके कि जब भी बोर हो बिस्तर पर चले जायें…।

साधन : लेकिन ··

देवयानी . लेकिन क्या ?

साधन · कुछ नही !

देवयानी : फिर खाली हो गये !

दोनो जैसे थककर सोफे पर बैठ जाते हैं · फिर एक दूसरे की नकल करते एक मिनट घड़ी की टिक-टिक के साथ गुजरता है…

देवयानी . एक मिनट गुजर गया…

साधन . बस एक मिनट ही गुजरा…

देवयानी . कल सुबह एक दिन गुजर जायेगा··

साधन · परसो दो दिन गुजर जायेंगे।

देवयानी . परसो दो दिन नही गुजरेंगे · ।

साधन . क्या मतलब ?

देवयानी इतनी लबी बात मैं नही सोच सकती, और यह भी कह देती हूं साधन कि आज जैसे हम जीये वैसे कल नही जीयेंगे।

साधन : फिर कैसे, सिर के बल खड़े होकर जीना है ?

देवयानी · कल को कल से, लेकिन यह सब ढंग जमा नही···

देवयानी उठती है और दीवान पर जा लेटती है । साधन उसे फालो करता है···

साधन : आज डैडी के सामने तुम्हारे जवाब सुनकर मैं दग रह गया । मुझे शक था कि तुम यह सब कहीं महज एडवेंचर के लिए तो नही कर गुजरी हो···

देवयानी : तो क्या मैंने डैडी से जो बात की वह इतनी बोल्ड लगी कि तुम्हे विश्वास हो गया कि मैं तुम्हारी हूं···

साधन : (देवयानी के बालों से खेलता है) हा, मुझे लगा तुम दो टूक हो ।

देवयानी . लेकिन साधन, डैडी के खिलाफ होना, तुम्हारे पक्ष मे होना नही है ।

साधन · मेरे पक्ष मे न हो लेकिन अपने सोचने-समझने के पक्ष मे तो है।

देवयानी . सुधीर के मामले मे भी मेरा यही स्टैंड था···

साधन . क्या कहा···?

देवयानी वह अच्छा लडका था लेकिन एकदम सापटी निकला, ही कुड नॉट डेअर···

साधन . मुझ आश्चर्य है देवयानी कि···यानी, अब जब हम एक हो गये है तब भी तुम किसी और के बारे मे सोच रही हो···

देवयानी . उससे क्या होता है साधन·· और क्या तुम अपनी बीती हुई प्रेमिकाओं के बारे मे नही सोच रहे हो। क्या तुम्हें मेरे शरीर का कोई हिस्सा इरा, रेखा या निशि जैसा नही

लगा·· ?

साधन : मैंने देवयानी अपने पास्ट को तुम्हें पहले इसीलिए बता दिया था कि बाद को इस तरह के सवाल तुम न करो ··

देवयानी बता देने और नही बता देने मे कुछ नही होता साधन, अगर तुम्हे वे सब चेहरे अब भी हांट कर रहे हैं तो तुममे पास्ट से मुक्त होकर नये सिरे से जीने का माद्दा नही है।

साधन . (जोर से) तो तुममे बडा माद्दा है, जिसे बिस्तर पर अपने पति के साथ सोते समय कोई और याद आता है।

देवयानी . और जोर से बोलो · साधन तुम एकदम घटिया आदमी हो।

साधन (गुस्से से) तुम चुप होओगी या नही···

देवयानी . इसमें चुप होने और चुप न होने की-सी कौन बात है···?

साधन : देवयानी, साथ जीने के अपने तरीके होते हैं···

देवयानी जिसके लिए होते होगे, होते होगे, मेरे लिए नही होते ··

साधन . चुप रहो देवयानी, तुम निहायत बेवकूफ लडकी हो···

देवयानी और तुम निहायत नपुंसक आदमी हो ··।

साधन मानी ?

देवयानी : साधन, मैं इन सबसे भारी नाम हू . देवयानी । और मैं फिर कहती हू कि जो जीने की जाच-परख करता है वह कायर है। जिंदगी केवल आमने-सामने जीने की चीज है, उसे जो ठोक बजा कर जाचते रहते हैं वे जीना नही जानते।

साधन तुम चुप रहो देवयानी, तुम जो हो वह मैं जानता हूं।

देवयानी · (पास पड़ा कंघा उठाकर ग्लासजार की तरफ फेंकती है।) तुम कुछ नही जानते, कुछ नही जानते। तुम केवल परीक्षक हो, पुरुष नही।···

साधन . तुम चुप नही करोगी ?

देवयानी . (हिस्टीरिया मे) नहीं, नहीं, नही।

साधन तड़ से देवयानी को एक चाटा जड़ देता है।

साधन : आई हेट यू।

देवयानी एक कदम पीछे हटती है...
प्रकाश धीमा होने लगता है।

देवयानी : तुम हिमाकत कर सकते हो साधन, बेवकूफ, नालायक, सूअर, पति कहीं के...

साधन उसे बिस्तर तक ले जाता है और वह बार-बार उसकी गिरफ्त में से छूट जाती है।

साधन : चुप भी रहो, हाथ चलाया नहीं मैंने, चल गया है। तुमने मुझ पर चोट की है।

देयवानी : लेकिन मुझे छोड दो...पहले छोडो...

साधन : नहीं छोडूंगा...। यह हमारी पहली रात है...

देवयानी : तो तुम्हारी पहली रात होगी, मेरी पहली रात नहीं है।

साधन : दे व या नी !

देवयानी : इस तरह झंझोड़ते क्यों हो तुम, हाथ चलाओ...

देवयानी सिसकियां भरकर रोती है।

: तुम मुझे छोड दो...

साधन : मैं नहीं छोडूंगा। और तव तो विलकुल नहीं जब तुम मेरी कोई बात मानने को तैयार ही नहीं हो...

देवयानी और साधन में खींचतान का संघर्ष चलता है और पूरा अंधेरा फैल जाता है। रात हो चुकी है और रात कट रही है। जब प्रकाश धीरे-धीरे लौटता है तो देवयानी दीवान पर उल्टी पड़ी है और साधन फर्श पर सोया है...पहले साधन की आंखें खुलती हैं। वह उठ बैठता है और मुस्कराकर देवयानी की तरफ देखता है...

साधन : देवयानी, सुबह हो गई···उठो···जागो भी। भाई तैयार होना है और समय से दफ्तर पहुचना है···

देवयानी जागती है आखें मलती है और उठ बैठती है···।

देवयानी · बहुत दिन चढ गया क्या···? घर तो डैडी पाच बजे सवेरे जगा देते थे। आज बहुत दिनो बाद उस कैद से मुक्ति मिली है·· । गुड मार्निग साधन···

साधन : गुडमार्निग देवू · मुझे माफ कर दिया···।

देवयानी . (अभय हाथ उठाती है) जाओ बच्चा, माफ किया। लेकिन कल का दिन मेरे अदर की आखें खोल गया है···

साधन सुबह की चाय अदर की आखो मे बनती है या बाहर की आखो मे ?

देवयानी · केवल नवादराम मे बनती है।

देवयानी उठकर किचन मे जाती है। एक घटी बजती है। साधन उठकर दरवाजा खोलता है, अखबार लौटाता है। दूसरी बार घंटी बजती है, साधन दरवाजा खोलता है, दूध की बोतल लेकर लौटता है। तीसरी घटी बजती है और बेरा आती है। हाथ मे अखबार लिए यह गैलरी मे जाता है।

साधन : (एक चक्कर गैलरी का लगाता है) अभी-अभी ऐसा लगा कि साथ रहने का चक्र चल निकला है। मुझे साथ जीने का गुर मिल गया है जैसे। वैसे गुर यह है कि लड़ाई-झगड़े, मारपीट, नोच-खसोट सब चलेगी, उसी के बीच दूध आता रहेगा, चाय बनती रहेगी, बिस्तर की चद्दर बदलती रहेगी। यह साथ रहना एक किस्म की विघ्न-दौड़ है। होगा यह कि बार-बार जब इस दौड मे से गुजरना होगा, जिस

छोटे लगने लगेंगे। हो सकता है किसी सुवह मैं मिस्टर भल्ला की तरह गजा हो जाऊ या किसी सुवह चौधरी साहव की तरह मेरी भी कमर झुक जाये या···

देवयानी दो मग उठाकर लाती है। साधन उसके पास जाकर सोफे पर बैठ जाता है···

देवयानी . लो (रुककर) चाय की कीमत है चार आना···

साधन : (देवयानी मग देती नहीं) क्या वाकई चार आने देने होगे ?

देवयानी . वह भी कैश···

साधन पैसे देता है और चाय लेता है।

साधन . (एक सिप लेकर) वाह, मजा आ गया···

देवयानी : तुमने पैसे खर्च किये है तो मजा तो आना ही चाहिए···

साधन नही देवू, चाय तुमने वनाई है इसलिए मजा आया है···

देवयानी . तुम कह भले लो यह लेकिन हकीकत नही है···

साधन · जो भी हो, लेकिन मैं उस रास्ते को देख रहा हू जिस पर हमे चलना है।

देवयानी (उठते हुए) मैंने भी रास्ता ढूढ लिया है, और हो सकता है कि उसी पर चलने से सव ठीक हो जाये···

साधन . क्या उस रास्ते के वारे मे कुछ वतला सकती हो ?

देवयानी : तुमने ही कहा मेरे सवाल का जवाव दिया है । और वतलाने और डिसकस करने को समय कहा है। अभी वात की वात मे ऑफिस का समय हुआ जा रहा है। अव तुम जाकर वेहतर है, तैयारी करो···। दोपहर का खाना ऑफिस मे खा लेना···

साधन . देवू·· देवयानी···

देवयानी · पहले जाकर तैयारी करो···

साधन तौलिया उठाकर जाता है। देवयानी वेहद शांत मूड मे कमरा

ठीक करने में लगी होती है कि बेल बजती है। ·· वह दरवाजा खोलती है। तिवारिनजी आती हैं।

तिवारिनजी : बैनर्जी बाबू ने मेरे बारे में बताया होगा बेटे, खुश रहो।

देवयानी : तिवारिनजी नमस्कार, बैठिये···

तिवारिनजी मैं कल आकर एक बार पूछ गई थी कि किसी बात की जरूरत हो तो बतला देना मुझे। और उस छत को अपनी समझो, जैसे भी चाहो पार्टी करो।

देवयानी · धन्यवाद तिवारिनजी। अभी नये-नये आये हैं तो जमने में थोड़ा समय तो लगेगा ही लेकिन···

तिवारिनजी वो तो मैं कल रात को ही आने वाली थी कि बता दूं बेटे यहां बिल्लियां बहुत हैं ··(टूटी हुई प्लेट की तरफ देखकर) हाय-हाय तोड़ गई न प्लेट, मेरा तो पूरा सेट ही तोड़ दिया है इस निगोड़ी ने।

देवयानी . यह प्लेट बिल्ली ने नहीं तोड़ी, हमसे ही टूट गई है।

तिवारिनजी चलो कोई बात नहीं, टूटना-फूटना तो चलता रहता है। पर बेटे कल रात को रेडियो बड़े जोर से चल रहा था, जरूर तुम दोनों को नाटक सुनने का शौक होगा।

देवयानी रेडियो ! ···(कुछ सोचकर) नहीं तिवारिनजी, वह तो हम ही जरा जोर से बातें कर रहे थे···

तिवारिनजी : तुम मजाक कर रही हो बेटी। वह जरूर रेडियो वाला नाटक ही होगा। अरे उसमें तो थप्पड़ मारने की आवाज तक आई थी, पर मुझे तो नाटक सुनते-सुनते नींद ही आ गई, पूरा नाटक नहीं सुन पाई ··

देवयानी : बात यह है तिवारिनजी कि हम दोनों झगड़ने लगे थे।

तिवारिनजी क्या बात कर रही हो, अभी तो पैर की मेंहदी भी नहीं छूटी और झगड़ा ·

देवयानी : अब झगड़े के सिर पर सींग तो होते नहीं हैं न तिवारिनजी, बात में से बात निकली और बात का बतंगड़ बन गया।

तिवारिनजी : हाय राम, तो जे वात है, तभी तो कहूं जिंदगी वीत गई रेडियो सुनते-सुनते आज तक ऐसा नाटक नही आया···

देवयानी : लेकिन यह कोई खास वात नही है···

तिवारिनजी · पर वेटे संभल कर रहना। ये तुम्हारे तिवारी जी भी एक वार मुझसे उलझ पडे थे। इनके दफ्तर मे एक झाडू थी। उसने इन पर जादू चला दिया। लेकिन मैं भी कम नही, जाकर जलधर से वटके नाथ वावा का गंडा लेकर आयी, पक्का वसीकरन वनाके दिया वावा ने, वस, ठडे हो गये। अव कच्चे सूत से वघे मेरे आगे-पीछे घूमते रहते हैं।

देवयानी जोर से हंस देती है।

देवयानी : अपने से ये नही होगा तिवारिनजी। कही जाना हो तो शौक से जायें। अपने लिए भी उससे रास्ता खुलेगा···

तिवारिनजी · (उठ खड़ी होती है) अरे वह मुझे तो मजाक करने की आदत ही हेगी···। हाय राम मैं तो चलू, तिवारीजी रस्ता देख रहे होगे···।

तिवारिनजी चली जाती हैं। देवयानी वैठी रहती है · उठकर कैलेंडर मे तारीख वदलती है।

साधन · (सिर पोंछते हुए आता है) तो देवयानी···

देवयानी उत्तर नहीं देती।

: मैं कुछ वोल रहा हू।

देवयानी : (उसके हाथ से तौलिया ले लेती है)वाकी वातें शाम को···

साधन : लेकिन शाम से मुझे डर लगता है···

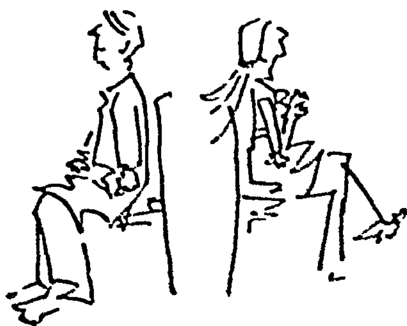
देवयानी · अव डरने की वात नही—शाम से हम नये ढग से रहेंगे और तव भी नही रह पाये तो···

साधन : तो ?

देवयानी : कुछ देर रुककर देखना होगा।

देवयानी वाथरूम मे चली जाती है। साधन जैसा का तैसा खड़ा जड़ हो जाता है।

अंतराल



शाम ५ और ६ के बीच का समय है। देवयानी ऑफिस से लौट आई है। उसने सुविधाजनक कपड़े पहन लिए हैं। परदा उठते समय कमरे के बीचोबीच एक पार्टीशन दिखाई देता है। देवयानी पार्टीशन को ठीक करती है। पीछे हट-कर उसे देखती है। दीवान को टेढ़ा करती है। फिर दूसरे कमरे मे जाकर सोफा पीछे हटाती है। गैलरी मे एक चक्कर काटकर मुस्कराती है। कुछ गुनगुनाने की कोशिश करती है। किताबे निकालती है। तय नही कर पाती है कि सोफे पर बैठकर पढ़े या दीवान पर लेटकर।

देवयानी (दीवान पर लेट जाती है और किताबों के शीर्षक पढ़ती है) द मेन्सुअस वोमन···। इसे फिर पढ़ा जायेगा। वैसे सेन्सुअस होना कोई मुश्किल काम नहीं है। और यह है एनी वोमन कैन यानी देवयानी कैन · (कुछ सोचती है) मेरा ख्याल है, फरुखाबादी तरीका ही बेहतर है। आब्लिगेशन नाट, जिम्मेदारी नाट, कुलवधू नाट···
(कालबेल बजती है) यानी जनाब साधन बैनर्जी आ गये। (उठकर मेकअप करती है तब तक घंटी दो-तीन बार बज चुकती है) आ ही रही हूँ (दरवाजा खोलती है।)

साधन अंदर घुसता है। पार्टीशन देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। दोनो तरफ जाकर देखता है।

साधन इसका मतलब यह हुआ कि तुमने रिट दायर कर दी है।

देवयानी . (मुस्कराती है, उसे छूती है) आते ही नाराज क्यों हो रहे हो डियर। मैं तो तब से इन्तजार कर रही हूँ···

साधन · तुम, तुम इस तरह तो नहीं बोलती थी देवयानी पहले?

देवयानी तो मैं बदल भी तो सकती हूँ।·· मैंने ऑफिस जाते समय कहा नहीं था कि हम अब एक नये ढंग से जीने का तरीका ईजाद करेंगे।

साधन · यानी हमारे बीच में एक पार्टीशन होगा और वह भी पार्टी से पहले।

देवयानी यह सुविधा के लिए है। अब यह कमरा तुम्हारा है, जिसमें तुम हो और तुम्हारी मछली कैद है। वह कमरा मेरा है· जब जी चाहे दरवाजा बजाना और आ जाना। वहाँ तुम्हें शराब मिल जायेगी, सिगरेट उपलब्ध होगा और मेरा शरीर तुम्हारे डिसपोजल पर होगा (हँसती है।)

साधन · मैं समझ नहीं रहा हूँ। तुमने यह तीर मारा है दिन भर में कि कमरे में पार्टीशन लगवा दिया और इतना ते··· सेंट···यह सब तो तुम कभी इस्तेमाल नहीं करती थीं

देवयानी···

देवयानी : तुम मेरे राजा हो, कहोगे कोई और सेंट इस्तेमाल करो तो वही करने लगूगी···

साधन : देवयानी, कल अपने जीवन का पहला दिन था और हम सारे समय लडते रहे हैं। (सोफे पर बैठ जाता है।)

देवयानी · लडते कहा रहे हम, कल शुद्ध पति-पत्नी की तरह रहे हैं जिन्होंने सात फेरे घूमकर शादी की हो और मनु महाराज के कहे मुताविक जिन्हे कभी वरतन की तरह, कभी पहियों की तरह, कभी बुलडोजर की तरह जीना था···

साधन : लेकिन हम सारे समय झगडते रहे हैं। तिवारिनजी तक ने हमारा नाटक सुना है···

देवयानी पति-पत्नी एक घर मे रहे और नाटक न हो यह नामुमकिन है। पति-पत्नी झगडें नही तो लगता है पत्नी ठडी है या पति नामर्द है। पत्नी का धर्म है समर्पण और पति का धर्म है थानेदारी या तानाशाही··।

साधन · क्या कल मैं वैसा था ··?

देवयानी सरासर। तुमने मुझे पीटा ··

साधन . तुमने मुझे पीटा · वह तो हाथ छूट गया था···

देवयानी . कोई वात नही। हर पति को यह अधिकार है कि वह पत्नी को सुमार्ग पर लाने के लिए उसे पीटपाट सकता है।

साधन : लेकिन तुमने कल रात को भी··;

देवयानी मैं कल नई वहू थी। जानती ही नही थी कि पहली रात विस्तर मे क्या होता है। सो तुमने वलात्कार किया···

साधन यह तुम क्या वोले जा रही हो ?

देवयानी सत्य, यानी-सच। लेकिन जिसमे वल होगा वह उसका उपयोग करेगा ही···।

साधन खैर छोडो, (ठीक होने की कोशिश करता है) जो हुआ सो हुआ। मुझे खुद यह लगा है कि कल जो जीवन हमने जिया···

देवयानी : बतर्ज पति-पत्नी,

साधन : हा बतर्ज पति पत्नी, वह हमे रास नही आया और इनका कारण तुम हो, बुरा मत मानना देवयानी !

देवयानी . मैं क्यो कारण हू और तुम क्यो कारण नही हो ?

साधन · शायद इसलिए कि तुम ज्यादा ही इटेलिजेंट हो···

देवयानी . मैं भी यही कह सकती हू कि तुम कुछ ज्यादा ही दकियानूस और पुराणपथी हो, बुरा मत मानना साधन···

बाहर से राजाराम की आवाज आती है—'बाबूजी मैं आ जाऊं ?'

साधन अरे लो, मैं भूल ही गया कि आज मैंने भी समस्या को सुलझाने के लिए रास्ता ढूढा है (बाहर देखकर) आओ-आओ, राजाराम अदर आ जाओ।

राजाराम अदर आता है—टिपिकल नौकर की तरह डरा हुआ, दब्बू। बैठने लगता है, फिर उठ खड़ा होता है।

देवयानी इसे किसलिए ?

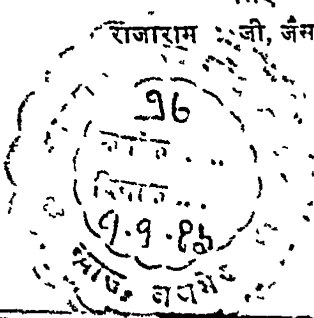
साधन भई देखो, सवेरे की चाय के तुमने मुझसे दाम ले लिये तो मुझे ऐसा लगा कि अगर एक कोई नौकर हमारे पास हो तो खाना-वाना बना देगा और हमारे बीच मनमुटाव कम हो जायेगा।

देवयानी खयाल तो अच्छा है। जाओ राजाराम, यह है किचन का दरवाजा···सभालो सब चीजो को ! साहब जो आर्डर दें वह साहब के लिए बना देना और मैं जो आर्डर दू वह मेरे लिए ··

राजाराम जी, जैसा कहते है करूगा···

साधन एक सिगरेट जलाता है और देवयानी उठकर अपने कमरे में चली जाती है। साधन घूर रहकर देवयानी

देवयानी का जाना [illegible]



के पास जाता है।

देवयानी . (जो दीवान पर आकर लेटने लगी थी, एकदम उठकर) यह एकदम गलत है साधन। अब हमारे पास दो कमरे हैं।

साधन . मैंने कहा इस बात का विरोध किया कि हमारे पास दो कमरे नही हैं। एक ड्राइंगरूम है, और यह बेडरूम है।

देवयानी . गलत, वह साधन बैनर्जी का कमरा है और यह देवयानी गुप्त का। और मेरे कमरे मे आने से पहले दरवाजा बजा दिया करो।

साधन . क्यो ?

देवयानी : हो सकता है, मैं तुमसे मिलने के मूड मे न होऊ या और कोई बात भी हो सकती है।

साधन · इसका क्या मतलब है ?

देवयानी : अब आ ही गये हो तो बैठो, बतलाती हूं···

साधन स्टूल पर बैठ जाता है।
देवयानी सिगरेट उठाती है··

साधन . मुझे मालूम है कि तुम सिगरेट पी सकती हो···

देवयानी · (सिगरेट जलाकर) इसमे तुनकने की कतई आवश्यकता नही है। मैं स्मोक करती हूं या ड्रिंक करती हू या दफ्तर जाती हू यह सब पर्सनल मामला है। मैं अकेली हू। मेरा यह कमरा है। नौकर, घर, किराया सबमे मैं पूरा-पूरा रुपया दूगी।

साधन : यानी तुम और मैं अलग-अलग हैं ?

देवयानी : राइट···। यानी कल हमने जो एकसार जीवन जिया उसके आज हम ठीक खिलाफ हैं।

साधन : यानी हमारे कोई सबध नही होंगे ?

देवयानी : कोई ही नही, सारे सबध होगे। किसी भी स्त्री के साथ तुम्हारे जो सबंध हो सकते हैं वह सब मेरे साथ भी होगे···।

साधन · लेकिन देवयानी, उस संबध को हम क्या नाम देंगे ?

देवयानी . क्या नाम देना जरूरी है ?

साधन . जरूरी कैसे नही है ?

देवयानी . मंजूर। तो नाम ढूंढ लेंगे, या जीकर देखें उसे, शायद कोई नाम मिल ही जाये या हमें देखकर कोई किसी नाम से पुकार ले।

साधन . कल शर्त ढूंढने की कोशिश की थी और··

देवयानी और मुझे यह लगा कि साथ रहने की शर्त चार दीवारें हैं, फर्श है, छत है, मजबूरी है।

साधन . नही, वह कुछ और है।

देवयानी यही कि चाय है, खाना है, बिस्तर है, बच्चा है, सिर पर लगा हुआ सिंदूर है··

साधन पास ही शृंगार मेज पर रखे निमंत्रण और लिफाफे उठाता है।

साधन और ये निमंत्रण। हमारी जबानदराजी तो चलती रहेगी, पहले इनका कल्याण तो करो ··

देवयानी चुप रहती है।

. तुम्हारा क्या खयाल है, मैं सामने वाले कपूर साहब, भल्ला साहब, मिस्टर जान, मेहताजी, चटर्जी· ·

देवयानी सबको बुला लो·· मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब शराब बोतल से ढालनी है और स्नैक्स पैकेट में से निकालने हैं तो परेशानी ही क्या है···।

साधन वैसे तुम कोई उत्साह नही दिखा रही हो पार्टी में · ।

देवयानी . अभी से कौन-सा उत्साह दिखाऊं। गैलरी से जाकर जनता को आवाज लगाऊं ?

साधन . तुम कोई बात ठीक से नही कहती।

देवयानी . बस, बस चुप रहो अब···।

सहसा राजाराम आता है।

राजाराम . बाबू, चाय बनाऊं ?

साधन . हां-हां चाय बना लो।

राजाराम लौटने लगता है।

देवयानी का बाना है C ५२

देवयानी : राजाराम, मेरे लिए कॉफी वनाना।

साधन . दूध ज़रा ज्यादा डालना।

देवयानी : दूध मत डालना मेरी कॉफी मे।

राजाराम जाने को होता है हर बार, और पुकार सुनकर फिर लौट पड़ता है।

साधन . और सेंडविचेस वना लेना।

देवयानी : उसमे टमाटर मत डालना।

साधन : टमाटर डाल देना•••।

देवयानी : मेरे लिए अलग वनाना और साहव के लिए अलग।

राजाराम : (घवराकर) जो, जो हुकुम•••चाय मे दूध नही और कॉफी मे•••।

सोचता हुआ चला जाता है।

साधन : क्या हम कोई एक ही चीज़ खा नही सकते या क्या हम एक ही चीज़ नही पी सकते ?

देवयानी : यह सव किसलिए ? देखो साधन, जव भी हम मद्रास होटल गये है, मैंने इडली खाई है, तुमने वडा मगवाया है। वहा एक चीज़ क्यो नही खाते थे•••?

साधन : वह होटल था।

देवयानी : इसलिए पसद अलग-अलग थी या अलग-अलग चीज़ सर्व हो सकती थी इसलिए।

साधन : और जव यह घर है•••

देवयानी : उससे क्या फर्क पड़ता है•••?

साधन उठ खड़ा होता है•••गैलरी की तरफ जाता हुआ•••

साधन : खैर भई, मैं तर्क नही करना चाहता•••।

देवयानी : यह वात मुझे एकदम समझ मे आ गई। तर्क से कुछ नही वनता, न उसका टॉप सिल सकता है और न पैरेलल।

साधन व्यर्थ ही कमरे मे घूमता हुआ

देवयानी की नई किताबे देखता है।

: तुम अगर बोर हो रहे हो तो जा सकते हो।

साधन : मैं अभी गैलरी मे चहलकदमी करने जाऊगा और तुम शोर मचाने लगोगी कि वही टहलना था तो शादी क्यो की·· ?

देवयानी . वह कल कहा था, तुम्हारी पत्नी की तरह, आज उसका सवाल ही नही उठता··

साधन गैलरी में आ जाता है। पार्श्व में देवयानी कुछ न कुछ करती रहती है। बाथरूम जाकर फ्रेश भी हो आती है।

साधन : (एक कश खींचकर सहसा दूसरा आदमी हो जाता है) तो साहब, गृहस्थी के परम धर्म को निबाहने के लिए कल जो बुद्धज्ञान प्राप्त हुआ था आज वह बेकार हो गया। मुझे मालूम है तिवारी जी, आप इस बात को कभी स्वीकार नही करेंगे कि विवाह एक दिन मे भी असफल हो सकता है। आपकी भाषा मे विवाह उसे कहते है जिसे ईश्वर बाधता है और जिसे तोडना ईश्वर के हाथ मे भी नही है। जी, इस सारी हालत मे मैं एकदम बेचारा लगता हू।

साधन टहल रहा है। राजाराम मग लाकर रख देता है। देवयानी अपनी कॉफी उठा लेती है·

: लेकिन देवयानी अगर आजाद ही रहना चाहती है तो वैसे ही सही। नही, अगर यह योग साधन है तो कठिन से कठिन योग मैं साध सकता हू इतने लाग जी रहे है। फिर एक साधन बैनर्जी पर ही क्या आफत आई है

घूमकर देखता है कि देवयानी मग हाथ मे लिये है। साधन उसके पास पहुचता है।

: भई, पुकारा भी नही···

देवयानी : गलती राजाराम की है, उसे आपको पुकारना चाहिए था।

साधन . यानी तुम नही पुकार सकती ?

देवयानी : एक कमरे मे चाय रखकर, बाहर खड़े आदमी को पुकारने मे एक खास गध आती है···

साधन : कौन-सी गध ?

देवयानी : 'पति-पत्नी की·· ! माफ करना उस गंध से मुझे नाशिया हो जाता है· ·। 'कहा गये जी, चाय रखी है'···इस वाक्य मे ऐसी लय है कि बोलने से जुकाम हो जाता है।

साधन : (चाय पीते हुए) तुमसे बात करते हुए एक फीलिंग मेरे मन मे भी पैदा होने लगी है कि जैसे मैं ऐसे किसी व्यक्ति से बात कर रहा हू जो जिद्दी है, समझ को जिसने ताक मे रख दिया है, जो किसी दूसरे की बात को सुनना अपना अपमान समझता है, जो अपने दम पर जी रहा है, जो खुद नही जानता कि उसे गरूर किस बात का है। तुम देवयानी, फिजूल मे पता नही क्या बनने का दुस्साहस करती रहती हो, असल मे हो वही सब ··

देवयानी : (गुस्से में उठ खड़ी होती है) यही सब तुम्हारे मन मे घुमड़ रहा था ? इसी सबके बारे मे तुम सोचते हुए गैलरी मे चक्कर क़ाट रहे थे ? कमीने···!

कालबेल बजती है।

: पहले जाकर देखो कौन है। क्या तुमने किसी को बुलाया है।

साधन . बुलाया तो नही लेकिन आज ऑफिस मे दस-बारह फोन करके खबर जरूर गरम की है।

दरवाजा खुलने पर आते हैं इरा और सुरेश-कपूर···।

आइये कपूर साहब। शादी के बाद आप दोनो के दर्शन हुए ही नही। क्या इतना लम्बा हनीमून मना डाला···।

सुरेश : अरे साहब, सब हनीमून ही हनीमून है।

हाथ मिलाकर सुरेश कपूर के सोफे पर

बैठता है। साधन उनके सामने बैठता हुआ देवयानी को पुकारता है।

देवयानी · (एकदम प्रसन्न मूड मे उनके सामने आती है) नमस्कार। और साधन, मेरा परिचय तो करवाओ···।

साधन · ये हैं श्रीमती इरा कपूर और आप हैं सुरेश कपूर···। बस शादी मे इराजी ने बुलवाया था, उसके बाद आज दर्शन दे रही हैं।

देवयानी · खुशी हुई आप लोगो से मिलकर।

साधन . और मैं बतलाना तो भूल ही गया, अभी कल ही हम दोनो ने शादी कर ली है। आप है देवयानी···

देवयानी . (मुस्कराकर) अरे आप लोग ऐसा आश्चर्य क्यों जाहिर कर रहे हैं और अगर मैं गलती न कर रही हू तो आपका पहला नाम इरा दास है।

इरा . जी हा मेरा नाम इरा दास है, शादी के बाद से कपूर हो गई हू।

देवयानी : लेकिन मैं बनर्जी न हो पाई। अब भी देवयानी गुप्त हू। ··

सुरेश : सो क्यो ? बैनर्जी नाम बुरा तो नही है।

साधन बात यह है सुरेश, देवयानी है आधुनिक, आधुनिक हर अर्थ मे। इसका तर्क यह है कि बाईस बरस तक लोग जिस नाम से यानी उपनाम से मुझे जानते रहे उसे इस छोटे से रिश्ते के लिए छोड़ना उचित नही है।

इरा . रिश्ता छोटा कैसे हुआ ? भई शादी तो जिन्दगी भर का···

देवयानी · ···भार है इसलिए। (हंसकर) कभी साधन का रग चढ़ गया तो हो सकता है नाम बदल लू लेकिन नाम अर्थ के साथ बदलूगी। देवयानी बैनर्जी कहलाने मे कोई तुक नही है, मैं तब अपना नाम साधन के वजन पर साधना रख लूगी···

सब हसते हैं। वातावरण मे सहज

प्रसन्नता आ जाती है। राजाराम झांकता है। उठकर साधन एक लिफाफा सुरेश को देता है।

साधन : यह है कल के लिए और राजा राम, चाय बनाओ···

राजाराम : जी बाबू ··(सबके बीच मे आ जाता है। इरा और सुरेश लिफाफा देखते हैं। राजाराम देवयानी की तरफ देखकर पूछता है) आप क्या लेंगी मेम साहब ?

साधन : कहा तो चाय···

राजाराम : (सुरेश की तरफ देखकर) आप क्या लेंगे ?

सुरेश : चाय ही लेंगे

राजाराम : और उसमे दूध लेंगे या नही···?

इरा : (हसकर) क्या बात है मिस्टर बैनर्जी, नौकर तो इस तरह पूछ रहा है जैसे किसी होटल मे आर्डर ले रहा हो···।

राजाराम : वो बात ये है साब कि मेम साब···

देवयानी : अच्छा तुम अन्दर जाकर सबके लिए फुर्ती से चाय ले आओ···

राजाराम सिटपिटाकर चला जाता है।

साधन : बात यह है इरा जी कि नौकर है गाव का। धीरे-धीरे शहर के मैनर्स सीख ही जायेगा···।

देवयानी : (अभिनय करती हुई) और देखो जी, अगर यह नौकर ठीक नही हुआ तो मैं इसे निकाल बाहर करूंगी। अरे ऐसे नौकर से तो खुद ही काम कर लेना बेहतर है।

साधन : अरे, देवयानी तुम···

देवयानी : (बात काटकर) और सुनिये इराजी, आप दोनो ही मौज मार रहे हैं या बच्चे-बच्चे भी···।

सुरेश :- अरे साहब दो ही ठीक से नही रह पाते तो तीसरे को कौन सभालेगा ?

इरा : और मिस्टर बैनर्जी हम एक काम से आये थे।

सुरेश : तुम बीच मे ही बोलने लगी, बात मैं कर रहा था।

इरा : अब मुझे बहलाने की कोशिश क्यों कर रहे हो···

सुरेश : ऐसे तुनकने की जरूरत नहीं है इरा। यहां मैं तुम्हारे कहने से आया हूं। अगर मिस्टर बैनर्जी ने ही मुझे बात करनी होती तो इनके ऑफिस में फोन कर सकता था···

साधन और देवयानी दर्शक हो जाते हैं।

इरा : तो अब कर लो न बात और हो मेरी कोई गलती तो चढ़ा देना फांसी पर।

सुरेश . गलती नही है, मेरे पास सबूत है और उसमें···

इरा : (उठकर खड़ी होती है) तो क्या कर लोगे, नहीं रहना हो साथ में तो चले जाओ।

सुरेश · तुम तो यह चाहती ही हो कि मैं हट जाऊं तो और किसी को थाम लो। याद रखो मैं मिस्टर बैनर्जी की तरह चुप रहने वाला आदमी नही हूं।

साधन . भई, क्या माजरा है। आखिर विवाद तो मालूम हो···

देवयानी · बहुत भोले बन रहे हो साधन···

सुरेश . और देवयानी जी, यह तो बतलाइये कि आपको इरा का पहला नाम कैसे मालूम हुआ···?

राजाराम चाय लाकर रखता है, इरा फिर बैठ जाती है।

देवयानी · छोड़िये भी उस बात को पहले चाय पीजिए···

सबको मग देती है।

इरा · नही बहन, उस बात को छोड़ो नहीं, जरा इन्हे बताना दो तो इनके और इनके पुरखो की आत्मा को शांति मिल जाये।

सब चाय पीते हैं। एक खामोशी छा जाती है।

देवयानी · लगता है, आप दोनो काफी लड़-झगड़ चुके हैं।

सुरेश : देखिये मिसेज बैनर्जी, मैं बहुत ही साफ आदमी हूं···

देवयानी वो तो मालूम है, हर आदमी साफ आदमी होता है···
आप अपनी शिकायत बतलाइये···।

साधन : लेकिन सुरेश साहब, आप लोग आये हैं, चाय पीजिए, गप्पें लडाइये और खुश रहिये। तुम भी देवयानी कहां न्यायालय खोल बैठी।

इरा : नही मिस्टर बैनर्जी, मैं तग आ गयी हू। इस बात को साफ होने ही दीजिये।

देवयानी जो भी हो, यह तो जाहिर है कि आप दोनो पति-पत्नी हैं और खासे प्यार से रहते हैं।

सुरेश : आपने ठीक कहा। जिन्दगी ठीक से चल रही थी···।

देवयानी . इरा जी, सवेरे बैड-टी जरूर बनाती होगी, नाश्ता भी, खाना भी···।

सुरेश : इन बातो की मुझे कभी शिकायत नही रही।

इरा : तो जिस बात की शिकायत है उसे कहकर बतलाये ना···।

सुरेश : हुआ यह कि जब सारा जीवन ठीक से चल रहा था तो एक दिन इरा की अटैची मे मेरा हाथ चला गया···।

इरा गलत कह रहे हो, तुम हमेशा मेरी अटैची को सूघते रहते थे···।

देवयानी : तो उसमे साप निकला होगा ?

सुरेश : साप ही समझिये···

साधन : मेरा ख्याल है देवयानी तुम इस मामले को···

देवयानी : आप चुप रहिये···मामला ऐसे खारिज नही होगा···हां तो कपूर साहब! आपने अटैची खोली···।

सुरेश : जी हा अटैची···

देवयानी . हा, उसमे आपका हाथ चला गया।

सुरेश : उसमे मुझे एक ग्रीटिंग कार्ड मिला। इरा की जन्म तिथि पर बधाइया। भेजा गया है साधन बैनर्जी के द्वारा···।

सब चौंकते हैं लेकिन चुप रहते हैं।

देवयानी : आपने भेजा था···?

साधन : मैं समझ ही नही पा रहा हू कि यह सब क्या मामला है···

सुरेश : उस कार्ड पर तारीख नही डली और केवल [illegible] लिखा है···मुझे शक है कि कार्ड इसी साल भेजा गया है ··

इरा : मैं तुम्हें दस बार बतला चुकी हू सुरेश कि यह कार्ड पाच बरस पहले भेजा गया था और कार्ड अच्छा लगा केवल इसलिए उसे मैं अपने पास रखे हुए हू। तुम्हें मेरी बात पर विश्वास क्यो नहीं होता···।

देवयानी मामला काफी सगीन है। मुझे यह तो मालूम है कि श्री साधन बैनर्जी किसी जमाने मे इरा दास के आशिक थे ·· शायद दोनो शादी करना भी चाहते थे लेकिन बात बनी नही।

साधन : हम साफ-साफ बात कर सकते हैं। इरा को मेरी तुलना मे सुरेश अच्छा लगा और उसने शादी कर ली।

सुरेश : फिर आपने कार्ड क्यो भेजा ?

साधन : समझ से काम लो सुरेश ! जिस दिन तुम दोनो की मगनी हो गई उस दिन के बाद मैं इरा से कभी नही मिला। हा, जब विवाह का निमत्रण मिला तो जैसा कि तुम्हें मालूम है, मैं विवाह मे शामिल हुआ था क्योकि मैं अपने दोस्तो को और कुछ सोचने का मसाला नही देना चाहता था···।

इरा . साधन ने उन्ही दिनो मेरी जन्मतिथि पर वह कार्ड भेजा था, और अटैची मे एक नही कई कार्ड है। मैं बचपन से ही वे सब कार्ड इकट्ठे करती आई हू जो मुझे अच्छे लगते रहे हैं।···कार्ड किसने भेजा इसका कोई अर्थ नही है, कार्ड कैसा है यही मेरे लिये महत्त्वपूर्ण रहा है।

देवयानी : मैं समझती हूं कपूर साहब कि मामले को खारिज कर देना चाहिए। आखिर कार्ड ही तो है ! और अगर आप दोनों सुख से रह सकते हैं तो वह कार्ड है, कोई पार्टीशन तो नही···

साधन : मुझे आश्चर्य है कि सुरेश साहब कि आप ऐसी छोटी-सी

वात के लिए परेशान होते रहे···

सुरेश . आप इसे छोटी-सी वात कहते है, अगर आपकी पत्नी की अटैची मे से कोई ऐसी ही चीज निकल आये तो ?···

देवयानी यह आपके घर मे ही होता है जनाब, मुझे कार्ड बटोरने का शौक नही है···

इरा : हा, आप तो भेजती होगी, बटोरेंगी क्यो···।

देवयानी : भेजना बुरी वात नही है इरा जी, उन्हे रिसीव करना भी बुरी वात नही है···उन्हे छिपाना बुरी बात है।

सावन अव छोडो भी देवयानी···वात यह है कि ··

सुरेश उठ खडा होता है। इरा भी उठती है

सुरेश : तुम लोग वात करते रहो, हम तो चलें। माफ कीजिये आपको तकलीफ दी।

इरा : नमस्कार देवयानी जी, और इतना गुमान करने की जरूरत नही है।

देवयानी · गुमान कैसे नही करें हम, खुली जिंदगी जीते हैं। किसी चीज को छिपाने के लिए हमे अटैची की जरूरत नही होती है···

इरा · फिर से कहिये तो···

सुरेश इरा का हाथ पकड़कर खींचता है, वे दोनों बाहर चले जाते हैं।

देवयानी हा-हा दस वार कहूगी। सौ चूहे खाकर विल्ली हज को चली है··

देवयानी को हाथ पकड़कर सावन अदर खींचता है। दोनो आकर सोफे पर वैठते हैं।

सावन : तुम्हे तैश मे आने की क्या जरूरत है · ?

देवयानी : तैश मे क्यो न आऊ ? और तुम्हारी जो सहानुभूति है वह उसके अतीत के लिए है···

सावन : लेकिन देवयानी, कुल मिलाकर मैं तुमसे खुश हू।

देवयानी किस बात से ?

साधन : तुम्हारे इतने सधे हुए व्यवहार से ।

देवयानी : क्या मतलब ?

साधन : यही कि अब जब वे लोग आये उस समय तुम मुझे कमीना कह रही थीं और हम लोग करीब-करीब झगड़ रहे थे। मैं जानना चाहता हूं कि वह कौन-सी बात है कि हम प्रदर्शन के समय सलीके से व्यवहार करते हैं।

देवयानी : (उठकर टहलती है) मैंने वैसा कुछ नहीं किया। जो नाटक मैंने मारा है वह मेरी आदत है। असल में मैं उन लोगों का मजा लेना चाहती थी।

साधन (पास पड़े ताश उठाकर फेंटने लगता है) तो मजा आया ?

देवयानी खासा। आखिर हीरो तो तुम ही थे।

साधन : मैं समझता हूं यह सुरेश का टुच्चापन था कि वह यह सब पूछने यहां आया।

देवयानी क्यों ? उसकी जगह अगर तुम होते तो क्या करते ? जिस तरह तुमने यह बतलाया है साधन कि तुम तीन लड़कियों से परास्त हो चुके हो और मैं चौथी हूं। वैसा ही किसी दिन मैं कहूं

साधन : मेरा उन सब बातों से कुछ लेना-देना नहीं…

देवयानी . (ट्रांजिस्टर का स्विच ऑन कर देती है) तुम्हें एक नुमाइशी एकठो सकुन्तला की जरूरत थी, जो दिखने में शानदार हो, जिसका शरीर सापटी हो और जिसे बोलना न आये। फिर तुम साधन पटेड़िया बनकर उसे घुमाते फिरते और सर्द भाषा में जिसे रस लेना कहते हैं वह लेते और बेचारी को निचोड़कर वापिस उसके निवास स्थान पर छोड़ आते।

साधन (ट्रांजिस्टर की आवाज और तेज हो जाती है) तब तुम्हें यह आकाशवाणी सुननी है या मेरी बात ?

देवयानी तुम्हारी बातों से मैं बोर हो चुकी हूं।

(अपने कमरे में जाती है, रेडियो पर

चाहे जो बजता रहता है। साधन गैलरी मे आ जाता है। रेडियो वैसे ही चाहे जो बोले जा रहा है।

साधन : हुआ यह है कि मैं गडबडा गया हू। मेरी समस्या औरत नही थी, प्रेम भी नही, विवाह भी नही, वासना भी नही, सिलाई की मशीन भी नही, निरोध का पैकेट भी नही, बेबी फूड भी नही'' खैर छोडो यार साधन और सुनाओ।'''

वात यह है कि यह साथ रहना, तबीयत एक कुत्ते छाप गाली निकालने को हो रही है कि, कि यह घोसलेबाजी है मुश्किल काम।

देवयानी ट्राजिस्टर की आवाज और तेज कर देती है। साधन खीजकर उसके कमरे मे जाता है।

अव इसे वद भी कर दो ना ''

देवयानी : (बद कर देती है) इतने तैश मे आकर बोलने की क्या जरूरत है। यह मेरी आजादी है'''और कोई काम है क्या तुम्हें जो मेरे कमरे मे आए'''?

साधन : (पार्टीशन की तरफ देखकर) ओह, तुम्हारा कमरा। हां, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हू (बैठ जाता है) तुम्हें जवाब देना होगा।

देवयानी : अच्छा तो नाम के बारे मे पूछ रहे हो कि हमारा जो यह विभाजित सबंध है उसे क्या नाम देंगे'''

साधन : उसे हटाओ, मैं तुम्हारे इस पार्टीशन के बारे मे कुछ पूछना चाहता हू।'''

देवयानी : मैं खुद ही बतला देती हू। यह है कार्ड बोर्ड से बना हुआ। प्लाई के लिए रुपया नही था और यह हटाया भी जा सकता है आसानी से।

साधन : मैं इसके शिल्प पक्ष के बारे मे नही पूछ रहा हू।

देवयानी : यानी भावपक्ष के बारे मे पूछ रहे हो। बात यह है साधन

कि औरत और मर्द दूध और पानी की तरह एक नही हो सकते · ।

साधन यह भावपक्ष है पार्टीशन का ?

देवयानी . श्रौर मछली का भावपक्ष क्या होता है ?

साधन मछली का कोई भावपक्ष नही होता···।

देवयानी फिर पार्टीशन का कैसे हो सकता है ?

साधन : क्योंकि इस पार्टीशन ने तुम्हारे दिमाग मे से जन्म लिया है ।

देवयानी . और मछली तुम्हारे पेट मे से जन्मी है···?

साधन (पैर पटककर) इसे कहते है जवान लडाना · ।

देवयानी . तो मैंने तुम्हें नही वुलाया । यू गो टु योर रूम एड रीड··

साधन (जाने लगता है) ठीक है चला जाता हू (जाता है । श्रौर दरवाजा टिका देता है) मुझे लगता है · मुझे पता नही क्या लग रहा है । मैं उस तरह का आदमी नही हू जैसा देवयानी मुझे समझे हुए है । वह कहती है मैंने रास्ता खोज लिया । ठीक है, मैं भी रास्ता खोजकर दिखाऊगा ।

घटी वजती है श्रौर साधन उसी तरह सोचते हुए दरवाजा खोलता है। डैडी प्रवेश करते हैं, लगता है पीये हुए हैं।

साधन · आइये डैडी !

डैडी (लड़खड़ाते हुये वैठते हैं) मैं क्लब गया था, सोचा कि तुम लोगो को देखता जाऊ।

देवयानी आवाज सुनकर पता लगाती है कि कौन है श्रौर फिर श्रपने पढ़ने मे व्यस्त हो जाती है।

साधन यह आपने अच्छा किया और मम्मी की तवीयत कैसी है ?

डैडी : उसे क्या होना है । उसने कह दिया कि श्रव देवयानी का मुह नही देखूगी । लेकिन मैं वैसा नही कर सकता। देवयानी को मैं जानता हू लेकिन तुम श्रभी उसे नही जानते। लड़की

इतनी जिद्दी है कि हो सकता है तुम्हारा जीना ही हराम कर दे···

साधन : (उदास) वह तो कर ही दिया है।

डैडी : कर दिया ना (विद्रूप से हंसते हैं) वह मुझे मालूम था साधन, क्योंकि तुम जो भी हो, सलीके के समझदार आदमी हो और देवयानी बस, यू समझदारी कि खाली देवयानी है ···ले कि न···

साधन · बात यह है डैडी, अगर उसमे यह सब है या उसका स्वभाव ही ऐसा है तो कोई क्या करेगा···

डैडी · (साधन के नजदीक आकर) मैं तरकीब बताता हू। मेरी ट्रेजेडी तुमसे भयकर है। मैंने जब शादी की तो इसकी मां, क्या नाम है उसका·· ।(याद नहीं आता)

साधना . शायद डैडी आपकी तबीयत ठीक नही है, आप आराम करें।

डैडी तबीयत खराब थी कल और केवल इसलिए खराब थी कि बगैर पीये मैं तुम लोगो से मिलने आ गया था। अब मैं वाकई श्रीयुत नरोत्तमदास गुप्त हो गया हूं। हा तो मैं क्या कह रह था···

साधन . आप मुझे कोई तरकीब बतला रहे थे···

डैडी · हा बेटे तरकीब ये है कि बीवी को खुश रखो···

साधन : यह भी कोई तरकीब हुई डैडी, और खुश रखें तो कैसे···?

डैडी · यह सब तुम्हे खोजना पडेगा। भाई, मेरी बीवी उच्च कुल की है, जमीदारो की बेटी, सो उसे जेवर पसद थे। मैं हर बार जेवर ले आता ··

साधन और वे शात हो जाती ?

डैडी : औरत कभी शात नही होती, वह चुप हो जाती थी···। उसका चुप रहना काफी है। अब ये जो देवयानी है ना मैंने इसे सस्कृत पढाने की कोशिश की, वेद-उपनिषद् ··। उसे मैंने जितने उपदेश दिये वह उतनी ही मेरी दुश्मन होती गई। अब उसका ढग विलायती है।

साधन : बात यह है डैडी, विलायती होने से फर्क नहीं पड़ता, फर्क पड़ता है अण्डरस्टैंडिंग की कमी से।

डैडी . तो बरखुरदार यह अण्डरस्टैंडिंग छत से नहीं टपकती है, साथ रहने से पैदा होती है। जब तुम दस-बारह साल साथ मे रह लोगे तो यह चीज़ पैदा हो जायेगी और फिर तुम और तुम्हारे बच्चे सब सुखी रहेंगे।

साधन · (थक जाता है) देवयानी को पुकारूं

डैडी (उठ जाता है) हटाओ भी, क्या करना है उससे मिलकर। मैं तो तुमसे मिलने आया था कि सुखी तो हो ना। आदमी शादी करता है सुखी होने के लिए।

साधन · सुखी ही हूं। (सांस छोड़ता है।)

डैडी मैं भी इसी तरह लंबी सांसें भरता था किसी ज़माने में फिर रास्ता निकाल लिया और अब देखो एकदम सुखी हूं ना ··
जाते मे लड़खड़ा जाते हैं।

साधन डैडी आप जायेंगे कैसे, आप तो खाने लड़खड़ा रहे हैं।

डैडी . बीस साल से लड़खड़ा रहा हूं बेटे ! पच्चीस साल से दीवारों से सिर फोड़ रहा हूं। पचास साल से सांसें ढो रहा हूं। और तीस साल से दफ्तर में कलम घिस रहा हूं। है किसी का ससुर इतना अनुभवी···? (हंस देते हैं।)

साधन · चलिये, मैं आपको घर तक छोड़ देता हूं। (उन्हें हाथ पकड़ कर आगे बढ़ता है)

डैडी ठीक है लेकिन हाथ पकड़कर कौन किसे सम्भालता है···। बीवी सम्भालती है ?

साधन . मुझे इतने अनुभव तो नहीं हैं डैडी लेकिन साथ अगर ना नहीं निभ पाये तो आदमी जीये कैसे ?

डैडी · देखो, जीने और मरने मे जीना ही आसान काम है और सारे पुराण उठा लो, एक भी आदमी पत्नी के कारण मरा नहीं और एक भी आदमी ऐसा नहीं जो पत्नी के कारण सुखी रहा हो। राजा रामचन्द्र को ही लो। बेचारे को

एकात के लिए कुछ वर्ष मिले थे तो वहा भी श्रीमतीजी साथ हो ली···

वाक्य टूटते हैं श्रौर साधन डैडी को लेकर सीढिया उतारता है ··देवयानी उनके जाते ही उठकर जाती है श्रौर झांककर वाहर देखती है।

देवयानी : (श्राराम से वैठकर) तो डैडी आज मजे मे हैं। कल ही अगर तरन्नुम मे आये होते तो उनकी आत्मा को वेटी के भागने का कष्ट नही होता (फिर किताव खोलती है) मैंने कही पढा है, पता नही किसने कहा था कि औरत को रभा होना चाहिए, इसी से वह पुरुप को प्लीज कर सकती है और मेरी समझ से यह किताव कहती है कि पुरुप को खुश करने करने के लिए उनका ऐसा वनना जरूरी नही लेकिन श्रपने आपको सफल वनाने के लिए उसे कुछ करना होगा। एड दिस इज नाट डिफिकल्ट। एनी वोमन कैन। सो, देवयानी कैन ··

दरवाजे पर दस्तक होती है। देवयानी वैठे-वैठे ही कहती है—'कम इन'। श्राती है रेखा स्वामिनाथन् मॉड कपड़े, सनग्लासेस, हाथ में झोला श्रौर टेपरेकार्डर।

रेखा : नमस्कार। मेरा नाम है रेखा स्वामिनाथन्···

देवयानी : नमस्कार, श्राप का भी ग्रीटिंगकार्ड वाला मामला है क्या ?

रेखा : जी नहीं, मेरे पास है प्रेस कार्ड। मैं रिपोर्टर हूं और ईवनिंग डेली के लिए आपका इंटरव्यू लेना चाहती हूं।

देवयवानी : तशरीफ रखिए। लेकिन इटरव्यू आप किस तुफैल में लेना चाहती हैं और श्राप मुझे जानती कैसे हैं ?

रेखा : मुझे मिस्टर साधन ने वतलाया कि श्राप दोनो ने साथ रहने का फैसला किया है। यह समाचार जानकर खुशी

हुई। अब तक अपने देश मे खुल्लमखुल्ला बगैर विवाह के, साथ रहना न संभव रहा है, न मुनासिब, न किसी की हिम्मत ही हुई इस तरह का कदम उठाने की···

देवयानी . साधन ने आपसे क्या कहा ?

रेखा . साधन ने आपकी बडी तारीफ की कि आप बोल्ड हैं, रेडिकल है और एडवेंचर का बडा माद्दा है आपमे।···कल शनिवार की पार्टी के लिए उन्होने इन्वाइट भी किया है।

रेखा अपना टेपरिकार्डर भी ठीक करती जाती है।

देवयानी · लेकिन आप···मुझे लगता है कभी साधन ने आपका जिक्र किया है।

रेखा : जरूर किया होगा। मैं उनकी दोस्त रही हू और मेरे आजाद खयालो के कारण साधन से ज्यादा पटी नही।··· साधन एकदम भावुक आदमी है और जर्नलिस्ट की दुनिया मे रहते मेरी अपनी महत्वाकाक्षा है। मुझे ऐसा लगा कि हाउस वाइफ बनकर मैं वह सब नही कर पाऊगी जो करना चाहती हू···। (रुककर) मेरा कॉलम आपने देखा होगा, साल्ट-सोप एंड सेटी, हिंदी मे उसका शीर्षक हो सकता है नून-तेल-लकडी।

देवयानी : इरादा बडा नेक है आपका और कॉलम शायद मैंने देखा है···

रेखा · तो मैं माइक्रोफोन लगा देती हूं।

माइक देवयानी के सामने करके स्विच ऑन करती है···

देवयानी : लेकिन रेखा जी, आप एकदम साधन से कट कैसे गईं ?

रेखा · मुझे साफ लगा कि कल से मा बनना होगा या नाश्ता पकाना होगा तो वह सब मुझसे नही होगा और जैसा कदम आपने उठाया है वैसा मैं नही उठा सकती···

देवयानी : लेकिन आप पहनावे और लुक में मुझसे ज्यादा डेशिंग

नज़र आती हैं।

रेखा · थैंक्यू वैरी मच, बट मेरे डैडी इन सब बातो को पसद नही करते कि विवाह के लिए उनके खिलाफ कोई कदम उठाऊं।

देवयानी : तो डैडो का विरोध कर सकती हैं आप, और वे जिन्दगी भर तो साथ नही देंगे ना···

रेखा : मेरी मां दिल की मरीज हैं, उन्हे इससे शॉक पहुंचेगा।

देवयानी : यानी आप जो कुछ करती हैं और करेंगी वह सब किसी और के निए होगा, अपने लिए नही ?

रेखा : नही, मैं जो कुछ भी कर रही हू केवल अपने लिए ही कर रही हू।

देवयानी : खुशी हुई आपके विचार जानकर और···सावन के वारे मे आप कुछ कहेगी ?

रेखा . मेरा खयाल है कुछ न कहू तो वेहतर है। साधन घर मे नही है क्या ?

देवयानी : उससे कोई फर्क पडता है ?···

रेखा माइक्रोफोन ठीक से लगाती है और मुस्करा देती है।

रेखा : (इंटरव्यू के स्वर मे) नमस्कार देवयानी जी, आप वधाई लीजिये कि पुरुप के साथ रहने का आप एक नया प्रयोग कर रही है। क्या वतलायेंगी कि इसकी प्रेरणा आपको कहा से मिली ?

देवयानी : वधाई के लिए धन्यवाद। मुझे सावन के साथ रहने की प्रेरणा कहीं से भी नही मिली। दूसरे शब्दो मे मैं यह कह सकती हू यह सब डूब पड़े तो हर गगा की तरह हुआ है।

रेखा : यानी आप विधिवत् विवाह करना चाहती थी ?

देवयानी : नही रेखाजी मैं समझती हू अपनी जिंदगी मे पुरुप को मस्ट समझना एक वात है और इसके साथ किसी भी रूप मे रहना दूसरी वात है।

रेखा : यानी आप यह कहना चाहती हैं कि पुरुप औरत के लिए

जरूरी है लेकिन एक साथ रहना आवश्यक नहीं।

देवयानी देखिए रेखा जी, मैं शुरू से हा खुले दिमाग की रही हूं। एक उम्र के बाद मुझे लगा कि जीवन में किसी का होना जरूरी है। तभी साधन से मुलाकात हो गई। हो सकता है कि विधिवत् शादी हो जाती, साधन बारात लेकर आता, सेहरा पढा जाता और सारे नाटक होते, लेकिन उसके लिए हमे समय नहीं मिला।

रेखा : क्या आप इससे असुरक्षित महसूस नहीं करती है?

देवयानी मेरा ख़याल है सुरक्षित होना एक तरह की कैद है और असुरक्षित रहना एक तरह की आजादी है।

रेखा तो अगर साधन किसी दिन आपको छोड दे…।

देवयानी साधन ही मुझे क्यो छोड दे, मैं भी तो साधन को छोड सकती हू।

रेखा · वैसी स्थिति मे क्या आप दुबारा…

देवयानी · यह सब पहले नहीं बतलाया जा सकता…

रेखा · क्या आप वोमन्स लिब मे भरोसा रखती है?

देवयानी . वोमन्स लिब से मेरी जानकारी है लेकिन वह आजादी भी सहन नहीं होगी शायद। हा मैं अपने देश के लिए ग्राइन्स लिब की हिमायत जरूर करती हू। दूल्हे के पीछे चलती हुई दुलहिन बुलडोजर मे बधी ऐसी टक्की न लगे जिसका बपर फूट गया हो…। वह उसकी अटैचमेंट लगे, इससे अधिक औरत की कोई दुर्गति नहीं हो सकती…।

रेखा : सेक्स के बारे मे आपके विचार कितने खुले है?

दवयानी उतने ही खुले है जितने की गुजाइश हो… (हसती है।)

रेखा . अगर सामाजिक रूप से आप पर मैरिज एक्ट के अनुसार आरोप लगाया जाय कि आप यह सब अवैध रूप से कर रही हैं तो?

देवयानी : तो मैं कह दूगी कि मैं एक प्रास्टिट्यूट हू।

रेखा : यानी?

देवयानी : कहा न, मैं एक वागँड जीवन जी रही हू।

रेखा : लेकिन यह तो अपमानजनक स्थिति है···

देवयानी . आपको अभी यह सब समझ मे नही आयेगा।

उठने लगती है

रेखा : रुकिये रुकिये, एक सवाल और है। क्या आप पिल्स का उपयोग करती हैं ?

देवयानी : उसका उपयोग पिछले तीन साल से जानती हू।

रेखा : थैंक्यू देवयानी जी। क्या आप हमारे कालम की बहनो के लिए कोई सदेश देना चाहेगी ?

देवयानी . हा।

रेखा अपना रेकार्डर समेटती है।

रेखा : जी, बोलिये···

देवयानी . वन एपल इज़ नाट इन अप, फार दि ह्वोल आव् द लाइफ टेस्ट मोर।

रेखा : (हंसती है) यानी एक वर्जित फल से क्या होगा, और चखो।

सहसा साधन आ जाता है। दोनो को देखकर चौंकता है ।

: वाह आपसे मिलकर मजा आ गया ।

साधन : अरे आप रेखा जी···?

रेखा : इसमे चौंकने की क्या बात है, जहा न पहुचे नमस्कार, वहा पहुचे पत्रकार···

जाने लगती है ।

देवयानी : यह अच्छा हुआ रेखाजी कि बातचीत बगैर बाधा के हो गई।

रेखा : हा, अगर साधन साहब पहले आ गये होते तो कामा और सेमी कोलन तो बदल जाते···

रेखा नमस्कार करके चली जाती है।

साधन दरवाजा बंद करता है ।

साधन · तुम इस लड़की से क्या बात कर रही थी ?

देवयानी : और तुम कहा थे ?

साधन : क्या मैं अपनी इच्छा से कहीं जा भी नहीं सकता ?

देवयानी : क्या मैं अपनी इच्छा से किसी से बात भी नहीं कर सकती ?...

साधन : देखो देवयानी, मैं बतला चुका हूं कि मैं उस लड़की से नफरत करता हूं। उसने मुझे धोखा दिया था।

देवयानी : तो उसे शनिवार को क्यों बुला रहे हो ?

साधन : वैसे ही, लेकिन वह भली लड़की नहीं है।

देवयानी : यह तुम्हारा वहम है साधन, मुझे वह लड़की अच्छी लगी... हां तो कहां गये थे ?

साधन : निमन्त्रण-पत्र बाटने गया था और डैडी को छोड़ने गया था। वे मेरी आखें खोल गये।

देवयानी : यानी अब तक तुम्हारी आखें बद थीं।...

साधन : वे तुम्हारे बारे में कई बातें बतला गये हैं।

देवयानी : मसलन ?

साधन : यही कि तुम खासी जिद्दी हो और अगर मैंने वैसेन नहीं रखा तो (रुक जाता है)

देवयानी : रुक क्यों गये, बोलो ना...

साधन : मैं थक गया हूं और अगर तुम नहीं बताना चाहतीं कि रेखा क्या पूछ रही थी तो मैं भी कुछ क्यों बतलाऊं।...लेकिन यह तय है कि डैडी तुम्हारी नस जानते हैं...

देवयानी : हो सकता है वे तुम्हारी नस भी जानते हों...

साधन : (गुस्से से देवयानी की तरफ देखता है) औरत एक तरह की बतगड़ होती है।

देवयानी : और आदमी एक तरह का खच्चर होता है...

देवयानी अपने कमरे में चली जाती है। साधन शर्ट के बटन खोलकर टांग देता है। देवयानी अपना दरवाजा बंद कर लेती है। साधन पीठ घुमाकर...

गैलरी मे आता है···।

साधन : लेकिन मैं हारूगा नही। मेरा बाप हमेशा हारता रहा। इसका डैडी, वह भी हारता रहा। शायद सामने वाले चटर्जी साहब हारे हुए ही नहीं, एक पिटे हुए आदमी हैं।

प्रकाश धीमा होता है। साधन अंदर लैंप शेड जलाता है···फिर गैलरी में चला जाता है।

: यह दूसरी रात है। कल से ज्यादा मनहूस, बियाबान, गदी, उमसीली और लगता है यह रात मुझे बोर करके जायेगी।

देवयानी शीशे के सामने शृंगार कर रही है। बैग मे से निकालकर शराब का एक अद्धा मेज पर रखती है। सिगरेट सुलगाती है।

: लोग हैं कि औरत की गध तक से उद्दीपन महसूस करते हैं और एक मैं हू। लेकिन मैं भी देखता हू कि यह पार्टीशन किस बात की निशानी है। (कमरे मे जाता है, धीरे से दरवाजा बजाता है) देवयानी, देवयानी···।

देवयानी दरवाजा खोलती है···

देवयानी · (एकदम खुश दिखाई देती है) आओ साधन, आओ ना··· (साधन के कंधे पर सिर रख देती है।)

साधन : देवयानी! (आश्चर्य से उसे देखता है)

देवयानी : आइये, बैठिये ना, इस बार बहुत दिनो मे आये···

साधन : (बैठता है) भई तुम तो एक्टिंग मार रही हो, जरा सीधे से बात करो···।

देवयानी : आप मेरे कमरे मे आये है और मैं आपकी हू। इसमे अभिनय कहा है साधन बाबू।

साधन बोतल की तरफ देखता है। देवयानी बोतल उसके हाथ में दे देती है।

: पीयेंगे···?

साधन : पी सकता हूं।
देवयानी : इसके तीस रुपये लगेंगे···मंजूर है?
साधन : ठीक है, मंजूर है लेकिन यह सब क्या है?
देवयानी : समझौते से नहीं रह सकते तो सौदे से रहो। लाओ।
साधन : मेरे पास रुपये नहीं हैं।
देवयानी : सो कोई बात नहीं, पीना कोई अच्छी बात भी नहीं···
साधन : लेकिन बुरी बात भी नहीं है।
देवयानी : आप ठीक फरमा रहे हैं··· (उठकर सलाम करती है।)
. कोई गज़ल सुनेंगे?
साधन · मज़ा आ जायेगा देवयानी, तब तो हम लोग सेलिब्रेट कर सकेंगे सारी रात।

देवयानी मुजरे के अंदाज में फर्श पर बैठ जाती है।

देवयानी · सारी रात नहीं हजूर आपको एक दो घंटे काफी होंगे और मेरे और भी चाहने वाले है···
साधन : चाहने वाले? तुम क्या बोल रही हो देवयानी···?
देवयानी : बैठकर सुनो तो। यहां की तहजीब कुछ और है।
(तरन्नुम में)

मैखान-ए-हस्ती मे मैकश वही मैकश है,
सभले तो बहक जाये बहके तो संभल जाये···

साधन : (बेहद खुश) वाह मजा आ गया देवयानी···
देवयानी . तो यही तो वह मंत्र है जिसके लिए मैं सवेरे कह रही थी कि मैंने तरीका खोज लिया है।

उठकर साधन को हल्के से छूती है और दीवान पर बैठ जाती है।

साधन : मैं मतलब नही समझा।
देवयानी : मतलब साफ है कि अगर तुम मुझसे कोई फालतू अपेक्षा न करो तो रास्ता रुकेगा नही···

साधन उठकर दीवान पर उसके पास आ

बैठाता है।

: इतना ज्यादा मत छूओ। और देखो समय क्या हुआ है?

साधन : करीब साढे नौ बजे होंगे···।

देवयानी : यानी साढे दस बजे चले जाओगे···।

साधन : क्यों···?

देवयानी : उससे ज्यादा नहीं। (हंसती है)

साधन उसे बाहों मे भर लेता है।

(साधन के हाथों से छूटकर) पचास रुपये लगेंगे···।

साधन : (आश्चर्य चकित) क्या, क्या कहा···

देवयानी : फिर से बोल देती हू। मेरे साथ सोने के पचास रुपये देने होंगे।

साधन : लेकिन।

देवयानी : यह सब तुम्ही ने बतलाया था साधन कि खाना-पीना होटल मे मिल सकता है और सेक्स भी वैसे ही खरीदने की चीज है···

साधन : लेकिन मैं अपने घर मे हू और तुम मेरी बीवी हो···।

देवयानी : नहीं। वह कल थे हम। वह प्रयोग बुरी तरह असफल रहा। मैंने नोचे-खसोटे जाने के लिए जन्म नही लिया है।

साधन : लेकिन क्या तुम जानती हो कि इस तरह के प्रयोग करने मे तुम कैसी लग रही हो? ये तुम्हारा मेकप, यह सेंट की तेज गंध, ये मुजरे के अंदाज मे जमीन पर बैठना, यह गजल और यह सौदेबाजी···

देवयानी : ऐसा लग रहा होगा जैसे तुम बनारस की दालमडी मे हो, जैसे बंबई की फारस रोड पर हो, जैसे कलकत्ता की सोनागाछी मे हो, जैसे दिल्ली की···

साधन : (जोर से) बस, चुप करो···। मैं यह सब बर्दाश्त नही कर सकता। क्या कोई पति यह कल्पना भी कर सकता है कि उसकी पत्नी तवायफ लगे?

देवयानी : लेकिन मन के अन्दर वही कल्पना होती है कि वैसी ही

छेड़छाड, वैसा ही बिक जाने वाला समर्पण प्राप्त हो। क्या मैं गलत हूं···

साधन : एकदम गलत हो (कमरे में पागल की तरह टहलता है) आई हेट यू देवयानी, आई हेट यू। मैं तुम्हारी इन सब हरकतो से नफरत करता हू।

देवयानी . भूल गये होओगे। यही सब कल भी कहा था तुमने। कल मैं केवल पत्नी थी, तुम उसे स्वीकार नही कर सके, आज मैं पास हू तो तुम्हारे संस्कार जाग उठे हैं। कल तक हम जब होटल मे मिलते थे, मैं तुम्हारी रखैल थी—कीप, और वह भी तुमसे बर्दास्त नही हुआ।

साधन : आखिर तुम चाहती क्या हो ?···

देवयानी : मेरे चाहने से क्या होता है, लेकिन तुम्हे हकीकत बतलाना जरूरी है।

साधन : तुम चुप रहो, चुप रहो···।

देवयानी : चिल्लाना ही है तो अपने कमरे मे जा सकते हो। यहां शोर मचाने की जरूरत नही है।

साधन : हा चला जाऊगा···(साधन अपने आपको सभाल नहीं पाता) हरामजादी, नालायक बत्तमीज़···

अपने कमरे मे आता है, इस-उस चीज को उठाता है, फिर देखता है कि देवयानी ने दरवाजा बंद कर लिया है। निढाल-सा गैलरी मे आता है।

: यह भी कोई साथ रहना हुआ कि आदमी को कभी बलात्कार करना पडे, कभी ग्राहक की तरह अपने ही घर मे खरीदारी करनी पडे। लानत है इसे···

देवयानी अपने कमरे का बल्ब बुझाती है और दीवार पर सिर टिकाकर लेट जाती है। वह किताब खोलती है फिर उसे उठाकर फेंक देती है।

: ऐसा लग रहा है कि हम चल नही रहे हैं हम अपने आपको ढो रहे है। कोई अगर हमारे कमरे के बाहर दूरबीन लगा ले और हमारे साथ रहने को देखे तो या तो वह सिर पीट लेगा या फिर बोर हो जायेगा···

अंदर जाकर जैसे देवयानी बैठा है। उसके विपरीत मुंह करके साधन अपने कमरे मे बैठ जाता है जैसे सो रहा हो। प्रकाश धीमा होता है। फिर धीरे-धीरे प्रकाश लौटता है जैसे सुबह हो रही है···।

देवयानी उसी मुद्रा मे बैठे-बैठे सो रही है, साधन जैसा गिरा था वैसा ही गिरा हुआ है।

राजाराम : (हाथ में दो मग लिये आता है) वाह ! अब तक दोनो सो रहे हैं। साहब पूरब, बीबी पच्छम···। इनकी है चाय और इनकी है कॉफी···(दोनों के पास एक-एक मग रख देता है) बाबूजी, बाबूजी···।

साधन आंखें खोलता है और चौंककर उठ बैठता है।

राजाराम : बाबू चाय बन गया···बीबीजी कॉफी बन गया···।

साधन इधर उठता है, देवयानी उधर उठती है।

देवयानी : (मग उठाकर बात करती हुई साधन के पास आती है) अरे, तुम क्या ठीक से बिस्तर पर भी नही सोये···।

साधन के पास ही बैठ जाती है।

साधन : मुझे कुछ पता नही।

देवयानी : और इसी तरह सोच-सोचकर दिमाग खराब करते रहे तो हो गया।

साधन : लेकिन देवयानी, क्या कोई और तरीका नही है···

देवयानी : है कैसे नही—उसके वारे मे सोच लूगी लेकिन भले आदमी, आज हजारो काम करने हैं। भई पार्टी का कोई इतजाम हमने नही किया है।

साधन : (उठ खड़ा होता है) देन आई मस्ट गेट अप…।

देवयानी : और वह छत तो ठीक है ना, लोग इस कमरे मे आयेंगे और हम उन्हे तिवारिनजी की छत पर भेजते जायेंगे…। छत खासी वडी है…कुर्सी और मेज का इतजाम तुम कर देना…।

साधन : वाकी चीजें खरीद ही ली है। और इस कमरे का …

देवयानी : यह कमरा मैं डेकोरेट करूगी…

साधन : लेकिन यह पार्टीशन…

देवयानी पार्टीशन पार्टीशन की जगह रहेगा… लेकिन यह मछली:…

साधन : मछली मछली की जगह रहेगी…

देवयानी : तो मतलव यह हुआ दोस्त कि आज शाम की पार्टी के द्वारा हमे भीड़ की मजूरी मिल जायेगी!

साधन देवयानी को छूने को होता है कि हाथ हटा लेता है।

: (खुद उसका हाथ पकड़ लेती है) अव परेशान होने की जरूरत नही। मुझे छूने के तुम्हे दाम नही देने होंगे। लेकिन अगर आज का तरीका भी फेल हो गया दोस्त, तो…।

साधन : तो…तो…पहले शाम की सोचो। मेरा खयाल है पचास से कम निमत्रण नही भेजे है…

सायरन की आवाज सुनाई देती है।

देवयानी : यानी नौ वज रहा है। मैं पहले तैयार होती हू। वाकी वाद मे देखा जायेगा।

तैयार होने की भागदौड़। साधन वाथरूम मे घुसता है। देवयानी हाथ में मग लिए जैसे की तैसे खड़ी जड़ हो जाती है।

॥ अंतराल ॥



वही आफिस छूटने के बाद शाम का समय। साधन लौट आया है। राजाराम को उसने दफ्तर से लौटते ही काम मे लगा लिया है। मच पर जब शाम का प्रकाश फैलता है तो साधन पसीना पोछता पाया जाता है। राजाराम छत की तरफ से हाथ झाड़ता हुआ आता है। साधन कुछ सोचने मे लगा हुआ है। कमरे से पार्टीशन हटा दिया गया है।

साधन : (सोचते-सोचते) राजाराम, इस दीवान को सीधा करना। और जरा उस सोफे को भी उधर हटाना···

राजाराम : (ठीक करता है) ठीक है ना बाबूजी। और हम तो कहना भूल ही गये, दोपहर मे आया था एक आदमी, वह पचास गिलासें और प्लेटें दे गया है।

साधन कहा रखा है उन्हे···?

राजाराम : छत पर।

साधन : सबको धोकर पोछा है···?

राजाराम : सब चक करके रख दिया है।

साधन . और वह पार्टीशन छत पर ठीक से रख दिया है ना···

राजाराम : उसे सभाल के रख दिया है। और बाबूजी उसे फिर से यहा फिट करना होगा क्या···?

साधन : पता नही। फिर से फिट करना होगा या और कुछ·· और भले आदमी (ग्लासजार की तरफ देखकर) तुझसे कहा ना इस मछली को भी यहा से हटा दे। कौन झगडा मोल ले···

राजाराम मछली का जार उठाकर किचन मे ले जाता है। अन्दर से कुछ टूटने की आवाज आती है।

: क्या तोडा वे ! राजाराम, ओ राजाराम, क्या गिराया···?

राजाराम दौड़ा आता है और दौड़कर वापिस अंदर घुसता है।

: फिर दोडकर चला गया। क्या तोडा है राजाराम···

राजाराम : (दौड़कर आता है) वो बाबूजी मछली टूट गया···

साधन : बत्तमीज़ कही का, तुझे कहा था न कि सभालकर ले जाना···राजाराम, राजाराम···!

राजाराम फिर दौड़कर अंदर जाता है और एक गिलास लेकर आता है तब तक साधन उसे दो-तीन बार पुकार

चुकता है।

राजाराम : पर साहब मछली जिंदा है मैंने जल्दी से उठाकर उसे इसके अन्दर रख दिया है।

सावन : (गिलास के अंदर झांककर) तो इसे जरा संभालकर रखना और ले इस पैकेट मे से यह पाउडर इसके अन्दर डाल दे···

राजाराम गिलास और पैकेट लेकर अन्दर चला जाता है···

: (सोफे की धूल साफ करता हुआ) ऐसे उस नये गिलास मे मछली बचेगी थोडे ही। देवयानी के लिए यह घर तालाब नही है, हमारा सबध गिलासजार नही है और किसी नये गिलास मे उसे रखने की मैं हिमाकत नहीं कर सकता। लेकिन मैं उस शर्त को खोजना चाहता था शब्दों मे, जिसने हमे बाधा है। मैं नही खोज सका उसे। मैं इस साथ रहने को एक नाम देना चाहता था वह भी नही हो सका।

राजाराम छत पर से कुछ उठाकर लाता है और किचन मे चला जाता है।

: मेरे अपने घर मे आज समारोह है और मुझे लग रहा है यहा मैं मेहमान हू। यह हो सकता था कि आज हमे साथ रहते पूरे तीन दिन हो जाते और देवयानी और मैं कधे से कधा लगाकर खडे होते···।

राजाराम आता है और साधन के उसकी तरफ देखने का इन्तजार करता है।

राजाराम : (साधन से आख मिलते ही) बाबूजी वो बोतलें भी मेज पर रख दी हैं और जो बरफ आपने मंगवाया था···

सावन : (कमरे में आकर सोफे पर बैठ जाता है) तो सारा इन्तजाम कर दिया ?

राजाराम : जी बाबू, सब चीजें रख दी हैं।

साधन : (उसे जाते देखकर) राजाराम !

वह रुक जाता है।

राजाराम : जी बाबू!

साधन . तेरी शादी हो गई राजाराम ?

राजाराम : (शरमा कर) जी, जी हो गई बाबू।

साधन . कहा रहती है वह·· ?

राजाराम . नौकरी थी नही छह महीने को, तो वह हमारे एक पडोसी के घर मे जा बैठी। हम लोगो मे यह सब होता है बाबू।

साधन . तो तुम अकेले हो ··?

राजाराम : नही बाबू, भाई पिछले साल मर गया हैजे मे। भाभी का क्या करता, मैंने उसे चादर उढा दी है।···

साधन उससे अलग हटकर कुछ सोचता है।

साधन : तो तुम लोगो मे कोई समस्या नही है, आपसी मन-मुटाव···?

राजाराम अरे बाबू पेट फुरसत ही नही लेने देता, कहा जायेंगे मन-मुटाव करके। बस यू समझो कि औरत-मरद दोनो अपना-अपना ठाव खोज लेते हैं।

साधन गैलरी की तरफ जाता है, बाहर झांकता है। राजाराम पीछे हटता-हटता किचन मे चला जाता है।

साधन : और तो और, राजाराम के पास भी साथ रहने का एक दर्शन है। किसी का किसी के घर मे बैठ जाना या किसी का किसी को चादर उढा देना इतना आसान है जैसे बोतल का ढक्कन खोलकर उसमे कार्क लगा दिया हो··· बहरहाल···

कालबेल बजती है। साधन दरवाजे की तरफ बढता है, दरवाजा खोलता है।

: नमस्कार तिवारिनजी, नमस्कार।

तिवारिनजी आती हैं। उनके हाथ मे
लाल फीते से बंधा पैकेट है।

तिवारिनजी   नमस्कार बेटे, जीते रहो, दूधो नहाओ पूतो फलो···और ये लो।

साधन : ये क्या चीज है ? (पैकेट लेता है)

तिवारिनजी : भई बात ये हैं कि तिवारीजी बोले कि जवान लोगो की पार्टी है तो हम बूढे वहा जाके क्या करेंगे। इस वास्ते तुम लोगो की पार्टी शुरू हो उससे पहले ही आ गई। ये छोटी-सी भेंट है तुम दोनो के वास्ते।

सावन . लेकिन आप लोग आइये न पार्टी मे। मजा रहेगा···।

तिवारिनजी : अरे नही भइये ! तुम खेलो, खुश रहो—। वो छत पे कोई तकलीफ तो नही ?

सावन : वो तो इतनी बडी छत है तिवारिनजी, कि सौ लोग बैठ सकें···

तिवारिनजी : सब भगवान की दया है बेटे और क्या बहू नही आई अब तक ?

साधन . आती ही होगी तिवारिनजी। उसे कुछ खरीदना था।

तिवारिनजी : चलो कोई बात नही, पर बेटे जरा प्यार-दुलार से रहा करो।

सावन : वैसे तो कोई बात नही तिवारिनजी।

तिवारिनजी : तुमने सरकस देखा है ?

साधन : जी देखा है।

तिवारिनजी : उसमे एक रस्सी होती है और रस्सी के ऊपर नट चलता है। बस, गिरस्ती उसी रस्सी के ऊपर चलना है। जितने जमा-जमा के पाव रखोगे पार लग जाओगे···।

सावन : ये बडा मुश्किल काम है तिवारिनजी···। मैं रस्सी पर चलता रहूं और वह···।

तिवारिनजी : इसी वास्ते तो ये भेंट दे रही हूं (साधन डिब्बा खोलता है) और प्यार ऊपर से थोड़े ही टपकता है। अब एक छत के

नीचे रहे तो प्यार हो ही जाता है।

साधन डिब्बे में से गुड़िया निकालता है।

साधन : (हसकर) आपने यह भेंट देने मे वडी जल्दी की है, तिवारिनजी•• हम लोग अगर आपस मे झगड़ते रहे हों तो•••।

तिवारिनजी : (साधन के गाल पर थपकी देकर) उससे कुछ नही होता। अब साल भर तक तिवारी जी से हमारा अबोला रहा। एक सवद मैं वोलू तो थू और एक सवद वह बोलें तो थू, लेकिन वच्चे पैदा होना वद थोडे ही हुए।

हसती हुई चल देती है। साधन कमरे में हसता रह जाता है। गुड़िया हाथ मे लिये गैलरी मे आ जाता है।

साधन : (तिवारिनजी के अदाज मे) एक सवद वह बोले तो थू, एक सवद मैं वोलू तो थू, अरे उससे (हसता है) उनमे घर मे आलू उवलने वद थोडे ही होते हैं, उस कारण से हम दात साफ करना वद थोडे ही करते हैं•••

हसता हुआ कमरे में वापिस आता है और गुडिया को दीवान पर रख देता है। अपने आप हसता है तभी देवयानी आ जाती है। हाथ मे कई सारे गैस वाले गुब्वारे और पेपरमेशी की कई चीजें हैं•••वेहद लदी हुई आती है।

देवयानी . क्या वात है, खुद ही हस रहे हो•••

साधन : मै वडी देर से लौट आया हू और सारे इतजाम करवाये• •।

देवयानी : सो तो दिखाई दे ही रहा है। पार्टीशन हटाने मे कुछ समय तो लगा ही होगा (मुआयना करती हुई) और मछली को

तालाब मे छोड आये क्या···?

राजाराम सामने आ जाता है।

सावन : उसके बारे मे राजाराम से पूछो···

राजाराम . बात ये है बीबीजी कि बाबू ने उसको अंदर ले जाकर रखने को कहा तो वो हाथ से छूटकर टूट गया पर हमने मछली को गिलास मे रख दिया है। वो अब भी जिंदा है···।

देवयानी : बडी काबिल मछली है। घर टूट गया है तब भी जिंदा है···।

राजाराम : वो तो हमने नया घर बना दिया ना उसका और···

सावन · अच्छा तुम जाओ और अपना काम देखो राजाराम···

राजाराम मन मसोसकर चला जाता है। देवयानी कोच पर बैठ जाती है।

देवयानी : मै तो एकदम थक गई हूं।

सावन : (एक झालर उठाकर उसे बांधने की सोचता है) तो भई इतना सब लाने की क्या जरूरत थी! अब अगर यह डेकोरेशन न भी हो तो क्या···।

देवयानी . तो मत करो डेकोरेशन! तुम सावन, एकदम नाशुकरे हो और मैंनरलैस भी। अब कोई ढेर सारा काम करके लौटा है और तुम हो कि उसकी खाल खींचने लगे। और डेकोरेशन की जरूरत कैसे नही है···?

सावन : (देवयानी के सामने जाकर) आयम सारी देवू, आई डोंट मीन इट। मैं अब तुम्हे बीच मे नही टोकूगा। अच्छा बोलो, यह झालर वहा से यहा तक लगा दें और ये गुब्बारे···

देवयानी : (उबासी लेकर) मेरा उत्साह खत्म हो गया···।

सावन : क्या मेरे एक वाक्य बोलने से ?

देवयानी : नही। मैं स्कूटर मे लौट रही थी तो रास्ते मे ही मेरा जी चाहने लगा कि गुब्बारो को हवा मे उड जाने दू···

सावन : तुम्हारी तबियत ठीक नही···।

देवयानी · (उठकर झालर लगाने की सोचती है) तबियत को क्या

होगा ! लेकिन रास्ते मे एक मिनट को साधन मुझे ऐसा लगा कि हम अगर दोस्त ही बने रहते तो गरमी अधिक रहती। मुझे डर लगता है कि सारा उत्साह वर्फ की तरह किसी दिन पिघल न जाये···। एक मिनट को मैंने कल्पना की कि मैं गर्भवती हू। अस्पताल जा रही हू। झूले मे वच्चा सोया है, मैं वेवी सिटिंग कर रही हू, वाटल मे निपल लगा रही हू···

साधन : लेकिन देवू यह तो सुखद कल्पना है···।

देवयानी सुखद नही भयावह है (जाकर गुड़िया उठाती है) मा वनने को तुम लोग जो नारी की पूर्णता कहते हो ना वह शायद इसलिए कि उससे वह पूरी तरह फस सकती है। फिर कोई रास्ता नही रहता···और यह गुडिया ?

साधन . तिवारिनजी भेंट मे दे गई हैं और आशीर्वाद भी वरसा गई हैं।

देवयानी : किसने यह नियम वनाया था कि विवाह और सभोग केवल पुत्र-प्राप्ति के लिए किये जाते हैं। उससे क्या होता है···

साधन वश चलता है।

देवयानी · किसका वश ?

साधन · दो लोगो का। हमारे मामले मे हम दोनो का··

देवयानी . लेकिन साधन मैं एक कविता लिखू तो उससे मेरा वश चलेगा या कोई मेरे विचारो से प्रभावित होकर मुझ जैसी वनना चाहे तो वह मेरा वश होगा, लेकिन मेरे शरीर मे से कोई निकले वह कैसे मेरा वश होगा ?

साधन · वैसे तुम्हारे नाम पर एक कल्ट चल सकता है—देवयानी सप्रदाय···।

देवयानी : (चेहरे पर खुशी लाकर) तुम दीक्षित होना चाहोगे ?

साधन : नही, मेरा अपना कल्ट है, साधन सम्प्रदाय···।

दोनों हंस देते हैं और उस झालर को

इस सिरे से उस सिरे तक बांध देते हैं।

देवयानी : अगर वह निशि नायर मुझसे मिल लेती ना। वही तुम्हारी तीसरी प्रेमिका, तो वह मरती नही।

साधन : लेकिन मुझे प्राप्त करना उसका पहला और आखिरी लक्ष्य था और परिवार के लोगो ने जब वैसा नही होने दिया तो•••।

देवयानी : परिवार वालो से और मरने वाली निशि से मेरा कुछ लेना-देना नही, दोनों ही मूर्ख हैं; लेकिन आत्महत्या करने और मोहब्बत मे झुलस जाने से चरित्रहीन हो जाना या किसी और को खोज लेना बेहतर है।

साधन : यानी अगर हम साथ रहने की स्थिति को पैदा नही कर सकते तो…?

देवयानी : आत्महत्या तो मैं हरगिज नही करती। वैसे साधन क्या किसी भी पुरुप या औरत के लिए केवल एक-एक सेट ही जरूरी है?

साधन : एक-एक सेट, यानी ?

देवयानी : यानी केवल इकठो विवाह ही होना चाहिए।

साधन : मैं जितना समझता हू उसके अनुसार जरूरी है…

देवयानी : (गुब्बारे इधर-उधर करती है) बस छोटी पड़ी तो हमने डबल डेकर बना ली कि आज के जमाने के लिए वह जरूरी है। मकान छोटा पडा तो हम स्काई स्क्रेपर्स बनाने लगे लेकिन सबधो के मामले मे हम इजाफा नही चाहते। साइंस के जमाने मे जहा आदमी बैठे-बैठे ही बगैर किसी कारण के भी ऊब सकता है हम एक से अधिक पति या पत्नी की कल्पना नही कर सकते ‥। क्यो ?

साधन स्तब्ध देवयानी को देखता रहता है।

: लेकिन तुम तो खुश दिखाई दे रहे हो; क्योकि तुमने पार्टीशन हटा दिया।

साधन : वह मैंने केवल पार्टी के लिए हटाया है कि उससे कमरा

वड़ा लगेगा और कुछ देर के लिए यहा बैठें तो उससे सुविधा होगी।

देवयानी : लेकिन क्या तुम समझते हो कि पार्टीशन हटा दिया तो वह हट गया ?

साधन : तुम चाहो तो कह सकती हो कि वह तुम्हारी आत्मा मे स्थापित हो गया है।

देवयानी : यह सच है साधन, उसे हटाकर तुमने अच्छा नही किया।

साधन : तो ठीक है, मैं उसे लाकर वापिस लगा देता हू। राजाराम ··

देवयानी : रुको भी, उसे लाने की जरूरत नहीं है ··

साधन : नही, मैं लाकर ही रहूगा और तुम्हे उसे मजूर करना होगा ··।

देवयानी : मैंने कह दिया ना नही

राजाराम डिश साफ करता आता है।

साधन : राजाराम, वह पार्टीशन वापिस ले आओ···

देवयानी · नही राजाराम, वह वापिस मत लाओ।

साधन : ले आओ राजाराम ! उस लडकी की दीवान से इतना मोह है तो उसे ही लो राजाराम···

देवयानी · राजाराम, वापिस लौट जाओ···उसे मत लाओ···

राजाराम चक्कर में पड़ जाता है।

साधन · राजाराम, तुम मेरे नौकर हो। उसे वापिस लेकर आओ···।

देवयानी : नही राजाराम···और साधन, तुम निहायत टची आदमी हो···।

साधन . और तुम निहायत फसी औरत हो·· ।

देवयानी तुममे समझ नही, शऊर नही है।

साधन और तुममे यह सब है और तुम उस सबका अचार डालो···।

देवयानी · (राजाराम की तरफ देखकर) अरे तुम गधे की तरह खडे क्यो हो·· जाकर पार्टीशन वापिस क्यो नही लाते ! ···

साधन : पार्टीशन वापिस आकर रहेगा।

देवयानी : अच्छा तुम उसे मगवाकर देखो, मैं उसमे आग लगा दूगी···

राजाराम जाते-जाते रुक जाता है और वापिस किचन मे चला जाता है ।

साधन : (कोच पर बैठ जाता है) गुस्सा तो जैसे नाक पर रखा है। कुछ बोलो नही कि तुनक उठती हो·· ।

देवयानी : क्या तुम चुप हो सकते हो साधन···?

साधन : (पैर पटककर रह जाता है) चुप ही है साहब, बोलकर जायेंगे कहा ··

उठता है और छत की तरफ चला जाता है। देवयानी गुब्बारों का झुड उठाकर कमरे मे घूमती है। उसे जगह ही नहीं मिलती कि वह उसे कहा बांध दे ।

देवयानी : यह आखिर क्यो होता है कि साधन के सामने आते ही मुझे गुस्सा आ जाता है। इस कमरे मे आते ही कैद का अनुभव होने लगता है। कल तक इसी साधन की मैं माला जपती रहती थी और मिलते ही इससे ऐसी लिपटती थी कि साधन को अपने आपसे मुझे अलग करना पडता था। (गुब्बारो को जहां के तहां बाध देती है) इस पार्टी मे मुझे क्या करना चाहिए ? (पॉज) जैसी हू वैसी ही रहू या ठीक होने का और साधन से अपने सबधो के मधुर होने का ढोग करू ? (सामने की तरफ देखती है) वह रहा, वह रहा···मैने कहा था कि वह पकड मे आ जायेगा···वह वहा है···(त्रस्त होकर नेपथ्य मे देखती जाती है और जैसे किसी चीज को पकड़ने की कोशिश करती है)···। वह कभी न कभी पकड मे जरूर आ जायेगा···।

बाहर से डैडी आते हैं, थके हुए, परेशान। वे बगैर दरवाजा बजाये अदर आ जाते हैं और जरा देर को देखते रह जाते हैं कि देवयानी क्या खोज रही है और

किस चीज को पकड़ रही है। फिर उसके पास जाते हैं।

डैडी . देवयानी ! ये तुम किस चीज को पकडने की कोशिश कर रही हो ?

देवयानी : (स्वस्थ होने की कोशिश करती है)ओह डैडी आप…'

दोनो बैठते है । देवयानी पसीना पोछती है ।

डैडी : क्या खोज रही थी·· ?

देवयानी : अरे कुछ नही डैडी । यू समझ लीजिए कि कोई सूत्र खोज रही थी।

डैडी : सूत्र कैसा ?

देवयानी : सूत्र नही डैडी, एक बिंदु खोज रही थी…।

डैडी : बिंदु ?

देवयानी : हा डैडी, इस जिंदगी का, इस गोरखधधे का, इस…

डैडी . (हसकर) ओ हो·· बिंदु। खोजो, खोजो बेटे। हजारो बरसो से लोग इसी को खोज रहे हैं •

देवयानी : वो, मम्मी कैसी है…?

डैडी क्या बताऊ बेटे, जैसे तुम अपनी बात पर अडी हो वैसे ही वह भी अपनी बात पर जमी है…

देवयानी क्या मतलब ? और आप तो जानते ही हैं डैडी कि आप लोगो के सामने सिवाय इस बात के कोई चारा नही है कि मेरे फैसले को मान ले ।

डैडी देखो बेटे, मेरे तो मानने न मानने का सवाल ही नही उठता और सच पूछो तो मुझे तुम्हारा यह कदम अच्छा भी लगा, लेकिन मैं जिस घर मे रह रहा हू उसके खिलाफ भी तो नही जा सकता·· ।

देवयानी तो आप क्या चाहते है ?

डैडी मैं क्या चाहता हू और क्या चाहूगा । अब कल ही मैंने जिक्र किया कि देवयानी और साधन पार्टी दे रहे है तो

मुझे खबरदार कर दिया गया कि मैं पार्टी मे न आऊं। मेरी मुश्किल यह है कि वह किसी से मुझे यह नही कहने देती कि तुमने शादी कर ली है। आज सवेरे तो फजीहत ही हो गई।

देवयानी : कैसी फजीहत डैडी…?

डैडी : वात ये है वेटे, तेरा छोटा चाचा आज सवेरे मिलने आया था तो मम्मी वैठी रो रही थी। उसके पूछने पर जो उसने जवाव दिया… (डैडी गंभीर हो जाते हैं) कोई सिरफिरा भी ऐसा नही करेगा…।

देवयानी · क्या जवाव दिया ?

डैडी : उसने कहा कि देवयानी पिकनिक मे शिमला गई और कल लौटते मे उसकी वस गड्ढे मे गिर गई। उसने यह भी कहा कि देवयानी मर चुकी होगी। मुझे कहती है कि आज शाम को मैं लौटकर वताऊं कि देवयानी वाकई मर गई है और उसकी लाश भी नही मिल सकती…।

देवयानी · (हंसकर) तो यह तो वढिया वात है। अगर आप लोग मुझसे इस तरह मुक्त हो सकते हैं तो यही सही। मुझे आप लोगो की नज़र से मर जाना मंजूर है डैडी… (उठ खड़ी होती है) आप किसी भावुकता मे न पड़िए डैडी…।

डैडी : नही वेटे। मैं तुम्हारी मम्मी की तरह नही कर पाऊंगा… और एक वात कहना चाहता था कि कभी तकलीफ मत उठाना…।

देवयानी तकलीफ किस वात की डैडी ?

डैटी : मैं नही जानता कि तुम दोनों की कैसे पट रही है। अगर कोई परेशानी हो तो तुम मेरे पास आ जाना…

देवयानी : यानी फिर आप एनाउन्स करेंगे कि मरी हुई देवयानी लौट आई…?

डैडी : (उठ खड़े होते हैं) तुम मेरे लिए वही देवयानी हो, तुमने

जो कुछ भी किया अपने अनुसार किया है।

देवयानी पेपरमेशी का एक फानूस उठाकर कहीं न कहीं टांगने की कोशिश करने लगती है। डैडी धीरे-धीरे जाने लगते हैं।

डैडी . पता नही मैं घर जाकर क्या कहूगा। वहा अगर वाकई उसने दस-बारह रोनेवालो को इकट्ठा कर लिया होगा तो…

देवयानी . अब आप सीधे घर ही जाइए और कह दीजिए कि देवयानी नही रही और कोई अगर मिल ही गया जो मुझे पहचान लेगा तो मैं कह दूगी कि मैं गुप्त जी की बेटी देवयानी नही हू…। आप लोग मुझे मृत घोषित करें उससे पहले मैं… (साधन आ जाता है और देवयानी का वाक्य टूट जाता है।)

साधन : अरे डैडी आप, कब आए, आइए ना…।

डैडी रुकते हैं, साधन आगे बढता है।

देवयानी : रुको साधन, वहा घर पर मम्मी मर चुकी हैं…

साधन . डैडी…!

देवयानी · ये डैडी नही हैं साधन, उनकी लाश है। इसे जाने दो…

साधन देवयानी के पास आता है और डैडी दरवाजे से बाहर निकल आते हैं।

साधन : क्या मामला है देवयानी ?

देवयानी : यह फानूस कहा लगा दिया जाये ?…

साधन . यह…। लेकिन देवयानी… (आश्चर्य से हाथ हिलाता है) मुझे कुछ बतलाओ तो…।

देवयानी : वे यह घोषणा कर रहे है कि देवयानी एक एक्सीडेंट मे मर गई है और बदले मे मैंने एक घोषणा कर दी कि वे लोग मर गये है। ओवर। (रुककर) बतलाओ यह फानूस

कहां लगाना है…?

साधन : (उसके हाथ से फानूस अपने हाथ में ले लेता है) यह यहां कमरे के बीचोबीच अच्छा लगेगा…।

देवयानी : लेकिन इसे लगाना जरूरी है क्या…?

साधन : भई अब तुमने ही कहा कि डेकोरेशन…और मैं समझता हूं देवयानी तुम्हे कपडे भी तो बदलने है।

देवयानी : (ताली बजाकर) अरे हां, मुझे दुलहिन नजर आना है…।

साधन : कोई जरूरी नही है लेकिन…

देवयानी : लेकिन वैसा हो जाये तो अच्छा ही है—(थककर बैठ जाती है) डैडी ने सब गडबड कर दिया। पता है साधन, मुझे वह बिंदु पकड़ मे आ रहा था।

साधन : कौन-सा बिंदु?

देवयानी : वही यार, जिसे हम साथ रहने के क्षण से ढूढ रहे है कि वह स्टार्टिंग या डायवर्टिंग पाइंट कौन-सा है जहा से हम एक हुए…।

साधन : अब बहुत हो गया देवयानी। उस बिंदु को खोजने की हमे कोई जरूरत नही रह गई। हम एक है, पति-पत्नी हैं, तुम मेरी हो और तमामशुद।

देवयानी : यानी इस बिंदु से हमे मृत्यु तक एक साथ जीना है। लेकिन मैं अपने आपको कतई काबिल नही मानती…।

साधन : देखो देवयानी (उसके पास जाकर खड़ा हो जाता है) मै एक बात अच्छी तरह जानता हू कि तुम चाहो तो परफेक्ट हाउस वाइफ बन सकती हो…।

देवयानी : (हंसकर, अभिनय करती है) अरे सुनो जी, सोफा बडा गंदा हो गया है, जरा थोडा-सा विम ले आओ और बाल्टी मे पानी, तो धो डालती हू इसे…(साधन कुछ समझ नहीं पाता) और हाय राम…मैंने तो सब्जी अलग काटनी है, चाय बनानी है, बात ये है भेणजी, हमारी सास जरा बीमार

चल रही होगी, उनके पाँवो पे पता नही किस चीज का तेल मसलना पडे। (साड़ी का पल्ला वदल लेती है और उसीमे नाक पोंछती है।) और सुनो जी, मुन्ने का जाघिया फट गया है। इतवार को चादनी चौक जाके दो ले आना, वो अशोक की मम्मी ले के आई है। सस्ते के सस्ते, अच्छे के अच्छे। (साधन हस देता है और उसके साथ-साथ मच पर घूमता है)

साधन . (हसता जाता है) रुको भाई, मेरे पेट मे वल पड जायेंगे।

देवयानी : अरे ये तुम्हारे पेट में क्या हुआ? मैंने कहा न जव भी तुम्हारी मा खाना वनाती है तुम्हारे पेट मे कुछ हो जाता है और जव मेरी रोटी खाते हो, दिनभर लिफाफे की तरह वैठे रहते हो। पता नही चलता कि उसके अदर मजमून क्या है···। (कमरे मे टहलती जाती है) अव किस-किस वात को रोऊ। आज किचन के सारे डिव्वो पे लेवल लगाने है कि किस डिव्वे मे दालचीनी रखी है और किस मे चीनी ·।

देवयानी सहसा रुक जाती है और पास पड़े स्टूल पर वैठ जाती है। साधन उसके पास जाता है।

साधन : तुम तो कमाल कर रही हो देवयानी।··

देवयानी : या अगर यह नही तो चलो मैं तुम्हारी हमदम वन जाती हू।

साधन : वह कैसे ?

देवयानी : (खडी होकर) लो भई, ये लच का डव्वा तैयार कर लिया है। मेरे ऑफिस को देर हो रही है। मैं तो आपरेटरी करते-करते थक गई। किसी की शक्ल नही दिखाई देती, खाली आवाज सुनाई देती है। और देखो, लौटते मे दफ्तर आ जाना, साथ-साथ आ जायेंगे। मुझसे तो वस मे लौटा ही नही जाता। इतनी वडी क्यू होती है कि नाक मे दम। तो ठीक है लेकिन वच्चा होगा तो वडा कैसे करेंगे उसे? न हो

तुम उस गोडावाली मौसी को यहा क्यो नही ले आते। दो रोटी ही तो खायेगी।

साधन : वस वस, भाई! मुझे ऐसी बीवी नही चाहिए जो नौकरी करे और मेरा सिर खा जाये···।

देवयानी : तो समझ लो। तुम हो घासीराम कॉलेज मे लेक्चरर और मैं जसोदावाई कटाई कॉलेज मे सुपरवाइजर।

साधन : यानी हमारे पास स्कूटर है।

देवयानी : फ्रिज है, टेलीविजन ताजा-ताजा खरीदा है, और एक कुत्ता है। अव कुत्ता इत्थे भौक रहा है। और टीवी पे फिलम आ रही है—हाय राम मैं तो मर गई। दो-चार लोग और भी आये हुए है और मैं एक कोकाकोला की बोतल मे से दो छोटे-छोटे गिलास वना रही हूं (गिलास लाती हुई) सिधू डियर, सिधू डियर, तुम कहां हो। लो मेहमानो को कोक तो दो और वर्मा के साथ तुम चाहो तो वियर ले लो। सॉसेजेस कल ही लेके आई हू। (सोफे के पास जाकर) हम तो मिसेज वर्मा एक सप्ताह की चीजें एक साथ लाकर रख देते हैं। उससे वडी सुविधा रहती है। जी हा, अरे अपने मे ही कई ढोंगी लोग है जो मिनी फ्रिज खरीद के अपने आपको नये अमीर वना लेते हैं। अरे उसमे जित्ता वर्फ वनता है उतना तो हमारा नाशिया ही खा जाता है। ये इटली की ब्रीड है वहनजी, लाये शिमला से, मिस्टर केम्यू से खरीदा है। सोच रहे हैं इस वार गुलमर्ग जायें, वहा सिधू डियर के एक दोस्त है मिस्टर कापका, उनके पास ऐसी ही एक कुतिया है, नाम है इटिमेसी। उससे मेटिंग करवायेंगे।

साधन : (जोर से हंसकर) उसके मेटिंग से जो पैदा होगा उसका नाम लाट्रेंजर रख देना।

देवयानी : हिंदी मे उसे अज्जो-अज्जो कह सकते हैं।

साधन : यह अज्जो क्या होता है ?

देवयानी · नही जानते, अजनबी का शार्ट फार्म।

साधन : वाह, तुमने खूब कापी उतारी है पत्नी संप्रदाय की ⋯।

देवयानी . असल मे साधन, तुम यही सब मुझसे चाहते हो । अगर मैं साडी पहनकर अपने मुन्ने-मुन्नी की उगली पकडकर, सिर मे माग भरकर तुम्हारे ऑफिस से लौटते वक्त दरवाजे मे खडी हुई दिखू तो तुम्हारे पुरखे भी प्रसन्न हो जायेंगे । उस समय दफ्तर से लौटते समय खरीदा खरबूजा तुम मेरे हाथ मे देकर सुखी पति की तरह पेट पर हाथ फिराओगे कि आज फिर दस्त साफ हो जायेगा । ⋯

साधन · यह झूठ है। देवयानी को मैंने उस रूप मे कभी भी देखना पसद नही किया।

देवयानी फिर मैं जो कुछ हू उसे स्वीकार करते तुम्हे क्या तकलीफ होती है ?

साधन . (चुप रहकर, सहसा) मैं देवयानी, निरुत्तर रहना पसद करूगा।

देवयानी (साधन के कधे पर हाथ मारती है) आज ऑफिस मे यही हुआ ·। बॉस से बात हो रही थी। उसने पूछा कैसी निभ रही है। मैंने कहा ठीक ही है तो उसने एक कोटेशन सुनाया, डेफ हसबेंड एड ब्लाइड आर आलवेज अ हैप्पी कपल ⋯।

साधन मुझे भी किसी ने सुनाया था—कीप दाई आइज वाइड ओपन बिफोर मैरिज, एड हाफ शट आफ्टरवर्ड्स · ।

देवयानी लेकिन तुम्हारी आखें अब भी पूरी तरह खुली हुई हैं।

साधन कहा ! मैंने पूछा कि तुम ऑफिस किस रास्ते से जाती हो ? मैंने पूछा कि तुम्हे देर क्यो लगी ? मैंने पूछा कि तुम्हारा मूड बे कारण ही क्यो दिल्ली की बिजली की तरह ऑफ हो जाता है ? ⋯

देवयानी : मुझे दिख गया।

साधन क्या दिख गया ?

देवयानी · तुम्हारा असली रूप। और तुम्हारा यह असली रूप ही

जिम्मेदार है कि हम एक नही हो पा रहे हैं।

साधन : तुम रहती हो आसमान पर।

देवयानी · और ?

साधन : मै नही जानता कि इसके लिए तुम्हारी उम्र जिम्मेदार है या तुम्हारा कॉलेज।

देवयानी : लेकिन तुम कतई जिम्मेदार नही हो।

साधन : मै पिछले दो दिनो मे अपने आप से नफरत करने लगा हू। हर वात पर मैं मिमियाने लगता हू तुम्हारे सामने। हर वात ऐसी लगती है जैसे मैं गलती कर रहा हूं। मैं जो साधन वैनर्जी हू जो सहज प्रेम करने वाला आदमी मेरे अदर है, वह कहा गया ? लेकिन तुम अव भी देवयानी हो, वात करने में वही रौव, मुझे दवाने मे वही ज़िद्द, मुझ पर प्रहार करने मे वही वेरहमी···

देवयानी पेपरमेशी का फानूस उठाती है और उसे फाड़ डालती···।

देवयानी : और कुछ ?

साधन अव यही तुमने किया। इसे फाडकर मुझे तुमने डरा दिया है। यह तुम्हारे अगले गुस्से की भूमिका वन जायेगा और दो मिनट के वाद मैं सॉरी कहकर तुम्हारे सामने पूछ हिलाता नजर आऊगा · ।

देवयानी : ऐसा करने के लिए कहा किसने है ?

साधन : कहेगा कौन ? हा मैं इस वात को समझ सकता हू कि यह नया वातावरण कुछ समय लेगा···।

देवयानी : लेकिन मेरे पास समय नही है।

साधन यह तुम्हारा पोज है देवयानी और यह पोज पहली वार वहुत अच्छा लगा था। जिस तत्परता से हम दोस्त वने थे, जिस फुर्ती से तुमने दोपहर मेरे साथ आने का फैसला किया था, जिस निर्भयता से तुमने होटल मे कमरा किराये से लेने मे सहमति दी थी और जिस···

देवयानी : हा, जिस नगेपन से मैं तुम्हारे साथ सोई थी (पॉज) वह अद्‌भुत था। देखो साधन, यह तीन मिनट चला तो मैं केवल वेश्या थी, जब तीन घटे चला, आई वाज़ अ कीप। तीन दिन मे मैं पत्नी बन गई हू। तीन साल मे मैं मिसेज इरा कपूर बन जाऊंगी और पच्चीस या तीस साल यही सब चले तो चद्रप्रभा देवी तिवारिन या मेरी मा की शक्ल से मेरी शक्ल मिलने लगेगी ·।

साधन . तो ठीक है देवयानी, हमे पार्टी से पहले किसी निर्णय पर पहुच जाना चाहिए।

देवयानी · तुम अपना निर्णय पहले घोषित कर दो। ·

देवयानी सोफे पर बैठ जाती है, साधन उसके सामने जा बैठता है।

साधन : मैंने निर्णय पर पहुचने की बात कही है, इसका मतलब यह नही है कि मेरे पास कोई रेडीमेड निर्णय है।

देवयानी है तो, लेकिन तुम कहने मैं घबरा रहे हो। क्या यह मे कहना चाहते हो कि अगर हम तमीज से साथ मे नही रह सकते तो अलग हो जायें ?

साधन . (खड़ा होकर) नही। मैं इस बात की कल्पना भी नही कर सकता कि हम अलग होंगे···और अलग होना मजाक नही है ··।

देवयानी . मजाक न हो, आसान जरूर है। अब हमने विधिवत् शादी की होती तो तलाक के लिए तीन साल का इतजार करना पड़ता और कोर्ट का कुछ ठीक नही, अलग हो भी पाते या नही ··

साधन . लेकिन अब वैसी कोई विवशता नही है—यही कहना चाहती हो ? क्या तुम समझती हो कि लाड्री मे कपड़े धुलवा लोगी और फिर से मिस देवयानी गुप्त बन जाओगी·· ?

देवयानी : मै कपड़े नही धुलवाऊंगी साधन, लेकिन गदे कपड़ो को

वदल देने मे किसी तरह की भावुकता नहीं दिखाऊगी···।

साधन : यानी मैं गदा कपडा हू।

देवयानी : तुम नही, ये सवंध···।

उठकर दीवान के पास जाती है और उसके नीचे से अपनी अटैची निकाल कर उसमें पड़ी कितावें रख देती है।···

साधन : क्या बहुत बुरा लग गया? आई एम सॉरी, देवयानी · आई डोट मीन इट ··

देवयानी उसकी तरफ देखती है।

. अव कुछ देर मे लोग आते होगे। तुम कपडे बदल लो ना ··।

देवयानी : (उसकी तरफ देखे बगैर) राजाराम··· ओ राजाराम···।

राजाराम आ जाता है और उसके सामने आ खड़ा होता है।

: (राजाराम से) जाकर टैक्सी ले आओ ।

साधन : देवयानी, यह तुम्हे क्या हुआ है ··

सहसा कालबेल बजती है और दोनों दरवाजे की तरफ बढते हैं। आते हैं पटेड़िया और शकुन्तला। दोनों गले मे फूलो के हार पहने हुए हैं···।

साधन : आओ भाई, आओ।

देवयानी : (आगे आकर) हम तो समझे कि आप शकुतला को लेकर भाग गये?

पटेड़िया और शकुंतला बैठते हैं। साधन और देवयानी भी सामने बैठ जाते हैं।

पटेडिया ·· अरे क्या वताऊ यार, अजीव परेशानी मे फस गया। अव इस शकुतला को उस दिन यहा आने से प्रेरणा मिल गई।

साधन : प्रेरणा किस बात की ?

देवयानी : और शकुतला जी तो एक शब्द भी नही बोली हैं। पता नहीं इनकी सरम कब जायेगी···

राजाराम रुका हुआ था। सबको बात करता देख अदर चला जाता है।

पटेड़िया : अरे उस शाम के बाद मुझे सारी रात सोने नही दिया। कहने लगी सारी दुनिया शादी करती है और मैं ही बिना शादी के तुम्हारे साथ घूम रही हू। पहले शादी करो फिर···

देवयानी : लेकिन पटेड़िया साहब, आपकी तो शकुतला से पहले की पहचान है।

साधन · शायद इन्हे लगा हो कि तुम इन्हे छोडकर चले जाओ···।

देवयानी : बताओ क्या बात है शकुतलाजी ··

शकुन्तला पटेड़िया की तरफ देखती है और सिर झुकाकर रह जाती है।

पटेडिया : तो मालमत्ता ये कि आज मदिर मे जाकर शादी कर ली और शादी करवाकर यहा आ गये। पडित को सौ रुपये दिये तो उसने दस मिनट मे ही निबटा दिया ·।

साधन : कमाल है भाई, और पटेड़िया तुम तो पहले ही शादी-शुदा···।

पटेडिया : (साधन के कंधे पर हाथ रखकर) उससे क्या फरक पडता है बैनर्जी साहब ! लेकिन इसकी आत्मा को इससे बड़ी शाति मिल गई। और ऐसी शादी तो हर शनिवार को की जा सकती है।

देवयानी : मुझे ऐसा लगता है जैसे पैसा आपके लिए हाथ की मैल है वैसे ही शादी पैसे का मैल है

सब हसते हैं। देवयानी आगे आकर शकुंतला के गले का हार ठीक कर देती है।

पटेड़िया . तो भइया, हम हनीमून मना आते हैं, फिर तुम्हारी पार्टी मे आ जायेगे। और साधन, कुछ लाना हो तो वता दो। स्काच ले आऊ क्या ? और कवाव-शवाव···?

साधन : वह सव इतजाम हमने अपने अनुसार कर रखा है।

पटेड़िया और शकुन्तला उठ खड़े होते हैं। दोनो उन्हें विदा करते हैं।

: और तुम जरूर आना पटेडिया।

देवयानी : और इसी तरह ही गले का हार पहने ही आना तो मजा रहेगा।

उनके जाते ही कमरे में फिर वही उदासी लौट आती है। देवयानी पहले बैठती है फिर सहसा उठकर अपनी अटैची के पास चली जाती है और उसमें एक-दो चीजें और रखती है घड़ी की आवाज सुनाई देती है···।

साधन . क्या अजीव आदमी है, हर किसी से शादी कर ली···।

देवयानी : लेकिन इसका मतलव यह है कि शकुतला भोली नहीं है। वह एक शब्द भी नही वोली लेकिन···वात कानून की है।

साधन : कहीं ऐसा तो नही देवयानी कि उसकी जवान ही न हो···?

देवयानी : तव तो पटेडिया को और आराम रहेगा। वैसे पटेडिया को शकुतला चाहिए, शकुतला की जवान थोडे ही···।

राजाराम आकर पूछने की मुद्रा में खड़ा है। देवयानी अपनी चीजें वटोरती है।

साधन : और तुम्हे कुछ काम है क्या राजाराम ? छत पर एक वार पानी और क्यो नही छीट देता· · ·।

राजाराम : तीन वार छीट दिया है वावू लेकिन वीवीजी ने कहा था· · ·

देवयानी : हा, तुम टैक्सी ले आये ?

राजाराम : जी अभी नही गया· · ·

देवयानी : क्यो नही गये· · ·?

राजाराम : अभी चला जाता हू ।

साधन . राजाराम, अदर जाओ और बुलायें तब आना ।

राजाराम · जी बाबू ।

देवयानी . लेकिन साधन, मैं उसे टैक्सी लेने भेज रही हू ।

साधन टैक्सी नही आयेगी···।

देवयानी क्यो ? क्यो नही आयेगी ·?

साधन . तुम इस तरह नही जा सकती ।

देवयानी . तो किस तरह जा सकती हू ?

राजाराम कान पर हाथ रखकर अदर चला जाता है । साधन देवयानी के नजदीक चला जाता है ।

साधन देवयानी, अभी हम अच्छे-भले हस-बोल रहे थे, तुम पत्नियो की मजाक उडा रही थी । हम विवाहित जीवन की चीर-फाड कर रहे थे···

देवयानी मुझे यह लग गया कि मैं तुम्हारे साथ नही रह सकती ··।

साधन : तो क्या समझती हो डैडी के पास लौटकर अब तुम सुखी रह सकोगी ? वे घोषित कर चुके हैं कि तुम उनके लिए मर चुकी हो ।

देवयानी . याद रखो साधन, देवयानी वहा लौटकर कभी नही जाती जहा से उठकर वह आती है ।

साधन . तो तुम कहा जाओगी ?

देवयानी : यह तुम्हारा विषय नही है ।

साधन लेकिन देवयानी, आपसी बात को हम छोड भी दें तो सब लोगो की नजर मे हम विवाहित हैं । तुमने अपने ऑफिस मे खुद घोषणा की है, मैंने जमाने-भर के लोगों से कहा है ।

देवयानी : वह सब फ्रॉड था···

साधन : देवयानी···

देवयानी : जिस दिन उस बादशाह ने चमड़े के सिक्के चलाये उस दिन बादशाह मर गया । और जब मदिर मे जाकर पटेड़िया

और शकुतला जैसे लोग माला बदल कर पति-पत्नी बनने लगे हैं। विवाह नाम की सस्था भी मर चुकी है।···

साधन उस सबको एक बार ताक मे रखा जा सकता है देवयानी··· लेकिन जरा सोचो तो, क्या हम दोनो ने एक नई मिसाल बनने के लिए साथ रहने का फैसला नही किया था···?

देवयानी . नही साधन, नही। हमारे साथ रहने का कारण हमारा सीधा स्वार्थ था···

साधन . और अलग होने का कारण ?

देवयानी . मुझे नही मालूम।

साधन चुप होकर एकटक देवयानी की तरफ देखता है। देवयानी भी एकदम स्तब्ध हो साधन की तरफ देखती रह जाती है।

साधन : देवयानी, क्या सहसा यह नही हो सकता कि हम एकदम अपने खिचावो को ढीला कर दें और मुस्करा कर इस कमरे को सजाने मे लग जायें। एक फानूस बीच मे लटका दें। यह झालर इधर से उधर और वहा से यहा तक बाध दें। ये गुब्बारे छत पर ले जाकर बोतलो के बीच मे सजा दें···। (सहसा रुक जाता है) बोलो देवयानी।

देवयानी (अटैची का ढक्कन खोलकर) उत्तर चाहिए ?

साधन हा।

देवयानी . (बाथरूम मे जाते हुए) उत्तर है : नही।

साधन गैलरी मे जाता है और देवयानी बाथरूम मे कपड़े ढूंढ़कर लाती है।

साधन . असल मे मैं जिंदा रहना चाहता हू। प्रयोग कर-करके हार चुका हू लेकिन लगता यह है कि देवयानी जिस मिट्टी की बनी है उसे मैं पहचान नही सका। हो सकता है मेरी सारी इच्छाए, एक आम हिंदुस्तानी आदमी जैसी हैं। देवयानी

ने पत्नियो का जो खाका खीचा, हो सकता है उनमे से ही एक पत्नी मुझे चाहिए हो। हो सकता है इसी तरह लड़ते-झगडते जिंदगी कट जाये। हो सकता है कोई एक ऐसी बात हम दोनो के बीच पैदा हो जाये जो हम दोनो को बाघ दे। लेकिन ये सब हो सकने वाली बातें हैं और जो है वह यह कि देवयानी अपने कपडे भी समेट चुकी है। (अपनी दोनों मुठ्ठियों को एक-दूसरे से टकराता है) यह साफ दिख रहा है कि हमारी यह पार्टी रिसेप्शन की जगह फेअरवेल बनने वाली है ·

देवयानी अपनी अटैची बंद करती है और उसे उठाकर साधन के सामने जाकर खड़ी हो जाती है।

देवयानी क्यो, कुछ कहना है ?

साधन · हा, कुछ कहना है। मुझे एक ही उत्तर चाहिए कि वह कौन-सी बात है कि तुमने जाने का फैसला कर लिया ?

देवयानी मुझे खुला आकाश चाहिए साधन, और यह भी सच है कि अगर मैं नही जाती तो भिडी, लौकी और घिया बन जाऊगी, ठीक उसी अर्थ मे जिस अर्थ मे मैंने तुम्हे आलू, गाजर और टिडा कहा है।

साधन . लेकिन मेरा कहना यह है ··

देवयानी मुझे मालूम है तुम्हारा कहना क्या है। वहा घर मे सवेरे उठते ही मा कहती थी · दात साफ कर लिये। डैडी पूछते थे अभी तक नहाई या नही। स्कूल का होम वर्क, कालेज के ट्यूटोयिरल और बड़े होने पर हर आदमी का उपदेश। मैंने जब भी कोई किताब खोली है यही पाया है कि किसी न किसी को कुछ न कुछ कहना जरूर है। मैं नफरत करती हू साधन इन सबसे और मेरा सारा विद्रोह तुम्हारे कथोप-कथनो के खिलाफ है···। पहले ही दिन मुझे लग गया था कि मैंने डैडी को छोड़ कर तुम्हे नही पाया है, उपदेशक

बदल लिया है•••

देवयानी दरवाजे की तरफ बढ़ती है।

साधन : यानी हमने जो भी कदम उठाया था, वह असफल रहा•••।

देवयानी . असफल क्यो कहते हो ? यह तो सफल तरीका है कि हम एक साथ नही रह सकते तो बगैर किसी हील-हुज्जत और कानून-कायदे के अलग हो सकते है।

साधन : तुम अभी उम्र मे देवयानी, बहुत छोटी हो • ।

देवयानी . बाबा आदम के जमाने से ये ही तर्क दिये जा रहे हैं कि पुरुष की तुलना मे नारी कमजोर है, छोटी है, अनुगामी है ! •••और कुछ ? (**अटैची उठाकर दरवाजे की तरफ बढ़ती है।**)

साधन . तो अब तुम्हारा प्रोग्राम क्या होगा ?

देवयानी : जो भी किसी आजाद परिंदे का होता है—उड़ने को खुला आसमान, रहने को पेड, चुगने को धरती पर बिखरा दाना•••।

साधन याद रखो देवयानी, जिस तरह की बेवकूफ जिद के कारण तुम मुझे छोडकर जा रही हो इसको सुनकर कोई तुम्हे क्षमा नही करेगा•••।

देवयानी . और जिस समझदार जिद के कारण बाप का घर छोडकर तुम्हारे पास आ गई उसे सबने क्षमा कर दिया है ?

साधन • लेकिन देवयानी जो लोग आयेंगे उनको क्या कहूगा ?

देवयानी : जो सच है वह कह सकते हो। और साधन, जिंदगी चलते-चलते का नाम है। किसी के कारण कही कुछ कैंसिल नही होता ।

साधन : लेकिन तुम मेरी जिंदगी जरूर कैंसिल करवा रही हो।

देवयानी : यही कल सोचोगे तो लगेगा चलते-चलते स्याही रुक गई थी, जरा-सा झटका दो और वही रफ्तार मौजूद।

राजाराम आता है और अटैची

देवयानी के हाथ से लेता है। राजाराम आगे जाकर सीढिया उतरने लगता है। देवयानी घूमकर साधन की तरफ देखती है। और चली जाती है। सहसा साधन कुछ याद करके तेजी से दरवाजे की तरफ वढता है।

साधन · देवयानी ·।

जरा देर के लिए मच खाली हो जाता है। आधी लगी झालर, कुर्सी से वंधे गुब्वारे और वेतरतीव कमरे पर प्रकाश का गोला घूमता है। साधन लौटता है। गुब्वारों की तरफ देखता सिगरेट जलाता है…।

· (वेहद उदास चेहरा) इसी जगह सव कुछ को समाप्त हो जाना था। मुझे आगे वढकर सीढिया उतरती देवयानी को…(जोर से) क्यो होता है यह सव साधन, वोलो न साधन मोशाय ? देवयानी, आमाके एका रेखे केनो, चोले गेलो ? वोलो केनो ? केनो चोले गेलो देवयानी ? साधन जवाव दाओ, तुमि नपुसक, तुमि स्टुपिड…देवयानी शुधू नारी, शे शुधू नारी, और किच्छु नेई। एतोटा स्वाधीनता दिये आमि वोका वने गियेछि…।

राजाराम लौटकर आता है। उसके पीछे खड़ा हो जाता है।

: क्या वात है ?

राजाराम . क्या वीवीजी चली गई…?

साधन (जोर से) तुम कौन होते हो पूछने वाले…?

राजाराम (पीछे हट जाता है और पीछे हटता हुआ किचन मे चला जाता है) माफ, माफ कीजिये वावू, गलती हुई…।

साधन : (एकदम सामने देखता है) इसमे नाराज होने की क्या

बात है ? जब देवयानी आई तो जमादारिन तक ने पूछा था कि ये आपकी बीवी हैं ना···फिर राजाराम क्यो नही पूछ सकता कि वह चली गई या लौट आयेगी ? पूछो, सब मुझसे सवाल पूछो और पूछते चले जाओ।

कालबेल बजती है। साधन सिर को झटककर आगे बढ़ता है और दरवाजा खोलता है। इरा और सुरेश आते हैं।

इरा काग्रेच्युलेन्शस साधन ! देर आयद दुरुस्त आयद···क्या यही कहा जाता है ना ?

साधन बहुत ही अनमने मुस्कराकर रह जाता है।

साधन आप जो चाहें कह लें। सब ठीक बैठ जायेगा···।

सुरेश क्या बात है भाई, बडा सन्नाटा खिचा हुआ है। कही हमसे तो कोई गलती नही हो गई इरा···।

साधन आप ठीक ही समय पर आये हैं। गलती हमसे ही हुई है कि घर मे मातम फैला रखा है।···

इरा : कोई काम हो तो मुझे बतला दीजिये···।

साधन : सब ठीक है। पार्टी का इतजाम छत पर है। यह कमरा तो एक तरह से पैसेज है।

सुरेश . फिर क्यो नही, जरा खुले मे ही बैठा जाये···

साधन : हा, यही ठीक रहेगा। राजाराम···

इरा और सुरेश उठते हैं और राजाराम आ जाता है।

सुरेश : और कट तो रही है ठीक से ना ?

साधन : यही समझो।

सुरेश . ऐसे ढीले क्यो हो रहे हो ? देखो भाई, मेरा एक नारा है, जैसे ही घर मे शाति आती है मैं कुछ छेड देता हू और छेडता हू इसलिए कि सवाद जारी रहे···क्या खयाल है ?

साधन उदास हंसी हंसता है।

साधन देखो राजाराम···इन लोगो को छत पर ले जाओ ·· भई सुरेश, मैं जरा मेहमानो का इतजार करता हू, तुम जो चाहों ले लेना, वियर भी है और ह्विस्की भी···

इरा · (जाते-जाते सुरेश से पूछती है।) देवयानी कहा है ?

वे दोनो हसते हैं और राजाराम के साथ छत पर चले जाते हैं···।

साधन (गैलरी मे खड़ा खाली आंखो से दूर कहीं देख रहा है) देवयानी कहा है ? मैं क्या कहू इन लोगो को कि देवयानी कहा है। या साफ-साफ कह दू । लेकिन साफ-साफ भी क्या कह दू· ?

राजाराम आकर पास खड़ा हो जाता है।

राजाराम . बाबू, वे लोग कह रहे हैं कि देवयानी कहा है ?

साधन अब जब कहें तो आसमान की तरफ देखने लगना।

राजाराम (आसमान की तरफ देखकर) जी जी ठीक है···।

फिर घटी बजती है। साधन आगे बढकर दरवाजा खोलता है। रेखा स्वामिनाथन् कधे पर कैमरा और झोला लटकाये, हाथ मे शाम का अखबार लिये आती है।

रेखा . गुड ईवनिंग साधन, क्या हाल है·· ?

साधन · आओ रेखा। और बडा वजन उठाकर लाई हो · कैमरा, झोला···।

रेखा यह लो। इसमे देवयानी का इंटरव्यू छपा है ··।

साधन अखबार हाथ में लेता है।

साधन · (पढता है) वन एपल इज नाट इनअफ·· । (पूछता है) यह सब देवयानी ने कहा था।

रेखा : मजा आ गया साधन, मेरे चीफ को तो यह इत्ता पसंद

आया कि उसने मुझे कैमरा लेकर भेज दिया है। अब अगला इटरव्यू और बढ़िया कवर करूंगी।

साधन : (अखबार को सरसरी नजर से देखकर नीचे गिरा देता है) यह सब कल बात हुई थी ···?

रेखा . हा, कल ही तो · वैसे मैं राजधानी की अच्छी इंटरव्यूअर तो हू ही।···

साधन · हू। इसमे क्या शक है···

चुप लगाकर हाथ मसलने लगता है।

रेखा क्या बात है भई, पार्टी है या और कुछ ··।

साधन . राजाराम···राजाराम ! आप छत पर चली जाइये। वही हैं दूसरे लोग भी·· ।

राजाराम आगे आ कर उसे ले जाता है।

. (नीचे गिरा हुआ अखबार उठा लेता है) यह है साथ रहने का नया प्रयोग कि अखबार मे खबर आई तब तक सबंध खत्म भी हो गया·· । (अखबार फिर गिरा देता है) लेकिन इन लोगो को जवाब क्या दिया जायेगा ? क्या ऐसा नही हो सकता कि ये सब इतनी पी लें कि और कुछ पूछना ही भूल जायं और इन्हे यह पता ही न चले कि देवयानी घर मे है या नही···।

फिर घटी बजती है। दो बार बजती है।

. जाओ साधन, घर मे मेहमान आये है, जाकर स्वागत करो। तुमने बुलाया है ना इन सबको, खाने के लिए, पीने के लिए ··।

जाकर दरवाजा खोलता है। आते हैं पटेड़िया और शकुन्तला । पटेड़िया हाथ में एक बोतल लिये आता है···

: आओ पटेडिया !

पटेड़िया और शकुन्तला कमरे के बीच आ जाते हैं।

• क्या वात है ! तुम हनीमून मनाने गये थे या पीने ? लगता है चढा आये···

पटेडिया : अव यार शकुन्तला ने कहा कि कुछ नशा हो तो मजा रहेगा···और लो, मैं एक वोतल और ले आया हूं।

साधन · वाह···! आओ और चलो इधर···(साधन छत की तरफ का रास्ता दिखाता है) वहा सव लोग हैं। मैं जरा आने वालो को और देख लेता हू·· ।

पटेडिया · अच्छा-अच्छा, और तुम भी आ जाना ए !

दोनो एक-दूसरे का हाथ थामे छत पर जाते हैं। साधन गैलरी मे आकर सिर थाम लेता है। राजाराम दौड़ा आता है।

राजाराम वावू, बावू, वे फिर वीवीजी को पूछ रहे हैं।

साधन . तो आसमान की तरफ क्यो नही देखने लगते ?

राजाराम . मैं आसमान की तरफ देखने लगा तो एक ने कहा, देवयानी परिंदा नही है जो आसमान मे उडती दिखाई देगी· ·।

साधन ठीक है। तुम वह बडे वाला रेकार्ड वजा दो—मालूम है ना तुम्हे· ·

राजाराम . जी वावू, उसको वजा दू वहा हा, ठीक है, उस आवाज मे···कोई कुछ पूछ ही नही पायेगा ··

राजाराम जाता है और साधन गैलरी का एक चक्कर लगाता है · ।

साधन . वाह साधन वैनर्जी, वाह, एक गई, दूसरी गई, तीसरी गई, चौथी भी गई। देवयानी, विद्रोह लेकर आई थी पार्टीशन वनकर चली गई । देवयानी मिसाल वनकर आई थी, समाचार वनकर चली गई। तभी तो मैंने कहा था साधन, सव वह गये, मनु वह गये, याज्ञवल्क्य वह गये और साधन

ढोली कह रहा है कि मैं दरिया पार करवा दूगा···। हमारे एक होने की शर्त—सिफर। हमारे साथ रहने का नाम—सिफर। हमारे अलग होने का विंदु—शिफर।

छत पर जोर से पाश्चात्य संगीत की धुन उठती है और हंसी की आवाज फैलती है। झूमता हुआ पटेड़िया हाथ मे बोतल और गिलास लेकर आता है।

पटेडिया : हद है यार इन्तज़ार की। तुम आओ न। और ये लो पहले। साले पीते क्यो नही हो ?

साधन उसके हाथ से गिलास ले लेता है। वह बीच कमरे मे आ खड़ा होता है।

: और किस बात की परेशानी है ? इतना दुखी क्यो हो ? खुश क्यो नही रहते यार, अपने लिए तो नारी नाम जहाज है साधन···

साधन : (उसकी तरफ देखता रह जाता है) मैं विलकुल ठीक हूं पटेड़िया···तुम मेरी चिंता मत करो···।

पटेडिया . लेकिन देवयानी कहां है ?

साधन उत्तर देने की बजाय चुप खड़ा रह जाता है। पटेड़िया उसका एक चक्कर काटता है।

. देवयानी कहा है ?

छत पर से इरा आती है और साधन का चक्कर लगाकर पूछती है—

इरा : देवयानी कहा है ?

सुरेश कपूर आता है और उसी तरह—

सुरेश : देवयानी कहा है ?

रेखा आती है और उसी तरह—

रेखा : देवयानी कहा है ?

शकुन्तला भी आ जाती है और इशारे से वही वात पूछती है। सवके हाथ मे गिलास हैं। सब साधन का एक बार और चक्कर लगाते हैं और पूछते हुए वापस छत पर चले जाते हैं।

सब . देवयानी कहा है ? देवयानी कहा चली गई ? देवयानी कव आयेगी?

साधन : (गैलरी मे जाकर) देवयानी कहा है, उफ्! देवयानी कहा है ? आज मेरे लिए यह वात कोई मतलव नही रखती कि देवयानी मेरी है, केवल यहा उसका होना जरूरी था कि मैं सवालो के जवाव मे इस तरह सिर नही झुकाता•••।

छत पर से हंसी की आवाजें आती हैं तथा सगीत के स्वर और ऊचे हो जाते हैं। राजाराम दौड़कर आता है।

राजाराम : वावू कमाल हो गया। वो आपके सारे दोस्त ताली पीट-पीटकर पूछ रहे हैं कि देवयानी कहा है। उन लोगो ने तो कव्वाली शुरू कर दी है।

राजाराम दौडकर वापस चला जाता है, साधन परेशान है।

साधन आखिर कोई कव तक सवाल पूछेगा ? और सारे जमाने को सवाल पूछने का हक भी क्या है ? यह मेरा अपना मामला है। मुझे लगता है कि सारी दीवारें, छत, सारा फर्नीचर मुझसे पूछ रहा है कि देवयानी कहां है।

सहसा एक प्रकाश वृत्त दरवाजे पर चमकता है। सफेद साड़ी में देवयानी दिखाई देती है।

· (आश्चर्य और खुशी से) देवयानी···!

देवयानी बहुत सधे कदमों से आगे बढती है।

देवयानी . हा, मैं।

साधन : देवयानी, क्या मैं विश्वास कर लू कि तुम वापस आ गई हो · (दो कदम आगे वढ़ता है)।

देवयानी · न करो तो वेहतर है। लेकिन आई मैं इसलिए नही हूं कि मुझे वह शर्त मालूम हो गई जिसे तुम जानना चाहते थे, या यह नाम मेरी जवान पर आ गया है जिसकी तुम्हे तलाश थी या वह विंदु पकड मे आ गया है जहा से हम अलग हुए हैं। कुछ भी प्राप्त नही हुआ···।

साधन मैं सवका क्या मतलव समझू ?

देवयानी . मतलव किसने समझा है ? लेकिन एक बात सही है कि जिस क्षण तुम यह कह देने की हिम्मत अपने मन मे पैदा कर लोगे कि देवयानी चली गई है या हम अलग हो गये हैं, तुम्हे एकदम हल्का लगेगा···।

साधन : लेकिन देवयानी, एक जिंदगी है जो विना कारण रुक गई है।

देवयानी · जिंदगी अपन आप चलती है और वह अपने आप शुरू हो लेती है।

साधन : इस तरह के फलसफे से कुछ नही होता। तुम हमेशा मुझ पर एक वाक्य थोप जाती हो।

देवयानी यह सच है साधन, मुझ पर इतने सारे लोगो के इतने सारे वाक्य थोपे गये है कि मन ही मन मैं उनसे वदला ले रही हू।

साधन . वतला सकोगी देवयानी, वदला किस रूप मे ले रही हो ?

देवयानी : खुले आसमान की तलाश करना कैद से बदला लेना है साधन।

साधन : तुम कहना क्या चाहती हो देवयानी ?

देवयानी : घर आसमान की तुलना मे वहुत छोटे आकार का होता है। सवध उडान की तुलना मे निहायत सकुचित चीज है। पख जिदगी के वोझ से वहुत हल्के होते हैं।…

साधन . लेकिन फिर भी, साथ रहना शुरू करके इस तरह घर से वाहर जाने की क्या जरूरत थी ?

देवयानी (साधन के छत्तीस खड़ी हो जाती है) इस सवाल का उत्तर देने के लिए फिर से तीन दिन जीना पडेगा और उसके लिए मेरा मन नहीं, क्योंकि अलग-अलग हर आदमी उसी अनुभव को दुहराता है। यह नाटक तीस माल तक चलता रह सकता है और हो सकता है अन्त यही हो।

प्रकाश डूबने लगता है और छत पर पाश्चात्य सगीत के स्वर तीव्रतम हो जाते हैं।

परदा गिरता है

नाटय-पाठ के दौरान

'देवयानी का कहना है'—मेरे नोट्स

देवयानी मेरे लिए एक सपूर्ण अनुभव है। उसके पास उसकी अपनी भाषा है, जीने का उसका अपना तरीका है, उसके अपने विधि-निषेध हैं। वह केवल आज को जीती है। बुद्धि की एक स्थिति को जैसे हम विवेक कहते हैं, सेक्स की एक स्थिति को वह संबंध कहती है, आजादी की एक स्थिति उसके लिए विच्छेद है। देवयानी के कथन उसके एक्शन है और जमाने के कथनोपकथनो की प्रतिक्रिया भी। वह अन्य चरित्रो की तुलना मे एकदम भारी नाम है। साधन के साथ तीन दिन साथ रहने के तीन प्रयोग हैं, कुछ लोग इन प्रयोगो मे तीस साल लगा देते हैं, कुछ प्रयोग ही प्रयोग करते रहते हैं, लेकिन देवयानी प्रयोगो मे से गुजरती हुई आगे बढ जाती है। वह आर्षवचनो की अक्षौहिणी सेना का मुकाबला अपनी छोटी-सी जबान से करती है।





देवयानी वर्जित फल की ललक का दूसरा नाम नही है क्योकि उसका आग्रह वर्जित को मान्य बनाने का है। किसी ने पहली कॉपी पढकर कहा था कि मेरे नाटक मे नाट्यशास्त्र के कई वर्जित हैं, अगर हैं तो हैं, उनके बिना मेरा नाटक खेला नही जा सकता। तब मेरा आग्रह देवयानी की तरह ही उसे मान्य बनाने का होगा।



नाटक मैंने अंको मे विभाजित करके नही लिखा है, एक शुरुआत से दूसरी शुरुआत के बीच जो वृत्त बनता है उसी को मैंने एक-एक खण्ड का नाम दिया है।



मैं नही सोचता कि अब नाटक मे किसी तरह के संकलन या यूनिटी की जरूरत भी रह गई है क्योकि गैप के लिए प्रकाश का आना-जाना ही काफी है। वैसे बीच मे अंतराल भी आवश्यक है, उनके बिना मनोविज्ञान की जमीन

बनती नही। दर्शको को मध्यातर मे दो बार समय मिलेगा तो वे समस्या मे इन्वाल्व हो सकेंगे या घज्जिया बिखेरने मे सहयोग दे सकेंगे क्योकि बोर होते पात्र दर्शको पर भी अपना प्रभाव छोडेंगे ही।

○

नाटक मे कई जोडिया हैं लेकिन मेरा विषय दाम्पत्य नही है। देवयानी की नगी भाषा चमत्कार के लिए नही है, वह उसके व्यक्तित्व का अश है। मैंने चाहा था साथ रहने की स्थिति का डाइरेक्शन करना कि उस स्थिति का निर्मम तंत्र समझ मे आ सके। इस अर्थ मे मेरा नाटक एक केस-हिस्ट्री है। देवयानी का कहना परपरागत शब्दो से अपने उन शब्दो की लड़ाई है, जो वेदवाक्यो की घुटन मे से जनमे हैं। इसी से कथन कही लबे हैं, कही छोटे, कही सार्थक, कही फालतू।

○

मुझ जैसा लेखक अपने विषय को अपने जीवन के अत साक्ष्य मे से ही खोजता है, कभी वह तटस्थ होता है, कभी श्रोता, कभी टिप्पणीकार·· इस बार मैं दर्शक था इसीलिए नाटक लिख पाया। यह विद्या, पहली बार मेरी विवशता बनी—दर्शक की विवशता, जो देखा उसे जस का तस कहने के लिए।

○

देवयानी अतरगता के दौरान मैंने पाया कि वह खुद अपने आपको शब्दो मे लिख सकती है लेकिन उसकी अभिव्यक्ति इतनी विश्लेषक है कि मैं नाटक मे इसका उपयोग नही कर पाया।

देवयानी की कविता

फिर से—
मैं विस्तर मे उतारे कपडे
फिर से पहन लूगी
और सारे सबंधो को क्रास करती हुई

लवे रास्ते पर निकल जाऊगी ।
अपने शरीर पर
दातो,
नाखूनो,
जोर जवरदस्तियो के हरे नि ान लेकर
मैं तुम्हारे मोहल्ले मे से गुजरती हुई
शहर भर मे भटकना पसद करुगी ।
मेरे लिए यह कभी नही होगा
कि जिसके साथ दोपहर काटी
जिसके साथ शाम की चाय पी
जिसके साथ अधेरे मे अधेरे को खोजा
उसके साथ स्वयवर रचाऊं,
कसमे खाऊ—प्रतिवद्धता ढोऊ।
आई एम सॉरी माधन
मैं तुम्हें अपनी अतिम पसंद नही समझती ··
मैं तुम्हारी सप्तपदी को
एक तरह की चहलकदमी समझती हू,
तुम्हारे अग्निहोत्र को
सिगडी जलने का पूर्वाभ्यास,
अपने पत्नी नाम को
महज एक सीजनल टिकट,
तुम्हारे दर्शनग्रथो को
कवाडी के लिए सुरक्षित रखा
ढेर ।
श्वेतकेतु ने यह कहा था
वह कहा था
कहा होगा, अपनी मा के लिए, अपने पिता के लिए
मैं उसे कानून नही मानती ।

मैं तुम्हारी सूक्तियो,
आर्ष वचनो,
आशीर्वादो
सदर्भो-इतिवृत्तो से
एकदम बोर हो गई हू ।
मैंने बोर होकर चादर फाड़ डाली है
बोर होकर विस्तर वदल डाले है
बोर होकर दीवार से सर टकरा लिया है ।
लेकिन मैं अपनी ताकत का
सामना करूगी
और अतिम तत्व
या वुद्धज्ञान भले न मिले
एक वार
सारे वेदवाक्यो को पीटकर
पीछे हटूगी ।
मेरी मुराद छोटी-सी है
मैं सारी परपरा को
अपने सामने पराजित
हकलाती हुई देखना चाहती हू ।
मुझे सपाट घर चाहिए
तर्कहीन कमरे चाहिए
वगैर दराजो वाली मेज़ चाहिए
मुझे साधन चाहिए
जो कुछ भी सिद्ध न करे
केवल जीये—
काक्रोच की तरह नही, अपने नाम के मुताविक ।
मैंने महसूस किया है
अपने शरीर मे

एक जलती हुई आग को झेलते हुए,
तुमसे लगकर
तुमसे अलग होकर भी
'साथ रहने की वडी से वडी शर्त
कुछ भी हो—श्वासावरोध या सर्कस—विवशता नही होती,
निवाहने पर प्रयोग कहलाती है
तोडने पर मजाक।'
तुम्हारी दिवालिया भावनाओ मे से गुजरते हुए
तुम्हारे निषेधो के लिए
देवयानी का कहना है
वन एपल इज़ नाट इनअफ फार ह्वोल आव द लाइफ,
टेस्ट मोर।
क्योकि जिदगी मेरे लिए
हथेली के आकार की नही है,
रास्ता मेरे लिए
झूले से विस्तर तक ही नही हैं,
व्यस्तता मेरे लिए
दस से पाच तक की कैद नही है।
खुले नीले आसमान मे
मुक्त निर्वंध उडने
और उडते रहने की इच्छा
देवयानी का उपनाम है।
तुम इस जिदगी को ठोकते-वजाते
देखते-भालते
जाँचते-परखते रहो
मेरी नज़र मे यही जिदगी अगर कुछ है
तो आमने-सामने जीने की चीज़ है
यदि तुम वेदशास्त्रो की परिधि मे द्रौपदी को गढ सकते हो

शहरो मे चकले और कोठे वनवा सकते हो
तो देवयानी गुप्त को भी सहना होगा।
नही, मुझे यत्र-तत्र अपनी पूजा नही करवानी
उसके दिन अव लद गये साधन,
मुझे आज इस गैलरी से झांककर सबसे वात करने को
सव दरवाज़े खुले छोड़ दो
रास्ते से पत्थर हटा दो
दीवार पर से मा-पत्नी-वहन-देवी सव पोछ दो
मैं अपने व्यक्ति पर से सारे निशान पोंछकर
हज़ार दाग वाली चुनरी पहनकर
सारी भीड़ के वीच से
        ज्यो की त्यो गुज़र जाऊँगी।
फिर—
मैं तुम्हारे शरीर से लिपटा शरीर
फिर से समेट लूगी
और अपने तथाकथित सतीत्व की केंचुल
तुम्हारे गलियारे मे छोड कर
किसी रोशन सडक पर निकल जाऊँगी।